आत्मकथा

यह परिपाटी सी है की कुछ अपने विषय में लिखा जाए। यहां मैं बता दूं कि मेरी रुचि बचपन से ही पढ़ने लिखने तथा अध्ययन में बहुत रहती थी। सन 1941 में पंजाब यूनिवर्सिटी से हिंदी रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की पश्चात मैट्रीकुलेट किया। इसके अनंतर पारिवारिक परिस्थिति के कारण शिक्षा का कार्य आगे नहीं बढ़ सका।

पर बचपन के संस्कार यथासंभव अनुकूल वातावरण व परिस्थित वश अवश्य ही हर व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं। यही मेरे साथ भी हुआ बचपन में जब कुछ सोचने समझने जैसी बुद्धि हुई तो मुझे भजन कीर्तन,सत्संग में बैठकर सुनकर आनंद आया करता। परमहंस बाबा जयरामदास के दर्शन पाकर समस्त परिवार अपने को धन्य मानता था तथा उनके ही सर्वस्व मानता था।

मेरा जन्म किसी साहित्यकार परिवार में हुआ हो ऐसा नहीं है। मैं तो इस विषय में याने छंद, अलंकार आदि साहित्यिक गतिविधियों से अपरिचित साधारण शिक्षित, भावुक व्यक्ति हूं और अपने को इस श्रेणी में समझने का दुस्साहस भी नहीं कर सकता हूं।

महेंद्रगढ़ (कानोड)से हैदराबाद में जीविकोपार्जन हेतु समस्त परिवार के साथ आना यहां आकर अपनी रुचि के अनुसार भजन संकीर्तन से जुड़ी संस्थाओं में जाना समय समय पर जैसे भी विचार आए उनको भजनों में संजोना व सुनाना तथा प्रेरणा का उत्साह देने के कारण मन को शांति प्रदान करने का साधन मानकर मैं लिखने लगा। सच मानिए जब मैं तन्मय होकर गाता हूं तो एक असीम शांति तन मन में व्याप्त हो जाती है। भजन सरल

सीधी भाषा में है जो आप इस भजन गंगा पुस्तक में पाएंगे। जो आप सभी सहृदय प्राणी लोगों के करकमलो में समर्पित है। जीवन के अशांत वातावरण में यदि कोई दो झण

शांति के मिल जाए तो आनंद का अनुभव होता है। आनंद प्राप्त करना ही जीवन का लक्ष्य है। परमात्मा के नामस्मरण के अतिरिक्त सच्चा आनंद कहीं है ही नहीं। इसी दिशा में मेरा यह नगण्य व तुच्छ प्रयास है। यदि इसके पढ़ते समय जो समय लगे और वह मन को शांति दे सके तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूंगा।

गंगा के तट पर बैठकर डुबकी लगाकर या उसकी लहरों से चलकर जैसा मन करे आप आनंद उठाएं। त्रुटियों के लिए क्षमा....

–घनश्याम कनोडिया

ज्योति मेडिकल हॉल

एमजी रोड सिकंदराबाद

सरस्वती वंदना

माँ जगदम्बे मात शारदे कंठन वास करो
शब्द शब्द में अर्थ अर्थ में माँ विश्वास भरो
किस विधि करूं मैं तेरी पूजा किस विधि अभिनंदन
तेरी गरिमा से ओत-प्रोत हैं
जगती का कण कण
आकुल व्याकुल व्यार्थत ह्रदय में बन उल्लास झाओ
शब्द शब्द में....
कोई अपढ़ रहे ना जन्में
कोई मूढमति
सदवति सद्भाव सभी में
ना उपजे कुमति
अज्ञान तिमिर ना रहे ज्ञान का दीपक वास धरो
शब्द शब्द में....
सर्वत्र कुशल हो मंगल माते
सबका हो कल्याण
तेरी यशगाथा गायन में
पुलकित तन मन प्राण
दुखियारे अवसाद भरे जन जन का त्रास हरो
शब्द शब्द में...।।इति।।

दो शब्द

पावन गंगा के प्रति अतीत से ही भारतीय जनमानस में एक विशेष आकर्षण, लगाव व श्रद्धा एवं प्रेरणा के दर्शन होते हैं। देश की संस्कृति के आधार स्तंभ ऋषि मुनियों ने गंगा तट पर समाधिस्थ होकर जो विश्व को दिया है वह चिरस्थायी है। उद्गम से लेकर सागर में लीन होने के समर्पण समारोह तक सभी कुछ स्तुत्य है। श्री घनश्याम जी कानो।.... ने अपने अन्तरस्थ से समय-समय पर निकली सरल स शब्दावली को भजन गंगा के रूप में संग्रहित कर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये हैं। जनहित में एसी मेरी मान्यता है।

आपके भजन की भाषा सरल सुबोध ,कठिन शब्दाडंबर से मुक्त होते हुए भी प्राचीन संत भक्तों की भाँति भावना पूर्ण भक्ति वर्तमान काल की चकाचौंध से भ्रमित चमत्कृत प्रवृत्ति निवृत्ति के ज्ञान से अनजान लोगों के उद्बोधन, ब्रह्मसत्य,जगतमिथ्या का उद्घोष काल की अजेय शक्ति को जानने की चेष्टा सूचक भक्तों के समर्पित जीवन कर एकमात्र रक्षक व आधार परमपिता परमात्मा के प्रति झुकाव संसार के सभी संबद्ध मिथ्या स्वार्थमयी है। ऐसे ऐसे विचार आपके भजनों में सर्वत्र पढ़ने को मिलेंगे। जीव के जीवन का एकमात्र आश्रय है राम अशरण के शरणदाता हैं राम, भवसागर से पार करने वाले राम, संकट मोचक राम ही सर्वस्व है। शरण्य एवं

वरण्य है, यही भाव रह रहकर भजनों के माध्यम से,माँ की प्रेरणा से बाबा जयरामदास के आशीर्वाद से हृदय आकाश में,धन रूप में हैं,बरसे है, जिनको आप स्वयं गाकर तन्मय होकर अनुभव कर सकेंगे।

आपका जन्म 25 मई 1925 को महेंद्रगढ़ (कानोड) नगर में स्वनामधन्य स्वर्गीय पिता श्री रामेश्वर दयाल के यहां नौबता वाले सुप्रसिद्ध परिवार में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा स्थानीय पाठशाला में हुई। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी रत्न की परीक्षा दी। बचपन से ही परमहंस बाबा जयरामदास (पाली महेंद्रगढ़) के प्रति अटूट श्रद्धा व विश्वास रहा। उन्हीं के आशीर्वाद से आज तक आप सफलता के साथ आगे बढ़ रहे हैं। देश की स्वतंत्रता के समय जो सांप्रदायिक उन्माद का पूर्ण वातावरण बना उससे प्रभावित होकर इनका समस्त परिवार हैदराबाद आकर दवा के व्यवसाय में संलग्न हो गया। धीरे-धीरे इस क्षेत्र में विशेष स्थान बना लिया। दवा का व्यवसाय शारीरिक स्वच्छता के लिए हैं। आपका भजन गंगा संगम मानव की मानसिक व्याधि की शांति हेतु सुखद प्रयास है जैसे-

1. भजन बिना हुए नहीं पार रे,
नो तेरी डूब जाए बीच मझदार रे

2. देख देख कर संगी साथी काहे को इतरात है प्राणी
अंत समय कोई साथ ना देवे
दो दिन की है यह जिंदगानी

3. कभी सोंचा नहीं कुछ बिचारा नहीं
नाम से श्रेष्ठ कोई सहारा नहीं

4.चार दिनों की चांदनी फिर अंधेरी रात

राम नाम का दीपक उर धरले कहता सांची बात

आपके भजनों में ऐसी सच्ची बात, संदेश, प्रेरणा, उद्बोधन के रूप में प्रायः पढ़ने को मिलेंगी। जो जीवन को सार्थक बनाने के मार्गदर्शक दीपक का काम करेगी। लेखक की भावना का सतत प्रवाह भजन गंगा के रूप में प्रवाहित होकर आप तक पहुंच रहा है। मानसिक तरंगों में बहते हुए श्रद्धा सुमन आप स्वीकार करें।

तरंगे भजन गंगा की

उमंगे मन में भर देंगी

हरगी पीर तन मन की

सफल जीवन को कर देंगी।

–शिव गौड रिवा शास्त्री

महेंद्रगढ़ हरियाणा

आज फिर याद तेरी आई रे सांवरिया,
याद में तेरी कान्हा भयो रे बांवरिया,
लक्ष्यहीन डोल रहा यहाँ वहाँ,
खोज फिरा सारा जग ना जाने कहाँ कहाँ,
कोई तो बता दें मोहे तेरी रे डगरिया,
आज फिर....
चैन नहीं एक पल मन को ना धीर कल,
विरहा ना सहा जाये मीन जैसे बिन जल,
दर्शन को तेरे तरसे नयन पुतरिया,
आज फिर...
कोई कहे मथुरा में कोई कहे वृन्दावन,
यमुना के तट पर खेल रहे श्याम घन,
मधुर मधुर गूंज रही मोहनी बांसुरिया,
आज फिर...
दौड़ चला वहाँ जहां कोई भी बताये,
सुध बुध गई खो पैर पिराये,
छिप गए कहाँ चितचोर मनहरिया,
आज फिर....
और ना सताओ घनश्याम पागल,
चतुर्भुज रूप धर आओ सदल बल,
खिल जाये तन की मन की पांखुरिया,
आज फिर...

कोई तो बता दें कहां है किशन जी,
नाम से बड़ा ना कोई है सुमिरण जी,
कण कण में रम रहा प्यारा वो सांवरा,
काहे को डोल रहे बन करके बावरा,
नटखट से होवे मिलन जी,

नाम से...

मुझको है आशा विश्वास संबल,
शांत करेगा मेरे हृदय की हलचल,
प्यास बुझेगी जब हों दर्शन जी,

नाम से...

मन यायावर बन देता है फेरे,
कहीं तो मिलेंगे प्रिय प्राणधन मेरे,
याद में दिन रैन बहें अंसुवन जी,

नाम से...

गोपियन के संग रास रचाये,
शंकर जी नाच रहे बलि बलि जाये,
कब होगी साध पूरी धन्य जीवन जी,

नाम से...

घनश्याम की टेर कभी तो सुनेंगे,
तन मन की पीर कान्हा निश्चय हरेंगे,
नंदजी के लाला अध के नयापन जी,

नाम से...

एक दो तीन चार आठ नौ दस
राम राम भजले रे बस बस बस
जीवन की साध सभी होवे पूरी
राहें सुगम ना रहे कोई दूरी
बरसेगा दिन रैन रस रस रस
राम राम भजलो रे बस बस बस
आयेंगे अंधड़ और तूफान भारी
गज की पुकार सुन दौड़ मुरारी
करो विनती एसी कस कस कस
राम राम भजलो रे बस बस बस
चलना है जीवन रुकना मरण
रघुपति राघव की ले लो शरण
संकट को झेलो रे ... हंस हंस हंस
राम राम भजलो रे बस बस बस
खिल खिल जाये उमंगों के फूल
जल जल जाये दुखों के त्रिशूल
गाओ रे नित राम यश यश यश
राम राम भजलो रे बस बस बस
घनश्याम सत्संग गंगा में नहा लो
आलौकिक सुरम्य दिव्य धामों को पालो
अन्तर के दीप जाये चस चस चस
राम राम भजलो रे बस बस बस

1.

राम को सुमर भैया राम को सुमर
तेरी हर बात की वो लेते खबर
काहे का भय और काहे का डर
काहे की चिंता किस की फिक्र
नाव मझधार बीच जायेगी तर
राम को सुमर...

दिन रात जप लो आठों पहर
झोलीया खुशियो से जायेगी भर
शक्ति से भरपूर दो अक्षर
राम को सुमर....

झूम झूम जायगा घर अंगना
तन मन प्राण राम रंग रंगना
मस्ती से भर जाये अन्तर
राम को सुमर...

आयेगे पथ में विघ्न अपार
संकट का लहराये पारावार
धीरज ना खो चल होकर निडर
राम को सुमर...

तेरी हर चाहत को पूरी करे
तेरी हर टेक सर माथे धरे
घनश्याम सर्वस्व चरणों में धर
राम को सुमर...

2.

राम का भजन करो राम को प्रणाम
जीवन में यदि सुख चाहो आराम
लोक सुधरेगा और परलोक भी निराशा का मुखड़ा ना देखो कभी
दाता है त्राता है करुणा के धाम
राम का भजन...

मंगलप्रद आधहारी है नाम कल्याणप्रद यश गाथा ललाम सुमिरण करलो प्रातः और शाम
राम का भजन...

अंतर दाह मिट जाए भटकाव मन हरिगोविंद चरणों में लाव
हारे थके को मिल ले पूर्ण विश्राम
राम का भजन...

बरसेगा आनंद झर झर झर पापों से डर शुभ कर्मों को कर पछताए बीच उमरिया तमाम
राम का भजन...

किस पल आये यमराज का संदेश
जाना पड़े सब छोड़ परदेश भजलो रे दिन रैन राम घनश्याम
राम का भजन...

3

जय बोलो नित बोलो जय जय भोले बाबा शिव शंकर
संकट आन हरे पल भर में जय त्रिपुरारि विश्वंभर
ध्यान समाधि में लीन मगन रहते हैं भोले भंडारी
सब देवों में महादेव है श्रेष्ठ कहे दुनिया सारी
आभूषण जिनके नाम वसन पहने रहते हैं बाघंबर
जय बोलो...

सोहे मस्तक पर चंद्रदेव धारण करते गंगा सर पर
अंग भस्म रमाये रमते स्वामी शंभो शिव हर हर
कर त्रिशूल संग भूत प्रेत कहलाते भगवान भूतेश्वर
जय बोलो

आक धतूरा बेल मंत्र है प्रिय भोजन गोरी पति के
रिद्धि सिद्धि से भरे खजाने स्वामी अधिपति शक्ति के
जब नेत्र तीसरा खुल जाए भय से कांपे सृष्टि थर-थर
जय बोलो

कार्तिकेय है बलशाली गणपति बुद्धि के रत्नाकर
दोनों पुत्र शिवाशिव के हैं यश चर्चा जिनकी घर-घर
ध्यान करो कैलाशपति का आनंद आनंद बरसेगा झर झर
जय बोलो

क्षमा करेंगे भूल-चूक सब भोले करुणा के सागर
ओम नमः शिवाय जपो जो चाहो सुख चैन अगर
घनश्याम करे कर जोर विनय भोले जाओ जन जन पर ढर
जय बोलो...

4

म्हारी राम राम हो कदै फेर मिलांगा
कदै फेर मिलांगा कदै फेर मिलांगा
भली बुरी कही चित ना दीजो
प्रेम सुधा रस जी भर पीजो
सत्संग गंगा में न्हाण चलांगा

म्हारी राम...

ऊंच नीच का ख्याल कींजो समता भाव हृदय धर लीजो
तेर मेर दानव नै मार दलांगा

म्हारी राम...

गंगा यमुना मल मल नहाया
मनरो मैल तनिक ना बहाया
यम फंदे से कहो!कैसे टलांगा ?

म्हारी राम...

बहुत गई बाकी रही थोडी
संग ना जाये फूटी कौमी
कर लो भजन दिन रैन फलांगा

म्हारी राम...

घनश्याम प्रभुजी चरणनन रो चेरो
ना कुछ मेरी सब कुछ उणरो
जैसा वो चाहेगा वैसा हलांगा
5

तेरे राम जी रो सर पर हाथ चिंता काहे को करें
तेरे सांवरो सलोना है साथ चिंता काहे को करें

सबकी रक्षा करने वाला सदा सहायक तेरा
क्या-क्या करता तेरे हित तुमको है बेरा
करुणा के सागर दाता नाथ चिंता काहे को करें
मरुथल में वह फूल खिलाये अंधे को दे नैना
पंगु लंगड़े गिर चढ़ जाए गुंगों को दे बैठा
उनके कोटि-कोटि है हाथ चिंता काहे को करे

तेरे रामजी...

अक्षय है भंडार प्रभु के देत रहत दिन रेन
लेने वाले कोई बिरले सचमुच के सुख चैन
उनके विरद जगद विख्यात चिंता काहे को करें

तेरे रामजी...

जीवन का सब भार छोड़ दे नटनागर पर
आठों पहर खबर ले तेरी नयनागर करुणाकर
उनका प्रेम पंजीरी भात चिंता काहे को करें

तेरे रामजी...

लगन लगाले राम नाम की जपने भजले राम
रग रग में रच बस जाये मनमोहन घनश्याम
धर दे चरण कमल में माथ चिंता काहे को करें

तेरे रामजी...

6

राम को ना भूल भाई एक भी घड़ी
सांचो है मीत वांकी प्रीत, सांचडी
चिंता करे से कांई काम बन जायगो
भाग लिखो तितनो धन पायेगो
राम की सबां पर मेहर है बड़ी

राम को ना भूल भाई ...

राम कृपा से नैया पार लग जाएगी
मन में उमंग नई-नई जग जाएगी
मांगोगे पाव किलो देगा धड़ी

राम को ना भूल भाई...

रामजी के द्वार से ना आया कोई खाली
जिसने जो कामना की वह उसने पाली
राम राम राम की लगा दी झड़ी

राम को ना भूल भाई

राम नाम की ले कर में सुमिरणी भव फंद छूटे तरे वितरण
अद्भुत है औषध अनोखी जड़ी

राम को ना भूल भाई

कब तक रहेगा सोया कर लेना चेत
फिर क्या करेगा पंछी चुग जाए खेत
घनश्याम सर पर मौत है खड़ी

राम को ना भूल भाई

7

भजन कर ले भजन करले भजन करले भजन कर ले
यतन करले यतन करले रे नर क्यों ना यतन करले
यह नर तन तूने जो पाया बड़ी प्रभु जी की अनुकंपा
लबालब भरले खुशबू से कि जैसे हो जुही चंपा
घरौंदा माटी का कच्चा इसे पुख्ता पवन करले

भजन करले

तेरे अंदर छिपी बैठी बड़ी बटमारो की टोली
जो करती रात दिन होली है कि है होली
भरा पथ कांटों से तेरा इसे सुंदर चमन करले

भजन करले

अंधेरे जा रहे छंटते उजालों से भारी डग डग
अलौकिक ज्योति बिखरी है सकल सृष्टि हुई जगमग
मंजिले दौडी आएंगी ति गति मय चरण करले

भजन करले

बची बाकी जो जीवन की बहुत थोड़ी मधुर घड़ियां
लगाले राम चरणों में कि टूटे यम की हथकड़ियां
सतत आनंद की गंगा में क्यों ना अपगाहन करले

भजन करले

लो जागो हाथ ले माल जपो सुमिरो सदा घनश्याम
हरे कृष्णा हरे कृष्णा हरे रामा हरे श्री राम
खिलेंगे फूल मरुथल में लगन ऐसी गहन करले

भजन करले

8

जय बोलो नित बोलो भैया जय जय गणेश
रिद्धि सिद्धि के दाता बुद्धि विधाता पुत्र महेश
बड़ा लाडला पार्वती का राजदुलारा शंकर का
यशगाथा जिनकी नित नूतन विजय घोष अभ्यंकर का
गजवंदन विनायक विघ्न विनाशक देवों के देवेश

रिद्धि सिद्धि के

हाथ उठाये मोदक भाये देते आशीर्वाद सदा
मूसक वाहन दिव्य छटाधारी की लीला पुण्यप्रदा
आनंददाता जन जीवन के कण कण के सर्वेश

जय बोलो

मंगलकारी सब सुखकारी सकल ज्ञान के भंडारी
सरल करे पल में मुश्किल वो बड़ा दयालु हितकारी
करो वंदना गुण गाओ हर लेते संकट क्लेश

जय बोलो

चिंतन हर्ष विभोर बनाये ध्यान सदा कल्याण भरा
चरण कमल की पावन रज पा धन्य धन्य गई धरा
सुमिरण करलो सचमुच में ना रहे दुखों का लेश
नन्हे से तन में विशाल लहराता बुद्धि का सागर
जय गणेश के जयकरो जय गूंज रहे अवनि अंबर
घनश्याम का तन मन धन सब अर्पण तुमको ही करुणेश

जय बोलो

9

कब तुमको मिलोगे कब होगा दर्शन
करुणा के सागर दशरथ नंदन तू ही पिता है तू ही माता
सकल चराचर तू है विधाता जड़ और चेतन करें तेरा वंदन
करुणा के सागर

कण कण में तू है तेरा आसरा है
नजर में ना आता है क्या माजरा है
इंतजार तेरा है मुश्किल में जीवन
करुणा के सागर

सर्वत्र तू है सर्वज्ञ तू है
मेरी वेदना से क्या अनभिज्ञ तू है
किसने चुराई है मेरे मन की पुलकन
करुणा के सागर

कब से भटकता हूं नहीं चैन दिल को
बसादे मेरी उजली महफिल को खुशियों से भर दे मेरा खाली दामन
करुणा के सागर

घनश्याम तुमको ना कभी भूल पाता
याद में राम तेरी आंसू बहता लगादे दया का हे नाथ चंदन
करुणा के सागर

10

राम नाम के हीरे मोती बांट रहा मैं गली गली
ले लो ले लो भाई बहनों अमिय सुधारसे बड़ी डली
यह अनमोल बिना दामों की वस्तु मिलती बिना प्रयास
अंतस्तल में करें उजाला जीवन में भर दे उल्लास
जिनको छूले स्वर्ण बने वो ऐसी अद्भुत जड़ी भली
ले लो ले लो

जिसने इसको गले लगाया जीवन उसका गया बदल
और और पाने की खातिर मन पागल सा गया मचल
जो उतरे गहरे अंतर में उनका मिलते महाबली
ले लो ले लो

पछताएगा सर धुन कर मल औसर यदि यह गया निकल
याद रहे जीवन अति सुंदर अनगिन शुभ कर्मों का फल
जिस घर राम नाम की चर्चा मलयज शीतल हवा चली
ले लो ले लो

नौ महीने का गर्भवास में नर्क भोग मुक्ति पाई
जाग चेत मन मंदिर में ना कभी जमे कलुषित काई
गहन निशा के अंधकार में किसको राह मिली
ले लो ले लो

महक महक जाए फुलवारी चहके मोर कोयलिया रे
नाचे अवनी अंबर बाजे रसवंती बांसुरिया रे
घनश्याम जो नित भजो राम खिल जाए उर की कली कली
ले लो ले लो

11

राम राम का भजन करो राम को रिझाव
राम राम भजने का मन में हो चाव
शांतिप्रदाता अद्भुत है यंत्र पातक भंजक राम राम मंत्र अनमोल बिना दाम मिलता बेभाव

राम का भजन

मन से भजो या भजो बिना भाव
संकट में कौन करे तेरा बचाव सर्वज्ञ सर्वत्र राम का प्रभाव

राम का भजन

अणु कण कण में व्यापक है वो
सर्जक पालक संघारक है वो देते हैं ढेर ढेर दिल दरियाव

राम का भजन

राम सा हितु मीत कोई भी कहीं
कर्मों के फल सब मिलते यही आयु बीत जाएगी फिर पछताव

राम का भजन

नर तन बार-बार नहीं मिलता
कर्म पुष्प बंजर में नहीं खिलता
ऐसा सुयोग घनश्याम नहीं पाव

राम का भजन

12

राम राम भजले रे राम राम भैया किनारे लगेगी तेरी रे नैया
क्या कभी सोचा है किसने पठाया किसलिए नर तन तूने है पाया
नाच रही सृष्टि वो जग का नचैया

राम राम....

जीवन का ध्येय क्या लक्ष्य क्या जान ले
सत्य क्या असत्य क्या निज को पहचान ले
उड़ने दे प्रेम भरी मस्त कनकैया

राम राम....

झरने सा बहना कल कल सा गाना फूलों सा हंसना लगता सुहाना
खुशियाँ मनाओ नाचो बहे पुरवैया

राम राम....

दुःख-सुख सुख-दुःख दोनों साथ-साथ है
दिन रात रात दिन सांय-प्रभात है
भक्तों की पत का वो सांचा रखैया

राम राम....

रखना विरद भक्त वत्सल जो ठहरा भक्तों के देता है वो हरदम है पहरा
घनश्याम नटखट बड़ा है कन्हैया

राम राम....

13

राम राम भजले रे राम राम प्यारे
मझदार बीच नाव लगेगी किनारे
भक्तों का कुशलक्षेम राम जी के सर पर
करुणा से भरपूर उनका है अंतर
काहे की चिंता फिकर क्या बता रे

राम राम..

दुःख में है राम साथ सुख में धरा क्या
विष के घड़े में कभी अमृत भरा क्या
आयेंगे दौड़े दौड़े जब भी पुकारे

राम राम ....

सांचो है मीत वांकी प्रीत भाई सांची
जिनकी लगन प्रभु राम रंग रांची
यश गुण गाते हैं सूर्यचंद्र तारे

राम राम...

दर्शन की चाह जो पकड़ बांह नाम की
राह निष्कंटक है वैकुण्ठ धाम की
नाच रहे हर्ष उल्लास द्वारे द्वारे

राम राम ....

झूठे सुख भोगों से छुटकारा पाले
निर्द्वंद्व निर्भय हो राम राम गाले
घनश्याम बिगड़ी को पल में संवारे

राम राम ....

14

पायो नर तन रतन अमोल करले सांची रे कमाई
तोहे राम की सौगंध तू ही राम की दुहाई
कब तक सर पर भार कर्ज का ढोता फिरेगा
जीवन पथ में कांटे दुख के बोता रहेगा
कदम कदम पर अंधे कुएं कदम कदम पर खाई
तोहे राम की सौगंध....
किस बिरते पर बल ऊपर इतना इतरावे
महल खजाना कुटुंब कबीला सभी यहां रह जावे
खाली हाथो आया भैया संग ना चाले पायी
तोहे राम की सौगंध....
पल पल छिन छिन आयु छी जे ज्यों अंजुरी का पानी
कब तक मूड गंवार करेगा तू अपनी मनमानी
स्वांस का पंछी उङ जावे बोले,पर भाती नाई
तोहे राम की सौगंध....
आंख खोल उढ चेत जाग कर मोह निद्रा का त्याग
परम पिता के भजन भाव से सच्चे मन से लाग
मन मयूर नाचे मस्ती में फरक ना रती राई
तोहे राम की सौगंध....
सदवृति से शुभ कर्मों से मिल जाते भगवान
घट घट वासी राम प्रभु को निज उर में पहचान
भजले राम राम घनश्याम प्राणी भवसागर तर जाई
तोहे राम की सौगंध....

15

राम भजले राम भजले राम राम भजले राम भजले
करो तुम ध्यान रघुवर का करो वंदन चरण रजले
राम है करुणा के सागर सकल विपदाओं के हर्ता
त्रिलोकी नाथ है स्वामी चराचर सृष्टि के भर्ता
चरण कमलों में गंगा है परस नर पाप सब तजले

राम भजले ....

मनोरथ होंगे सब पूरण, कमी किस बात की उस घर
क्यों भरमाया हुआ फिरता पकड़ जा उनके दर
रहेगा कब तक गफलत में जाग निज करणी पर निज लजले

राम भजले ....

बैठ गंगाजी के तीरे रहा क्यों प्यासा का प्यासा
क्यों उचटा उचटा मन तेरा निराशा का है क्यों वासा
करो पूजन भजन चिंतन प्रेम के भावों से सजले

राम भजले ....

कभी क्या सोचा समझा है यह जीवन बहुत है सुंदर
अकारथ बीत ना जाये निरंतर ध्यान प्रभु का कर
नचाये जैसा तू नचले बजाये वैसा बजले

राम भजले ....

तेरे हर स्वांस से निकले हर हरे कृष्णा हरे रामा
हरे मन मोहना प्यारे हरे चितचोर घनश्यामा
चला जा मस्ती में गाता रामा रामा राम ध्वज ले

राम भजले ....

16

चला जा मस्ती में गाता हरे कृष्णा हरे रामा
हरे गोविंद गोपाल हरि सुंदर हरि श्याम
बड़े कृपालु है दाता दया है उनकी रग रग में
सदा दुःख में सदा सुख में जो रहते साथ पग पग में
कर्म तुमको तो करना है करो निश्चित निष्कामा

हरे गोविंद....

वो सांचा मीत है सबका कभी ना साथ छोड़ेगा
पुकारो प्रेम करुणा से वह नंगे पांव दौड़ेगा
हरेगा पल क्षण में संकट विकट भरपूर बलधामा

हरे गोविंद....

अखिल ब्रह्मांड का सर्जक वो पालक और संहारक
उतारो आरती भजनों कि अंतिम स्वांस है जब तक
भरो अपलक इन नयनों में मधुर मूरत अति अभिरामा

हरे गोविंद....

अंधेरी रात क्यों प्यारी उजालों से क्यों कतराते
ये झूठे चैन सुख सारे हैं झूठे जग के सब नाते
शरण ले लो अविनाश की बनें अनुकूल जो बामा

हरे गोविंद....

अणु अणु में कण कण में उसी का बोलबाला है
धुरंधर ध्यानी ज्ञानी को बड़े विस्मय में डाला है
सरल सी बात है कहानी भजे जा पल पल घनश्यामा

हरे गोविंद....

17

अपने करो माँ मस्तक पर धर दो
झोली को आशीर्वादों से भर दो
तू ही है अंबे दुर्गा भवानी कमला महाकाली कल्याणी प्यार भरा सुख में यह संसार कर दो

झोली को....

हिंगलाज वाली कामाख्या ज्वाला
सकल चराचर रात्रि की तुम प्रतिपाल
असुरों को हे यमपुर का घर दो

झोली को....

तू ही है ब्राह्मणी रुद्राणी माता तेरी सुयश गाथा कण कण है गाता
भक्ति सुधारस आठों पहर दो

झोली को....

मातेश्वरी शारदे तेरा वंदन सर्वस्व अर्पण धूप दीप चंदन जन जन के मानस का अंधकार हर दो

झोली को....

घनश्याम आया तुम्हारी शरण में
याचक दया का बैठा चरण में तम से भरा हूं ज्योति का भर दो

झोली को....

18

राम नाम की लाया खिलौने बांट रहा मैं घर घर में
खेलो भाई बहनों मिलजुल गा गा कर मीठे स्वर
पेट फुल बैठे गणपति बुद्धि का भंडार भरे
सर्वप्रथम पूजो गणेश को कारज सबके सिद्ध करें
धूम मची है जय गणेश की अवनीतल और अंबर में
खेलो भाई बहनों ....
बंकिम मुद्रा धार खडे बृजराज अनोखी मस्ती में
लूट रहे भक्तों को मुक्ति भर भर अंजलि सस्ती में
व्यापक है उनकी सत्ता कन काम में सकल चराचर में
खेलो भाई बहनों ....
कठिन तपस्या में शिव बैठे गंगा सर पर खेल रही
नृत्य करत बहती जाती पापों को दूर ढकेल रही
कर त्रिशूल माथे चंदा,शोभित भुजंग कारे गर में
खेलो भाई बहनों ....
हनुमान जी खडे हुए है वेष सिंदूरी भव्य धरे
कठिन कार्य करने को तत्पर पल में कष्ट महान हरे
रोम रोम में राम बिराजे राम नाम माला कर में
खेलो भाई बहनों ....
राठोडारी जायी मीरा गिरिधर रंग में रांची रे
पी गई विष ले नाम प्रभु का बात कहू मैं सांची रे
मीराबाई अमर हो गई ग्राम नगर दुनिया भर में
खेलो भाई बहनों ....
ले लो ले लो सियाराम को जो अति कोमल करुणाकर
जिस घर होवे इनका वासा आनंद बरसे झर झर झर
अमित शक्ति का स्रोत छिपा है राम नाम के अक्षर में
खेलो भाई बहनों 19

ले ले ले रे रामजी रो नाम पार उतर जायेगा
पार उतर जायेगा रे उबर जायेगा
राम नाम की ओषधि आगे
कैंसर रोग तलक भी भागे
जीवन एक नया फिर जागे
तेरी दुनिया को रोशन ये कर जायेगा। ले ले ले रे ....

कितना अद्भुत मंत्र है प्यारे
भूत पिशाच प्रेत सब हारे
कठिन असंभव काज संवारे
तन तेरा उमंगों से भर जायेगा। ले ले ले रे ....

काहे निराश हैं काहे उदास हैं
हृदय में तेरे भरा रे प्रकाश है
खुशियो की कुंजी सदा तेरे पास है
बिन राम सुख चैन सब हर जायेगा। ले ले ले रे ....

राम नाम सम शस्त्र न दूजा ,
संत ऋषि मुनि करते पूजा,
स्वर्ग बने जिनको छूजा
बन जावे कनक सा निखर जायेगा। ले ले ले रे ....

काहे खोता समय फिर पछतायेगा
नर तन पगले फिर नहीं तू पायेगा
घनश्याम भजन राम के गायेगा
कह रहा बिन भजन के किधर जायेगा। ले ले ले रे....20

राम जी रो नाम लगे नीको रामजी रो नाम भलो प्यारो
राम राम को भज दिन रैना हर ले भय संकट सारो
राम की उदारता का नहीं कोई पार पापी अधम जन तक दिए तार निर्धन के धन है निर्बल के बल भक्तजनों का आधारों

रामजी रो

कण-कण में रहता है सब का पता पल-पल की सबकी खबर रखता दीन का बंधु है सच्चा शाखा करुणा को वारापार यारों

रामजी रो

कितना मधुर चखके देखो जरा
जलेबी कलाकंद में क्या है धरा
नही आछो लगे चाहे अमृत मिले नाम रस आगे सभी खारो

रामजी रो

अद्भुत निराला गजब का है बम पलक में ही दुश्मन हुए बेदम
शक्ति का भंडार भक्ति का घर महाकाल तक भी गयो हार

राम जी रो

घनश्याम के संग नाचो गाओ
अजर अमर पद पाओ पाओ
चंढे मस्ती की भंग पुलक उठे अंग अंग ऐसो प्रियतम है राम
सजन म्हारो रामजी रो

21

राम नाम गंगा में करो अवगाहन
करो आचमन पाओ परसादी अंधकार अंतर का छिन्न भिन्न होगा
उदय मन गगन में ज्ञान भानु होगा
खुशियों उमंगों से भर जाएगा तन

राम नाम

संकट दुखों से छुटकारा होगा आवागमन से निस्तार होगा करो नाम चरणों में सर्वस्व अर्पण

राम नाम

आनंदमय हो संसार प्यारा कण-कण से चूमे अमिय रसधारा
अंग अंग महके मन प्राण मधुवन

राम नाम

राम नाम कितना सुगम और सरल है
अरि दल दहन को भीषण अनल है
भक्तों की रक्षक स्वयं राम लक्ष्मण

राम नाम

घनश्याम व्याकुल विरह में बनो तुम
करो ध्यान पूजन और संत समागम
नयनों को होंगे प्रियतम के दर्शन

राम राम

22

काहे का डर किसका भय राम नाम का संग सबल
तूफानों का करो सामना निर्भय आगे बढ़ता चल
राम नाम नैया की खेवट स्वयं राम नर नारायण
रहते ढाडे जहां कहीं भी कितने राम भजन गायन
दानव दल में अरिकुल घर में मचली एक अजब हलचल

तूफानों का

किसकी मजाल जो टकराये आ राम नाम की शक्ति से
त्रिभुवन पति तक वश में होते नामवरों की भक्ति से
देख भगत की पीर प्रभु होते अधीर बेचैन विकल

तूफानों का

इस दुनिया में एक अकेला मत समझो तुम अपने को साथ-साथ तेरे धनुधारी सिद्धमंत्र दिया जपने को
राम नाम की महिमा अद्भुत बनता अमृत विषम गरल

तूफानों का

वाल्मीकि प्रहलाद अजामिल सेना गणिका पार किए
भक्तजनों की तो क्या कहिए पापी तक तार दिए
उनकी दृष्टि में सब समान है अखिल भुवन पति अति सरल

तूफानों का

राम नाम अंकित जड़ पत्थर झूम-झूम कर नाच रहे
पत्थर तक में प्राण पड़े सच सांच-सांच घनश्याम कहे कंटकमय दुष्कर अगम्य पथ बनते सुंदर सहज सहल

तूफानों का

23

लगाले लगाले– लगाले लगन
राम राम भजले रे हो जा मगन
सिद्ध होयेंगे कारज सकल जो कठिन
काहे को गमगीन मुख मलिन
बिगड़ी बनाएंगे करुणा सदन

राम राम भजले..

छोड़ दे नाव जीवन की प्रभु के सहारे
मझदार बन जायेंगे सब किनारे
नाचते हैं इशारे पे धरती गगन

राम राम भजले..

निर्झर की कलकल में उनकी है सरगम
विहंग वृंद की बोलियों में गए रम
वादियों में सनन सनन गाता पवन

राम राम भजले..

सूरज और चंदा की पहली किरण
छूती प्रथम अपने पिय चरण
सागर पहाड़ों को करले नमन

राम राम भजले..

मन मंदिर में दर्शन करो राम के
आनंद कंद श्री घनश्याम के
सत्संग सेवा से महके भवन

राम राम भजले..

25

भोले बाबा की लगन में मगन हो जा
मगन हो जा रे मगन हो जा भोले तो कैलाश को वासी
दुःख हर सकल सुखों को रासी अजर अमर शंकर अविनाशी ऐसे भोले की भाई शरण हो जा

भोले बाबा की लगन

भोले शंकर पान कियो विष दान कियो देवन को सुधारस घर-घर छायो भोले को यश उनके नाम का पवन भजन हो जा

भोले बाबा की लगन

बम बम बम बम बम शिवशंकर डम डम डम डम डम डमरूधर भक्तों के हित है करुणाकर उनके चरणों की रज का मिलन हो जा

भोले बाबा की लगन

बेलपत्र आग धतूरा भावे
दूध गंगा जल पाकर हर्षा वे
भंग की तरंग रंग चोखो लावे तेरे कष्टों का पल में हरण हो जा

भोले बाबा की लगन

जटा जूट में गंगा विराजे
अर्ध चंद्रमा मस्तक साजे
रूप निर्माण कर त्रिभुवन लाजे
ध्यान करो शिव का तरण हो जा
दास पे इतनी किरपा कर दो भक्ति भाव हृदय में भर दो
हे शिव शंकर बस यह है वर दो
कभी छूटे ना चरण लगन हो जा

भोले बाबा की लगन

मैं हूँ तेरा तुम हो मेरे
आन खड़ा प्रभु द्वारे तेरे
तुमको छोड़ कहाँ मैं जाऊँ किसको मां की पीर बताऊँ चुपके चुपके आँसू बहाऊं
रैन दिवस मन तुमको टेरे
आन खड़ा प्रभु
पापी दीन जनों के आश्रम
पल में हरते संकट और भय सूर्य चंद्र तेल देते थे फेरे
आन खड़ा प्रभु

अखिल भुवन के स्वामी दाता दुःख हर सुखकर जग के त्राता जड़ चेतन तेरे गुणगुता
पाँऊ धीरज जब तम घेरे
आन खड़ा प्रभु
तेरा भजन करूँ दिन राती
तुम बिन कौन मेरा संगती
रह रस कर याद तुम्हारी आती नयना अपलक तुमको हेरे
आन खड़ा प्रभु
आज भंवर में नैया प्रियतम आन बताओ हरलो सब गम
हे रघुनंदन मन जीवन धन
रखले पत घनश्याम पुकारे
आन खड़ा प्रभु
27

सत्संग अमृत धारा भैया बुरा संग विष भरा घड़ा
सोच समझले मन में अपने दुविधा में क्यों रहा पड़ा
आज है जीवन कल भी रहेगा इसका भला भरोसा क्या
भजन करूंगा भूल गया फिर इसमे प्रभु का दोष क्या
बहुत है बाकी क्या है जल्दी हठधर्मी में रहा अदा

सोच समझले

पल-पल क्षण क्षण हीरा मोती अनमोला है अनतोला
सत्संग गंग रंग अंग रंगले मस्ती में डोले चोला
संतजनों के संग में बैठकर हरि चरणों में लाड़ लगा

सोच समझले

पूर्व जन्म के शुभ कर्मों से पुण्यों से नर तन पाया
झूठे सुख भोगो में छीजे कंचन सी तेरी काया
गहन निशा के अंधकार में कब तक चाहता रहा गड़ा

सोच समझले

सत्संग चंदन पारस सुरसरी चंद्र दिवाकर वृंदावन
रैन दिवस अमृत रस झरता प्रियतम का मिलता दर्शन
मधुर बोल में राम बिराजे है रावण जहां बोल कड़ा

सोच समझले

अमर बेल सत्संग भजन की फल फूलों से सदा भरी घनश्याम कहे कर साथ भलो का सहज कूल लग जाए तरी सत्संग के मणिमुक्ताओं से ले मन मंदिर भवन जड़ा

सोच समझले

28

भोले बाबा थाने सुमरूं बारंबार सदाशिव बाबा थाने सुमरूं बारंबार
विपदा में हम पर घणी रे आ रही
कारी कारी अंधियारी छा रही चिंता सारा तन ने खा रही कोनी आछो लगा तेरो रे आयो संसार

भोले बाबा थाने

सारी सृष्टि ने तूही रचे रे
सबका तू ही पेट भरे सै
जब चाहे तब नष्ट करै सै
डरै सै दुनिया सुन तेरी हुंकार

भोले बाबा थाने

जिन पर मेहर तेरी हो जावे
धन यश मान सभी वह पावे आवागमन से मुक्ति करावे शीतल हो जावे रे लाल लाल अंगार

भोले बाबा थाने

तू अंग भभूत गंग सर धरता
तू असवारी वृषभ की करता
तेरे कर त्रिशूल गर नाग लहहता सदाशिव तेरो अजब बन्यो रे श्रंगार

भोले बाबा थाने

रिद्धि सिद्धि चरणों की दासी याचक कोई ना खाली जासी कहे घनश्याम महेंद्र गढ़वासी
औढर दानी तेरे सदा ही भरे रे भंडार

बोले बाबा थाने

29

ले ले राम को नाम की बेड़ा पार लगे
ले ले हरि को नाम की बेड़ा पार लगे
मानुस तन पाकर के प्राणी तू आया
शुभ कर्मों में कभी ना तूने मन लाया
करले मनवा चेत भजन कर भाग जगे

ले ले राम को राम कि

झूठ कपट छल करके माया तूने जोड़ी
अंत समय ना जावे संग में एक कोड़ी
महल मालवा कोई ना जावे साथ सगे

ले ले राम को नाम की

जगत जाल विकराल ख्याल बंदे करना
राम नाम एक सार पार भज कर तरना
समय ना खो अनमोल काल एक रोज ठगे

ले ले राम को नाम की

हाथ दिए प्रभु ने उससे कुछ दान करो
मुंह दिया जिव्हा से हरि गुणगान करो
करले सोच विचार अंधेरा दूर भागे

ले ले राम को नाम की

कानों से कर श्रवण प्रभु के नाम को
पैरों को चल कर प्रणाम प्रभु धर्मों को
नयनन छवि अवलोक कितन मन प्रेम पगे

ले ले राम को नाम की

राम नाम गंगा में गोता तू लाले परमपिता भगवान के दर्शन तू पाले
धन्य कहे घनश्याम कि प्रभु रंग रंगे

ले ले राम को नाम की   30

म्हाने आछो लागे भलो जी प्यारो लागे
दशरथ नंद दुलारो
पहन पैजानियां अंगना डोले छम छम धुनि झनकारे
ब्रह्म नाद सुनबा के खातिर
सुरगण ढाडे द्वारे
मोद मगन भये दरश सजन दिए छाय
गयो चहुंदिशी ऊजयारो म्हाने आछो लागे

जनकपुरी की राज सभा में राजा वचन उचारे
वीर विहीन मही में जानी
को भय संकट टारे
धनुष उठाय लियो, पल में दो टूक कियो
माच गयो गयो चहुंदिशी जय कारो म्हाने आछो लागे

सर माथे धर हुकुम मातृ-पितु राम चले बन मांही
बल्कन पहन धर वेश तापसी पुरजन शीश नवाई
छोड़ चले राजपाट तज दिये ठाठ बाठ
त्याग की महिमा बढावन हारो म्हाने आछो लागे

लाय कठोत निषाद राम के चरण पखारण लागे
धन्य धन्य कहीं राम आज
मम भाग पुर बले जागे
नैया पार लगाई मांगू मैथ उतराई म्हाने आछो लागे

बार-बार शबरी कुटिया के बारह आवे जावे
मतंग ऋषि के वचन
कदापि झूठ ना होने पावै
बेर दे बेर शबरी मत कर देर पगली
भक्त दिनों से मैं तो गए हारो

म्हाने आछो लागे

सबकी औघ निभावन हारो सबके कार्य संवारे
सबके साथ सदा वो रहता धनुष बांण कर धारे
यश घनश्याम गावे, चरण शीश नवावे
बड़ो है दयालु जग को भरतारो

म्हाने आछो लागे

31 व 32

कब होगी मेरी आशा पुरी कब होगा तेरा राम मिलन
अंखियन की कब प्यास बुझेगी कब होगा तेरा दर्शन
विरह वेदना बढ़ती जाती मन में व्याकुलता छाई
रग रग में टीसे अंग लेता विषाद की अंगड़ाई
फीकी फीकी मुस्कान अधर पे घिरी उदासी से चितवन
कब होगी मेरी आशा पूरी
ढर ढर पानी ढरे नयन से अखियां रोती है झर झर
यादों की तम भरी निशा में हृदय आता है भर भर
कब होगा आलोक गगन में कब महकेगा उर मधुबन
कब होगी मेरी आशा पूरी
कंठ हुआ अवरुद्ध शब्द पर पड़ा मौन का ताला है
अंधकार का पहरा चहुंदिशी बंदी बना उजाला है
हर आहट पर चौंकू मैं आए क्या दशरथ नंदन?
कब होगी मेरी आशा पूरी
मन यायावर बन कर डोले कभी काशी कभी मथुरा में
कभी वृंदावन कुंज गलिन में कभी हिमालय कंदरा में
एक झलक तक देखा न पाया बढ़ती जाती है तड़पन
कब होगी मेरी आशा पूरी
सर्वत्र और सर्वज्ञ राम है नयनागर करुणा सागर
इसी भरोसे के बल मेरी भरी हुई जीवन गागर
है विश्वास अटल मुझको दुलरायेंगे रघुकुल भूषण
कब होगी मेरी आशा पूरी

33

तू भजले कृष्ण मुरार को तेरी नैया पार लग जावे
तेरी नैया पार लग जावे तेरी नैया पार लग जावे
अशरण शरण आनाथन की नाथ है
सब ही नवावे जिनके चरणों में माथ है
दुख में सुख में जो प्रतिपल साथ है
ऐसे प्रभु का नित्य करो भाई मेरे ध्यान
जिनके सुमरने से मिले मोक्ष रूपी ज्ञान
प्रेम से पुकारो तो आज मिले भगवान
मत भूल तू उसे करतार को जो बिगड़ी हुई बनावे

तू भजले

कीट से लगा कर देखो करि में समाया है
जड़ और चेतन में उसकी ही माया है
नर तो क्या सुर तक ने ना भेद पाया है
सूर्य और चंद्रमा में उसका प्रकाश है
दुष्ट पापियों का करता वो नाश है
भक्तों के घर-घर में उनका निवास है
ध्याले उस सिरजन हार को जो आवागमन नसावे

तू भजले

कोई तो गरीब बना ना कोई बना मालामाल
कोई तो बेहाल रहा कोई हो गया निहाल
कोई तो उदास खड़ा कोई हंसता दे दे ताल
किसी के द्वारे पर नौबत है बाज रही
कहीं मरघट की सी शून्यता बिराज रही

कहीं मनमोहन की झांकी है साज रही
यह अटल नियम संसार को यहां करे सो वैसा पावै

तू भजले

उसने दो कान दिए सुनो अच्छे-अच्छे बैन
हरि के भजन और कीर्तन दिन रैन
अच्छा-अच्छा देखने को दे दिए हैं दो-दो नैन
वाणी भी दई है भाई बोलो मीठे मीठे बोल
मीठा-मीठा बोलने में लगे नहीं कुछ मोल
दुश्मन भी दोस्त बने देओ इतना रस घोल
करले ऐसा व्यवहार को जो सबके मनको भावे

तू भजले

हरि के भजन बिन होवे नहीं पार रे
नाव तेरी डूब जाए बीच मझधार रे
तीन काल में भी नहीं होवे निस्तार रे
कालों के महाकाल भजले तू जय जय राम
मुक्ति की गंगा जिनके द्वारे बहे आठो याम
गुरु की कृपा से पद गाया भाई घनश्याम
फिर तरसेगा दीदार को जब बीत उमरिया जावे

तू भजले

तू ले ले नाम भगवान का तेरा बेड़ा पार हो जावे
तेरा बेड़ा पार हो जावे तेरा बेड़ा पार हो जावे
तेरी मेरी करते-करते रात दिन बीत रहे
पल-पल क्षण क्षण जीवन घट रीत रहे
काम क्रोध मद लोभ मोह तुझे जीत रहे
तेरे पर्दा पड़ा अज्ञान का नर क्यों तू ना इसे हटावे
तू ले ले नाम

देख देख संगी नाती क्यों तू इतना फूल रहा
धन के नशे में भाई अपने को भूल रहा
गर्व के हिंडोले में दिन-रात झूल रहा जब हेला हो काल महान का अकड़ धरी रह जावे
तू ले ले नाम

माता कहे पुत्र मेरा आंखों का तारा है बहना कहे भाई मेरा जाग सा दुलारा है
पत्नी बोले पति मेरा प्राणों से प्यारा है
जब उड़े पखेरु प्राण का कोई पास में तेरे आवे
तू ले ले नाम

जब तक है पास पैसा तेरे है हजारों यार
ऐरे गैरे नत्थू खैरे करे तुझे नमस्कार पैसे जब खत्म होंग झांके नहीं तेरा द्वार
आवे नहीं जान पहचान का अलगा ही द्वारा से जावे
तू ले ले नाम

बड़े-बड़े ऋषि मुनि संतो ने माना है कोई नहीं थिर यहां सब ही को जाना है

जैसे–जैसे कर्म किए वैसे फल पाना है
भाई उत्तम फल सतदान का कोई बिरला नर कर पावे

तू ले ले नाम

अजर अमर एक नाम केवल राम का जिनके भजे से मिले लोक दिव्य धाम का
भजन सुनाया मैंने भाई घनश्याम का
तू पावे में पद निर्वाण का तेरा जन्म मरण मिट जावे

तू ले ले नाम

36

बंशीवाले सांवरिया फिर लोगे अवतार
नर नारी आकुल व्याकुल हो कब से रहे पुकार
जब जब होता धर्म क्षीण और पाप बढे बेढब भारी
मनमानो वो जुल्म करे जब दुष्ट और अत्याचारी
त्राहि त्राहि चहुंदिशी मच जाये भ्रष्ट बने सत्ताधारी
हिंसा और लूटपाट से त्रस्त होय जनता सारी
धर्म की रक्षा के हित तब तब तुम होते साकार

बंशीवारे

घोर स्वार्थ में लिप्त हुए अपनों से मुखड़ा मोड़ लिया
जन्म-जन्म के चिर संगी ने अपना रिश्ता तोड़ दिया
समय ने देखा हाय विधाता विकट भयंकर मोड़ लिया
दुष्ट और बदमाशों ने भी उजला कपड़ा औढ लिया
सीधे-साधे मलमनसों का नहीं रहा संसार

बंशी वाले

खुले बाजारों आज द्रोपदी निर्वसना की जाती है
सती देवियों की लज्जा भी आज न रहने पाती है
सत्यवादी नृप हरिश्चंद्र की बात न मानी जाती है
धर्मराज युधिष्ठिर की भी हंसी उड़ाई जाती है
हरा भरा यह देश तुम्हारा बना हुआ पतवार

बंशी वाले

कैसी हवा चली मेरे मालिक प्रेम की डाली टूट गई
दया धर्म की बगिया सूखी ममता कोयल रूठ गई
भाई से भाई लड़ता है हाय री किस्मत फूट गई
जिस डोरी में बंधे हुए थे वही हाथ से छूट गई

कल तक जो थे अपने उनका बदल गया व्यवहार

बंसी वाले

आओ आओ बेगी आओ गोविंदा गिरिधारी रे
पथभ्रष्टों को राह बताओ गोविंदा गिरिधारी
जगमग जगमग हर घर होवे गोविंदा गिरिधारी रे
सत्य प्रेम की बजे मुरलिया गोविंदा गिरिधारी रे
घनश्याम तेरी फिर मिल सब बोले प्रेम से जय जयकार

बंसी वाले

37

जन्म किसी का होता है कोई चार के कंधों जाता है
दुनिया दर्शन मेला है सब चलाचली का नाता है
दृश्यमाना जो निश्चय और अटल भैया
धन्य धन्य जो उड़ा रहे हैं शुभ कर्मों की कनकैया
धन यश मान हर्ष सुख वैभव प्रभु कृपा से आता है

दुनिया दर्शन

कोई आज चल कोई काल चले जाना सबको एक रोज पड़े कोई कालिख मुंह पर पोत चला कोई सलाम और सितारे जड़े
महापुरुषों की गाथा युग युग बड़े प्रेम से गाथा युग युग बडे प्रेम से गाता है

दुनिया दर्शन

कर्म करो ऐसे तुम जाओ हंसते दुनिया करे गर्व से कर मस्तक ऊंचा जीवन
राम है रक्षक उनके जो कांटों में राह बनाता है

दुनिया दर्शन

अनगिन शुभ कर्मों का फल है मानव जीवन का पाना
अनमोल रत्न को लूटे रहे बुनबुन झूठे सुख का ताना
परमपिता के पास सभी के पल-पल क्षण का खाता है

दुनिया दर्शन

साथ न तेरे कुछ भी आया जाना पड़े अकेला रे
ना जाने किस पल आ जावे महाकाल का हेलारे
घनश्याम नहीं कुछ किया यतन अब सिर धुन धुन पछताते हैं

दुनिया दर्शन

39

राम राम भजले रे होजा मगन लगाले लगाले लगाले लगन संकट में रहते है हरदम वो साथ निर्बल की बल है अनाथों के नाथ
हर लेते पल भर में मन की जलन
लगाले लगाले
जीवन तेरी के सांच खिंवैया
सौंप भार सारे हो निश्चित भैया निष्काम करता चला जा भजन
लगाले लगाले
सदा ध्येय अपना हो उपकार करना
सत्संग सत्कर्म करते ना डरना
मिलेंगे प्रभु नहीं तजना यतन
लगाले लगाले
हीरे सी काया माया है नश्वर
सुख भोग झूठे जरा सोचिए पल भर
अविनाशी ईश्वर के गहले चरण
लगाले लगाले
तू मुक्ति परम घनश्याम पाले
हरे राम श्री राम गोविंद गाले
सकल सुख मिलेंगे ले उनकी शरण
लगाले लगाले

40

कभी ना कभी और कहीं ना कहीं मेरा राम सलोना आएगा तन की तपन और मन की जलन पल एक में आन मिटाएगा

अजब अनोखी रची फुलवारी भांति भांति के फूल खिले
मधुर मधुर भ्रमरों का गुंजन मलयानिल हो मत चले
चंद्र छटा में श्याम घटा में रूप दिव्य दर्शायेगा
कभी ना कभी

निर्झर के कलकल में प्रियतम मीठे स्वर में बोल रहे
विहंगवृंद के कलख में अमृत रस अनुपम घोल रहे
बैठ हिंडोले हौले हौले सजना कुछ कह जाएगा
कभी ना कभी

श्वेत पहन परिधान हिमालय सजग प्रहरी सा खड़ा अड़ा
मस्तक शोभित श्वेत रतन से लगता दिव्य जड़ाव जड़ा
रूप निराला देता झाला, किसके मन ना भाएगा
कभी ना कभी

वर्षा की रिमझिम रिमझिम में रस से भरी फुहारों में
मोद मगन हो सृष्टि नाचे खिल-खिल उठे बहारों में
मुनि मन मोह ऐसा सोहे ज्योति किरण पर प्रकटायेगा
कभी ना कभी

इतने शक्तिशाली है राम है कण-कण में वो व्याप रहे
एक इशारे से अग जग के पाप-ताप अभिशाप हरे
धनुष बाण ले खड़े शान से कौन हो जो टकराएगा
कभी ना कभी

41

ओम नमो भगवते वासुदेवाय जपा कर जपा कर जपा कर
ओम नमो

गज और ग्राह की हुई थी लड़ाई विकल हो के गज ने सदा लाई
ओम नमो
प्रह्लाद को जब गिरि से गिराया मस्ती में उसकी जुबां ने था गाया
ओम नमो
मीरा ने अमृत किया विष को कैसे
जर्रे जर्रे में शक्कर उड़ेली गा जैसे
ओम नमो
द्रोपदी बीच कौरव सभा में खड़ी थी
याद में बह रही आंखों की लड़ी थी
ओम नमो
हनुमान लंका में पहुंचे थे जिस दम
विभीषण के घर से ये आती थी सरगम
ओम नमो
घोर जंगल में ध्रुव ने किया था महातप
गूंजता था सकल बन के अंदर यही जब
ओम नमो
सकल सुख के भंडार घनश्याम गाता
इसी मंत्र से मिलते जग के विधाता
ओम नमो

42

हे राम तुम्हारे चरणों में है कोटि-कोटि मेरा वंदन
स्वीकार करो प्रभू भरा निष्काम भक्तिमय अभिनंदन। हे राम

एक युग सृष्टा हे युग दृष्टा युग युग में वाणी मुखर तेरी
जब भूमंडल मे पाप बढे बज उठी प्रलयंकर रणभेरी
घर-घर खुशियों से झूम उठे नहीं रहा कहीं रोदन कंदन। हे राम

हे आदि देव हे आदि पुरुष हे सकल चराचर के स्वामी
तुम हो विराट तुम हो महान सर्वत्र सदा अंतर्यामी
जिन पर हो प्रभु कृपा तेरी फट फट कट जाते बंधन। हे राम

ब्रह्मा विष्णु शंकर नारद गाते तेरे गुणगान सदा
माता शारद ना कभी कथते तव लीला पुण्यप्रदा
हे त्रिलोकी के नाथ राम रघुकुल भूषण दशरथ नंदन। हे राम

रवि शशि उस गण में तेज तेरा तेरे इंगित पर बहे पवन
तेरी सुगंध से महक रहे अवनीतल अंबर के कण कण
क्या अद्भुत कारीगर तुम हो सबमें तेरे दिल की धड़कन। हे राम

तेरे नाम की धूम मची जल ऊपर तर चले पत्थर
पदरज से गौतम नार तरी अधमों के दल गए पर उतरे
जिस ढेर छाप तेरे पग की वो माटी नहीं है, है चंदन। हे राम

हे करुणाकर हे अधहारी सुख के सागर आनंद धाम
जन जन पर करुणा बन बरसो हे अजर अमर घनश्याम राम
धरती अंबर सब नाच उठे मरुथल बन जावे नंदन वन। हे राम

43

माँ जगदंबे मम अवलंबे ध्यान धरू तेरा मैं कालि
अखिल भुवन यश तेरा गावे सकल चराचर प्रतिपाली
भक्तों के हित रूप तेरा मां सौम्य और कल्याण भरा
जिसने ध्याया उसने पाया है कठिन असंभव काज सरा
सब पर प्यार समान तेरा ना ऊँच-नीच का भेद जरा
जिसने भी गही शरण तेरी वो सदा सदा के लिए तरा
जिसने द्वारे तेरे मात गया वो कभी नहीं लौटा खाली
अखिल भुवन

युग युग में सर्वत्र सदा मां जन-जन तेरी जय बोले
पा शुभ आशीर्वाद तुम्हारा मोद मगन निर्भय डोले
मंगल करणी अंबे तुमने कृपा नेत्र जब भी खोले
पलक मात्र में जला दिए संकट और संशय के गोले
खुल गए भाग्य उन लोगों के जिन पर तुम्हें दृष्टि डाली
अखिल भुवन

मातिमंदों को समझ बांझ की गोदी तूने भर दी माँ
पंगु लंगड़े को चला दिया गूंगो को बोली दे दी माँ
दर दर मारे उजड़े उखड़े लोगों को राह दिखा दी माँ
कैंसर पीड़ित रोगी दिल को संजीवनी बूटी लादी माँ
अपने पुत्रों के लिए किया क्या नहीं मां तुमने कल्याणी
अखिल भुवन

कभी बन जाती हो माता तुम रौद्र रूप धर महाकाली
असुरो का लहू चाटने को जिव्हा बन जाती मतवाली
सर काट काट भर खप्पर मे फिरती रण मे बन विकराली
चुन चुनार असुर मुण्डों की माला अपने गल डाली

महाकाल चरणों का सेवक नाच रहा दे दे ताली।

अखिल भवन

ब्रह्मा विष्णु शंकर नारद सब आन खड़े तेरे द्वारे
अंधियारे मिटते चले गये छाये चहुंदिशी मे उजियारे
संत ऋषि मुनि भक्त जनों की आंखों की माँ तुम तारे
जिनको भी मिल गई तनिक झलक हो गए उनके वारेन्यारे
घनश्याम कहे महिमा तेरी माँ फूल खिले डाली डाली
अखिल भुवन यश तेरो गावे सकल चराचर प्रतिपाली

अखिल भुवन

45

बाबाजी तेरी मेहरबानी हमसे कहीं ना जाए
बाबा जी तेरी महिमा हमसे बरणी ना जाए
जब जब भीड़ पड़ी है हम पर
विनती करी है जाए द्वार तेरे पर
बेगा दौड़े आए बाबाजी तेरी मेहरबानी

दीन दुखी जो भी द्वार तेरे आवे
कृपा कोर बाबा तेरी पावे
मगन होय चले जाए बाबाजी तेरी मेहरबानी

जो सदा प्रेम से भजता
मनवांछित वो निश्चय पाता
इसमें फर्क ना आए बाबाजी तेरी मेहरबानी

महिमा यश बाबा कब तक गावे
नाम लियेते ही तर जावे
लख चौरासी छूट जाए बाबाजी तेरी मेहरबानी
विनय यही कर जोड़ दास की
बेड़ी पड़ी जो ब्रह्म पाश की
मुक्ति उससे मिल जाए बाबाजी तेरी मेहरबानी
हमसे कहीं ना जाए बाबाजी तेरी मेहरबानी
हमसे कही ना जाए बाबाजी तेरी मेहरबानी
46

मेरे बाबा के लाख लाख हाथ
जय जय बोलो रे मिल साथ-साथ
जर्रे जर्रे में वो कण-कण में है वो
नहीं कोई जगह जहां हाजिर ना वो
नहीं उनसे छिपी कोई हिवड़ा री बात मेरे बाबा के लाख

बाबा अपने हैं उनसे कैसी शरम
मिट जाएंगे सारे संशय भरम
पकड़ो अंगुली जरा बाबा भर लेंगे बाथ मेरे बाबा के लाख

बाबा दिल के बड़े अति कोमल उदार
लूटाते हैं भक्तों पर जी भर के प्यार
करुणा के सागर है नाथों के नाथ मेरे बाबा के लाख

मन में श्रद्धा भरोसे की ज्योति जला
बाबा हर लेंगे संकट कठिन सब बला
उनके रहते ना समझो कभी भी अनाथ मेरे बाबा के लाख

होवे पूरण सभी कामनाएं सफल
बाबा ने निर्धन के धन निर्बल के है बल
उनके चरणों में दुनिया झुकाती है माथ मेरे बाबा के लाख

खाली लोटा नहीं जो दर पे गया
स्नेह ममता से भरपूर उनका हिया
कहता घनश्याम सच सोलह आने यथार्थ
मेरे बाबा की लाख लाख हाथ 47

बाबा आये तेरे द्वारे आशीर्वाद पाने को
आशीर्वाद पाने को आशीर्वाद पाने को
म्हारी डूबती नैया ने बाबा का कर दोजी
मेरी अंधियारी दुनिया ने रोशनदार कर दोजी
बाबा आए तेरे
कोस तो हजारों बाबा आये जी
मूरत थारी हिवड़ा में घाल आयेजी
बाबा आये तेरे
मन्नत थारी जो कोई भी मन से माने जी
पूर्ण होवे काज भगत के धन धन जी
बाबा आए तेरे
आधरे को आंख देदी बांझन पुतर जाये
लांगड़े को टांग देदी महिमा कहीं ने जाये
बाबा आए तेरे
दूर-दूर के यात्री थारा माही आवे
मगन होय कर मनङा माही जय जय कार मनावे
बाबा आये तेरे
थारा जैसा संत पुरुष रो झंडो ऊंचो फरके
लख लख अंखियां निरख निरख कर मुनड़ा माही
बाबा आए तेरे
दास पे इतनी करदो किरपा राखो चरणा माही
थारी छतर छाया के नीचे बेड़ो पार हो जाई
बाबा आए तेरे
48

आया अकेला जाये अकेला साथ न जाये दमड़ी धेला
पुण्य किए जब ढेरो सारे
मानव देह मिली तब प्यारे
विषयों में मत इसे गंवावे चार दिनों का खेला
आया अकेला
सुंदर सा ढेरो सा धन
पाकर गर्व करें मत तू मन
ना जाने किस पल जावे काल बली का हेला
आया अकेला
दुनिया की है चल दुरंगी
जब तक मतलब तक संगी
मत फंसना इस जाल में प्राणी चार दिनों का मेला
आया अकेला
जल में कमल जैसे वैसे रहना
कष्ट पड़े जो भी हंसकर सहाना
प्रेम ज्योति बन रहेले सारा अंधकार जो फैला
आया अकेला
जय जय कृष्ण की रटन लगी हो
जय जय राम की लगन लगी हो
फिर पछताएगा मूर्ख जब बीते मंगल बेला
आया अकेला
49

भक्तों के भगवान आन अब दर्शन देओजी
निर्बल के बल राम आन अब दर्शन देओजी
पल पल बरसो जैसे बीते
व्याकुलता द्रगजल रीते
हारे के हरि नाम आन अब दर्शन देओजी
भक्तों के भगवान
द्वारे तेरे पर खड़े हुए हैं
नयना अपलक के गड़े हुए हैं
कहां छुपे अभिराम आन अब दर्शन देओजी
भक्तों के भगवान
मीरा के घुंघरू में नाचे
संत के हृदय में नाचे
मुरलीधर घनश्याम आन अब दर्शन देओजी
भक्तों के भगवान
बिरहा अब तो सहा ना जाये
पल एक तुम बिन रहा न जाये
करुणाकर सुख धाम आन अब दर्शन देओजी
भक्तों के भगवान
रोम रोम मेरा तुम्हें पुकारे
कहां छुपा है बेगा आरे
शरण तेरी जयराम आन अब दर्शन देओजी
भक्तों के भगवान
50

मां जगदंबे दुर्गे अंबे आन खड़ा तेरे द्वारे
हे कल्याणी मात भवानी सकल जगत की रखवारे
आज विपद में हूं मैं माता कोई मेरे साथ नहीं
अंतर्यामिनी घट घट वासिनी क्या तुमको है ज्ञात नहीं
लिया आसरा तेरा मैया अब तो लाज बचा रे
हे कल्याणी माता भवानी
बेबस बन असहाय पड़ा तेरे, चरणों में मैं माता
मेरे तन का मन का कण कण रैन दिवस तुमको ध्याता
बीच भंवर में जीवन नैया आके पार लगा रे
हे कल्याणी मात भवानी
चारों ओर अंधेरा गहरा ना सूझे किस ओर डगर
दिशा हीन सा डोल रहा हूं इच्छित पथ नहीं कहीं नजर
आलोक कहीं जा छुपा है अंबे छाए तो है चहुदिश अंधियारे
हे कल्याणी माता भवानी
जो भी पहुंचा तेरे दर पर खुशियों की गागर लाया
घर का अंगना कोना-कोना मस्त बनाया महाकाय
पूरण करती काज सबो के भक्तन की तुम आधारे
हे कल्याणी माता भवानी
मेरी भी सुनले विनती मां कबसे तुमको टेर रहा
दरश दिखा जा प्यार से बुझा जा कब से पथ को हेर रहा
झोली भर घनश्याम की माता कर देना वारे न्यारे
हे कल्याणी माता भवानी
51

शंकर भोले भाले बड़े मतवाले आया हूं दरबार में
मेरी नैया पड़ी मझदार में

तीन लोक के नाथ दयालु संकट हरो हमारा
बड़े-बड़े पतितो को तुमने पल में पार उतारा
तेरी महिमा कोई ना जाने ध्यावे सब
थाने अखिल संसार
मेरी नैया पड़ी मझदार में
तुम बिन शंकर कौन है मेरा किसके द्वारे जाऊं
किसको अपने मन के स्वामी जाकर व्यथा सुनाऊं
शरणा आया हूं नाथ तिहारे यूं दास पुकारे
बड़ा हूं लाचार
मेरी नैया पड़ी मझदार में
भस्मासुर को वर देकर के भोलापन जतलाया
त्रिलोकी में फिरे भागते धन्य है तेरी माया
ऐसे भोले दया के सागर जगत में
उजागर खड़ा हूं सरकार में
मेरी नैया पड़ी मझदार में
गिरजापति हे भोले शंकर ध्यान तुम्हारा धरते
माया के चक्कर में फिर भी बार-बार क्यों गिरते
भोले आकर दरश दिखा दे
वह ज्योति जगादे पड़ा हूं अंधकार में
मेरी नैया पड़ी मझदार में
जिसने भी ध्याया है तुमको मनवांछित फल पाया

दास पर भोले कृपा करदो चरणन शीश नवाया
ओढ़रदानी करो मेहरबानी विनय जोर
पाणी खड़ा हूं इंतजार में
मेरी नैया मझदार में

52

राम राम भज लीजिए रे
राम रस गट पीजिए रे
राम की दृष्टि में सब है सामान
कर्मों में ऊंट नीच बनते महान
शुभ कर्मो में चित्त दीजिए रे
राम राम राम भज लीजिए रे

धन संपदा को पा मत इतरा
झूठे सुख भोगो में क्या है धरा
राम चरणों से प्रीत कीजिए रे
राम राम राम भजन लीजिए रे

निर्भय बनो करो जन जन से प्यार
दुखिया को दो सुख का उपहार
पर दुःख देख पसीजिए रे
राम राम राम राम भज लीजिए रे

काम क्रोध मद लोभ मोह से डरो
सीख संत मुनियों की माथे धरो
लीला प्रसंगों पे रीझिए रे
राम राम राम भज लीजिए रे
राम रंग अंग घनश्याम रंगले संतों का संग सत्संग करले आनंद गंगा में भीजिए रे
राम राम राम भजन लीजिए रे

53

गायेंगे गायेंगे हम राम नाम गुण गाएंगे
हम मतवाले राम नाम के राम नाम गुण गाएंगे
राम की महिमा हमने पढी सुनी और अच्छी देखी है
आते बाबल जाते हैं टल सच नहीं जरा भी शेखी है
कदम कदम पर मिले विजय खुशियों के दीप जलाएंगे
गायेंगे जाएंगे हम राम नाम गुण गायेंगे
कटता परवाना फांसी का चुभ कर रह जाता है काटा
पड़े हुए मृत्यु शैया पर लगता प्रेम भरा चांटा
इतना प्यारा दर्द भरा नहीं मीत कहीं हम पाएंगे
गायेंगे गायेंगे हम
भीषण से भीषण रोगों की राम नाम बस एक दवा
शुद्ध बुद्ध निर्मल हो जाते जिनको लगती जरा हवा
मलयानिल के मस्त झकोरे मस्ती में नहलायेंगे
गायेंगे गायेंगे हम
अंगना बीच कल्पवृक्ष का विटप सदा लहराता है
कामधेनु द्वारे पर ठाडे गगन सुधा बरसात है
रिद्धि सिद्धि की बात न पूछो सुर गण चंवर डुलायेगे
गायेंगे गायेंगे हम
दुःख आता है तो संग मे सुख का संदेशा लाता है
मरण सदा नवजीवन का संगीत सुरीला गाता है
बनो अभय मत करो फिकर धरती को स्वर्ग बनायेंगे
गायेंगे गायेंगे हम
रैन दिवस और सांझ सवेरे राम राम की रटन लगे
सब कुछ अर्पित राम नाम को ऐसी मन मे लगन जगे
घनश्याम कहे फिर राम कृष्ण घर घर मे दौड़े आयेंगे
गायेंगे गायेंगे हम 54

धनवा धारी सियाराम से करले कुछ पहचान रे
पार लगेगी तेरी नैना हो जावे कल्याण रे
मेरा मेरी करते-करते प्राण पखेरू उड़ जावे
धन दौलत अरु कुटुंब कबीला संगना तेरे कुछ जावे
महल अटारी यहां रहेंगे झूठी तेरी शान रे
धनवा धारी सियाराम से
मुट्ठी बंद की आया था हाथ पसारे जाएगा
सुंदर उजला तन ये तेरा माटी में मिल जाएगा
महफिल मौज मजो की तेरी हो जावे वीरान रे
धनवा धारी सिया राम से
जिनको तू अपना कहता है कोई नही सगा तेरा
मात-पिता सुत बहना भाई सबका स्वार्थ पगा घेरा
चकाचौंध की इस दुनिया मे सब है बेईमान रे
धनुआ धारी सियाराम से
क्यों कोल्हू के बैल की नाई पचि पचि कर तू मरता है
किस कारण अपने सर पर तू पाप की गठरिया धरता है
दूर फेंक दे मोह ममता को ले अपने को जान रे
धनवा धारी सियाराम से
तेरे अंदर बहत निरंतर प्रेम दया का झरना है
करो भलाई सेवा सबकी एक दिन सबको मरना है
युग युग तुझको याद करे रे ऐसे छोड़ निशान रे
धनवा धारी सियाराम
कहीं खोल दे अन्नक्षेत्र और कहीं चिणादे दिल जलशाला
नंगो को दे दान वसन का राम चाकरी यह आला
घनश्याम कहे फिर मिलेंगे निश्चय चतुर्भुजी भगवान रे
धनवा धारी सियाराम से 55

आते दौड़े सुन भगवान भगत की टेर टेर टेर
व्याकुल हो जाते ना करते पल की देर देर देर
जब होती हानि धर्म की बढे पाप घन घोर
सीधे-साधे भल मनसो पर हो जुल्मों का जोर
धर्म की रक्षा को प्रभु आते बेर बेर बेर

आते दौड़े सुन भगवान

भक्तजनों का कष्ट कभी नहीं सह सकते भगवान
भक्त हैं उनकी भुजा दाहिनी श्वास है तन मन प्राण
नाच रहे श्री राम भक्त को हेर हेर हेर

आते दौड़े सुन भगवान

इतने कोमल राम है उनकी नहीं दया का पार
रैन दिवस नित रहे बरसती करुणा अमृत धार
पीले अमिया प्रेम रस प्याला माला फेर फेर फेर

आते दौड़े सुन भगवान

मन के उजले भोले भाले भक्त प्रभु को प्यार
नरसी भक्त की हुंडी सिकारी वेष सांवलियो धारे
द्रुपद सुता को चीर बढ़ायो ढेर ढेर ढेर

आरे दौड़े सुन भगवान

सरल हृदय से कभी पुकारो पास सदा आ जावे
विपदा संकट दर्द सभी कुछ पल में आने मिटाओ
घनश्याम चरण में लोट्यो आंसू गेर गेर गेर

आते दौड़े सुन भगवान

राम नाम की भिक्षा दे दे तेरे द्वारे आया हूँ
संग में अपनी फटी पुरानी खाली झोली लाया हूँ
ना मांगू मैं रुपया पैसा रोटी का नहीं करूं सवाल
दो अक्षर की भिक्षा मांगू लिख कर दे दे झोली में डाल
भला करेगा राम तुम्हारा अलख जगाने आया हूँ
राम नाम की

धन धान्य से घर भर जावे फैले बेल सवाई हो
दिन दूनी और रात चौगुनी तेरी सफल कमाई हो
संत जनो की वाणी घर घर आज सुनाने आया हूं
राम नाम की

रोग शोक के कदम पड़े ना खुशहाली के फूल खिले
बैरी तेरे मित्र बनेंगे परिजन सब अनुकूल चले
बंजर सूखी धरती को मै हरी बनाने आया हूं
राम नाम की

झूठा नकली ठाठ ये तेरा पल मे ही ढह जायेगा
बिन पतवारो की किश्ती सा अधम बीच बह जायेगा
विधवा के है खेल निराले यह बतलाने आया हूं
राम नाम की

दो दिन का है जीवन प्यार करदे राम नाम अर्पण
समय चूक कर फिर पछताए बड़े कीमती है क्षण क्षण
क्यों अज्ञान तिमिर मे भटके राह दिखाने आया हूँ
राम नाम की

रात अंधेरी बीत गई है चमचम करता दिन आया
तेरे आंगन बीच में भैया स्वर्ण किरण का रथ आया
दर्शन करले जी भर करके अमिय पिलाने आया हूँ
राम नाम की 57

राम नाम की पकड़ लकुटिया भव सागर विशाल ले तर
संकट कष्ट पास ना आवे मत कर चिंता सोच फिकर
जन्म दिया है वही संभाले रक्षा सबकी किया करें
भूखो को अन्न निर्वसनो को वसन रात दिन दिया करें
जो कुछ भी सब परम पिता का तेरा अपना क्या है नर
संकट कष्ट पास

कौन कार्य है पंछी करता है अजगर किसकी करे टहल
किसकी सत्ता से मची हुई है अजब निराली सी हलचल
सकल विश्व को नचा रहा वो कठपुतली सा नटनागर
संकट कष्ट पास

भूल भलैया में सुख दुख के जन्म मरण के भटक रहा
मुक्ति पथ को कौन बतावे अंतर द्वंद्व में अटक रहा
राम नाम को भजो निरंतर आनंद बरसेगा झर झर
संकट कष्ट पास

पापी अधम जनों को तारा दिन दुखी निर्बल के बल
हारे थके निराशा हृदय मे ज्योति उज्जवल
सच्चे मन की सुन गुहार प्रभू दौड़े आते हैं घर-घर
संकट कष्ट पास

राम नाम नही हाटो बिकता मिलता नहीं बाजारों मे
यह अनमोल रत्न मणि चमके घोर गहन अंधियारों में
घनश्याम तेरे अंतर के भीतर बोल रहा प्रतिपल ईश्वर
संकट कष्ट पास

58

जब जब विपद पड़े तब तब मेरे राम ने धनुष उठाया रे
दिन हो चाहे रैन अंधेरी याद किया तब आया रे
इतनी कोमल राम है भैया पल भर में वो जाए पिघल
श्रद्धा और विश्वास प्रबल हो उन्हें पुकारो होय विकल
नंगे पैरों आए दौड़े संकट आन मिटाया रे
दिन हो चाहे रैन
देख संकटों में भक्तों को होते राम बड़े व्याकुल
दिन चैना ना रात को निंदिया हो जाते अति शोकाकुल
हरे नाथ जब तक पीर भगत की कल एक पल पाया रे
दिन हो चाहे रैन
भक्तों के संग संग वह डोल बना बावरा खोया सा
हर दम रहता सजग जागता लगता जैसे सोया सा
शबरी की कुटिया में आ प्रभु बेर चाव से खाया रे
दिन हो चाहिए रैन
एक कदम बस एक कदम ही राम नाम मंदिर में चल
मच जाती हलचल अरिदल में दुर्गुण पाते कहीं ना थल
बंजर सूखी धरती में भी उसने फूल खिलाए रे
दिन हो चाहे रैन
करलो प्रेम राम से पगले राम विधाता ईश्वर है
सकल सृष्टि को रचने वाला ब्रह्मा विष्णु महेश्वर है
जि जिस ने भी किसी रूप में जपा वहीं दिखलाया रे
दिन हो चाहे रैन

59

हमने तुमको एक पत्र लिखा है हे राम दयालु करुणाकर
सुधिलो दर्शन दो आकरके देखो क्या हम पर रही गुजर
तुम नाथ अनाथन के स्वामी
अधहारी सुख सागर नामी
सर्वत्र सदा सर्वज्ञ हो तुम
घट घट वासी अंतर्यामी
दुःख भंजन मुनि मन रंजन हो रघुकुल भूषण हे राम अमर
हम ने तुमको

क्या भूल हुई हमसे भगवान
बिसरा बैठे क्यों हमे सजन
हम तेरे थे हम तेरे हैं
तेरे ही रहेंगे जीवन धन
गलती अपनों से होती है प्रभु करते क्षमा अभय कर धर
हम ने तुमको

आंखों से निंदिया गई रूठ
खाना पीना सब गया छूट
कुछ ऐसे रम बैठे अंदर
रहता उदास मन गया टूट
हम ठगे गए कुछ ना समझे अखियां रोती है आहे भर
हम ने तुमको

मत इतने निठुर बनो प्यार
हम रो रो हंस-हंसकर हार
यदि कठिन परीक्षा तुम लोगे
फिर लेंगे हम मारे मारे

तू स्वामी हो हम सेवक है तेरे चरणों के है अनुचर
हम ने तुमको

मन के मुरझाए यह पुष्प खिले
अधरों से झरने फूट चले
पाने को तेरी एक झलक
भंवरा के दिल मचले मचले
घनश्याम तेरा है दीवाना दिखलादे छवि मंजुल मेहर
हम ने तुमको

60

मैने तो हे राम राम रट लगाई
ना जाने प्रियतम क्यों आहत ना पाई
थक गया हार गया क्यों मैं निराश बना
मेरे लिए भगवान अंधेरा प्रकाश बना
खोजता हूं शांति तो घबराहट आई

मैने तो हे राम

सपने मधुर कितने मैने संजोए
लगता मरुस्थल में फूल मैंने भोये
अपनो की बोली में कड़वाहट आई

मैने तो हे राम

प्यार का पारावार आज खाली खाली है
मन की हर गई सब खुशहाली है
पोर पोर में अकुलाहट समाई

मैने तो हे राम

सोचा था झूमेगा खुशियों में अंगना
प्रेम और सेवा के बाजेगे कंगना
चहूं और स्वार्थ की गिरावट दिखाई

मैने तो हे राम

चारो और दौड़ रहा मन बन बाजरा
सुधि लेओ राम मेहर करो प्यारे सांवरा
बहुत हुई दो छटपटाहट छुड़ाई

मैने तो हे राम राम रट लगाई

70

मन मंदिर में हे राम आया करो
झांकी अद्भुत निराली दिखाया करो
अनेकों ही रूपों में आते हो माना
खाया है धोखा नहीं पहचाना
नही बुद्धि को भ्रम में भ्रममाया करो — मन मंदिर में

मन है चंचल बड़ा नही माने कहा
इसके कारण ना जाने क्या सहा
सुखी बगिया में फूल खिलाया करो — मन मंदिर में

तरसते है नयना कहा मेरे प्रियतम
कहा मेरा बंधु सखा मेरा हमदम
अपनो से यो ना छुपाया करो — मन मंदिर में

कण कण में तेरा जलवा है रोशन
सकल सृष्टि का तुम करते हो पोषण
याचक ना खाली लौटाया करो — मन मंदिर में

दीवाना तेरे नाम का हूं मैं भगवन
करता हु निशिदीन भजन पूजा अर्चन
घनश्याम को ना रुलाया करो
मन मंदिर में हे राम आया करो

71

जो लेते नाम है शंभु का जो जपते नित है हर हर हर
उन भक्तों की विपदा संकट पल मे हर लेते शिवशंकर
बड़े वो भोले भाले है
निज भक्तों के रखवाले है
गले मे सर्पों की माला
कि उनके ठाठ निराले है
जो शिव शिव करके याद करे उन पर भोले जाते है ढर

उन भक्तों की,,,

महिमा उनकी है अति भारी
त्रिलोकी जाती बलिहारी
मस्तक पर चंद्रबिराज रहे
अध मारे मारे फिरते है पुण्यों की नगरी जगर मगर

उन भक्तों की,,,

कर में त्रिशूल शिव धारे है
मस्तक अरिदल का फारे है
डमरू की डम डम धुनि सुनकर
भयभीत असुरगण सारे है
वो पहने रहते बाघम्बर यश उनका घर-घर मुखर मुखर

उन भक्तो की ,,,

चढाओ बेल धतूरा आक
दूध गंगा जल भी हो पाक
भंग का रंग चमत्कारी
प्रेम से मंदिर मे लो झांक
खिलेगी मन की फुलवारी रहे नही यमदूतो का डर

उन भक्तो की,,,

शरण उनकी लेलो प्यारे
खुलेंगे मोक्ष धाम द्वारे
चरण मे शीश झुकादो रे
परम पद को तुम पालो रे
मिलेंगे निश्चय ही घनश्याम उमङ सुख बरसेगे झर झर
अपने भक्तों के दुख दर्द सभी हर लेते है शंकर

72

संतों की महिमा अपार ना पार कोई पाया है
वाणी मे अमृत की धार कोई कोई नहाया है
एक घडी या आध घडी भी
संत समागम करे कभी भी
पापों का उतरे भार राम धन पाया है — संतों की महिमा,,,

उनका जग में ऐसा नाता
जैसे जल में कमल रह पाता
लूटाते हैं सब पर प्यार हरि गुण गाया है — संतों की महिमा,,,

सुख-दुख उनको कभी ना व्यापे
काल बली भी उनसे कांपे
पल में उतारें पार अद्भुत माया है — संतों की महिमा ,,,

संत चरण रज माथ चढालें
कोटि तीरथ का फल पाले
तर जावे सिंधु अपार परम पद पाया है — संतों की महिमा ,,,

उन चरणों में शीश झुकाले
चारों धाम का सुयश कमाले
देवन करें जयकार दास यश गाया है
संतों की महिमा,,,

73

डमरू बजाऊं बाबा शंख बजाऊं
झांझर बजा के बाबा तुमको रिझाऊं
द्वारे तेरे आया मैं चल करके
मन में अमित संबल भर करके नयनों में खुशियों के आंसू छलके
श्रद्धा सुमन बाबू तुम पे चढ़ाऊं

झांझर बजा के ,,,

मैं तो अनाड़ी बाबा निरा अनजान हूं
झूठ छल जानूं नहीं एक इंसान हूं
चार घड़ी का बन आया मेहमान हूं
दरबार तेरे खड़ा नाचूं और गाऊं

झांझर बजा के , ,,

तम से घिरा हूं बाबा ज्योति दिखा दे
प्यासे को दर्शन का अमृत पिला दे
आनंद गंगा में मुझको नहलादे
चरणों में लोटूं रज मस्तक लगाऊं

झांझर बजा के,,,

जो भी आया तेरे द्वारे कभी गया नहीं खाली
कामनायें पूर्ण हुई कृपा कोर पाली
बंद दरवाजे खुले लग गई ताली
महिमा महान सुन मैं हर्षाऊं

झांझर बजा के,,,

धाम तेरा तीरथ है गंगा है मंदिर
सब भांति सुंदर मनोहर है सूखकर है
यश तेरो छायो है गांव गांव घर-घर
जय जय हो बाबा तेरी बलिहार जाऊं झांझर बजा के,,74

रामकृष्ण हरि गोविंदा विट्ठल विट्ठल पांडूरंगा
करुणा सागर दया निधान
खड़े ईट पर चतुर सुजान
सबको करें अभय का दान
मुद्रा उनकी दिव्य महान राम कृष्ण हरि हरि गोविंद,,,

उनका हमें बड़ा विश्वास
सकल चराचर की है आश
बैठा उनके चरणन पास
नहीं और कोई अभिलाष राम कृष्ण हरि हरि गोविंद राम,,

राम नाम जप बहुत सरल
होते कठिन काम सब हल
चिंता मत करो क्या कल
भजता चल विट्ठल विट्ठल रामकृष्ण हरि गोविंदा ,,

छुड़ा दिया सब मेरा जाल
ऐसे प्रभु है दीनदयाल
हरि भजन का बड़ा कमाल
तुकाराम गा हुआ निहाल रामकृष्ण हरि गोविंदा

गाओ हरिपुर जाओ तर
प्यारे प्रभु दुख लेते हर
नहीं किसी का होवे डर
परम धाम पाओ सुंदर रामकृष्ण हरि गोविंदा,,

बड़ा चमत्कारी है नाम
विट्ठल राम नाम अभिराम
भजलो उनको नित अविराम
मस्ती में गाता घनश्याम

रामकृष्ण हरि गोविंदा

विट्ठल विट्ठल पांडूरंगा
75

राम राम राम राम राम कहो रे
आनंद गंगा की धार बहो रे
सोचलो विचारलो करलो रे चिंतन
मन रत्नाकर का करलो रे मंथन
जल में कमलवत वैसा रहो रे
आनंद गंगा की धार बहो रे,,,

दिन रैन पूजन भजन ध्यान अर्चन
मन में हो तड़पन प्रभु नाम सुमिरन
राम नाम चरणों की रज गहो रे
आनंद गंगा की धार बहो रे,,

मन मंदिर में लगा लो सिंहासन
आएंगे राम श्याम करलो आवाहन
हर्ष उल्लास दिन रैन लहोरे आनंद गंगा की धार बहो रे,,

निश्चय मिटेंगे रोग शोक ताप संताप
राम राम हरे कृष्णा करलो अखंड जाप
रोम रोम राम राम कहे रे चहो रे
आनंद गंगा की धार बहो रे,,

जाना हो भव पार पाना हो मुक्ति
घनश्याम राम बिन मिलती ना भक्ति
काम क्रोध मद लोभ मोह दहो रे आनंद गंगा की धार बहो रे,,

पर तिरिया का अपमान कर कहो किसने सुख पाया है
रावण जैसा पंडित ज्ञानी ध्यानी महा विद्वान
काल भी था जिसके वश में जनता सकल जहान
पाया था वह ओढरदानी से सोने की लंका का दान
मत गई मारी सीता नारी रावण लेकर आया हर
कुटुंब खपाया खाक बनाया कंचन जैसा अपना घर
जैसी करनी वैसी भरनी सत्य सनातन सदा अमर
मर मिटना अपनी आन पर झूठी माया काया है
पर तिरिया का अपमान...
सभा बीच खींच रहा दुष्ट दुशासन चीर
कोई देख पाया नहीं द्रोपदी के मन की पीर
बेबस लाचार बने बैठे रहे धीर वीर
कभी नहीं खाली जाती नारी अबला की है हाय
काहू को ना छोड़ा काल गया सभी को खाय
वंश में रहा ना कोई पानी तक पाया नाय
मत बोल बड़े अभिमान भर, ऋषि संत मुनि गाया है
पर तिराया का अपमान...
छोटे भाई की पत्नी को बाली ने लिया घर में डाल
कामी पापी अभिमानी का सदा बुरा होता है हाल
बुद्धि होती शीश पर छा जाता कष्टों का जाल
चंद्रमा को दाग लगा भोग लिया पर नार
युग कई बीत गए पाया नहीं निस्तार
करो भलाई सेवा भाई बड़े-बड़े ग्रंथों का सार
पर नारी का सन्मान कर यदि अच्छे सच्चे का जाया है
पर तिरिया का अपमान...

लक्ष्मी नारी दुर्गा नारी देवी नारी माता रे
बहना नारी पुत्री नारी कितना पावन नाता रे
सकल सृष्टि की जननी नारी सर्वेसुखों की दातारे
काली मैया मात भवानी तेरा सर पर हाथ रहे
सुख में दुःख में है जगदंबे तेरा हरदम साथ रहे
कृपा कोर की करूं याचना श्री चरणों में माथ रहे
घनश्याम तेरा गुणगान कर अनमोल रतन पाया है

पर तिरिया का अपमान कर...

77

सबके दाता राम काहे को फिकर करे
सबके संवारे काम काहे को फिकर करे
करणी करके क्यों पछतावे
भाग लिखो उतना ही पावे
नहीं विधाता बाम काहे को फिकर करे

सबके संवारे काम...

क्या होगा रोने धोने से
क्या होगा धीरज खोने से
नहीं लेते प्रभु विश्राम काहे को फिकर करे

सब के संवेरे काम...

सुख–दुख अपने कर्मों के फल
सोच समझ ले प्रभु का संबल भजले प्रातः श्याम काहे को फिकर करें

सब के संवारे काम...

कर्म करो सभी भगवद् अर्पण
नीयरे आएं आनंद के क्षण
पावे रे आराम काहे को फिकर करे

सबके संवारे काम...

चींटी को कण हाथी को मण
सबको देता है वह प्रति क्षण
है करुणा के धाम काहे को फिकर करें

सबके संवारे काम...

बहरे सुनते गूंगे बोले
पल भर में अंतर पट खोले
ध्याले आठों याम काहे को फिकर करे सबके दाता राम...78

राम बिन कौन नाव तीर लगावे
कष्टों में बोल कौन धीर बंधावे
राम का बोलबाला राम का है राज
राम नाम दुनिया का बादशाह बेताज
राम यश तुलसी कबीर गावे
कष्टों में बोल कौन धीर बंधावे

किसके इशारे पे नाच रहे लोग
कोई भोगे पुण्य भोग कोई पाप रोग
कर्मों की गति कर्मवीर बतावे कष्टो में बोल कौन धीर बंधावे

जितने भी आपस के रिश्ते बने
झूठे हैं मतलब की कीचड़ सने
कौन मेरे हृदय की पीर मिटावे कष्टों मे बोल कौन धीर बंधावे

कभी विषपान करें कभी अभयदान
कभी रण प्रांगण में गीता का ज्ञान
वसन रूप धार कभी चीर बढ़ावे
कष्टो में बोल कौन धीर बंधावे

सबका है दाता वो करुणा निधान
सकल चराचर का मालिक महान
घनश्याम काहे को नीर बहावे
कष्टों मे बोल कौन धीर बंधावे

न तन पाया तूने प्राणी अति उत्तम और शान का
जैसी करनी वैसी भरनी अटल नियम भगवान का
किसने भेजा किस कारण से क्या तुमने क्या कभी विचार किया
कितना ममत्व और प्रेम भरा प्यारा प्यारा संसार दिया
बुद्धि ज्ञान विवेक दिया फूलों सा हंसता दिया हिया
निर्झर सा कल कल कंठ दिया बदले में क्या कुछ कभी लिया
कुछ सोच समझकर ध्यान मनन चिंतन उन प्रभु महान का
जैसी करनी वैसी भरनी...
कुछ ऐसा रंग चढ़ा मन पर सब अहसानो को भूल गया
माया के मद में बहक गया और अहंकार में फूल गया
नहीं कोई है बढ़कर मुझसे गर्व हिंडोले झूल गया
नहीं रही दिवाली कभी सदा नहीं समय सदा अनुकूल गया
जीओ और जीने दो सबको है सत्य धर्म इंसान का
जैसी करनी वैसी भरनी...
पल में तोला पल में मासा है धूप कभी छाया है
सबको ठगती है बहरूपिणी छद्म वेषिणी माया है
रंग अनेको दिखलाती है स्वयं तुम्हारी काया है
करो मिताई अजर अमर से बिरला नर कोई पाया है
कभी मिलेंगे सूखे टुकड़े कभी भोग पकवान का
जैसी करनी वैसी भरनी...
कितना सुंदर संयोग मिला मत चूक करो नित सदा भला
सत्कर्मों की शुभबेला में नूतन जीवन का दीप जला
मीठे-मीठे दो शब्दों से देखा पत्थर दिल गया गला
वो शक्ति प्रेम में है प्यारे विष में से अमृत बह निकला
व्यवहार में इतने बानो सरल लो जीत हृदय अनजान का

जैसी करनी वैसी भरनी...

बरसों का जतन करें भैया है नहीं भरोसा क्षण पलका
करना सो करले आज अभी नहीं सोच विचार करो कल का
राम भजन में लगालगन कर ध्यान सदा उनके बल का
जिनके पदचापों से मुखरित चप्पा चप्पा जगती तल का
घनश्याम भजो नित राम राम खुल जावे पथ कल्याण का

जैसी करनी वैसी भरनी...

80

मनवा मेरा राम नाम गाने लगा
नशा बेखुदी का साथ छाने लगा
फिकर गम के बादल हुए सब हवा
मजा एक विलक्षण सा आने लगा
मोह ममता के महलों में आई तड़क
मद मत्सर मदन हौल खाने लगा
कभी लगती थी दुनिया सुखों से भरी
रात रंगीनियों से सजाने लगा
कैसे बचपन गया कैसे यौवन गया
सोच कर मन अति अकुलाने लगा
किसने भेजा क्यों भेजा कहां से आया
अचेतन में कोई जगाने लगा
शुष्क नीरस बेजान अब तक रहा
प्रेम की धुन कोई गुनगुनाने लगा
बाद मुहत मिली मुंहकी मांगी हुई
कोई अदृश्य तन को जगाने लगा
क्या कहूं क्या हुआ मैं सपन सेजगा
कोई प्यासे को पानी पिलाने लगा
आंधरे को नयन सहज ही मिल गए
उजड़ी दुनिया को कोई बसाने लगा
जिंदगी जो जमाने से पतझर सी थी
खुशियों का पौधा लहराने लगा
आज किस्मत खुली भाग मेरे जगे
कोई जख्मों के महरम लगाने लगा
मुझको मंजिल मिली राम मेरा मिला
दिल में घनश्याम मुरली बजाने लगा 81

मैं किधर जाऊं राम बोल तेरे बिना
मेरा कहां है मुकाम बोल तेरे बिना
कुछ ना लागे भला जाता मन है जला
अब कहां विश्राम बोल तेरे बिना
सूनी डगर जाता बढ़ भी बेखबर
कहां होगा विराम बोल तेरे बिना
टूटे आशा के तार कैसे नैया हो पार
होगा क्या अंजाम बोल तेरे बिना
क्यों परेशान हूं इतना अनजान हूं
किसका यह इंतकाम बोल तेरे बिना
मन क्यों बेचैन है लगता दिन रैन है
क्यों हुआ बदनाम बोल तेरे बिना
ठोकर खाई दर दर आंखों आई भर भर
कहां पाऊं आराम बोल तेरे बिना
आया तेरी शरण पकड़े तेरे चरण
करूं किसको प्रणाम बोल तेरे बिना
लगती मंजिल है दूर हुआ थक करके चूर
क्या करें घनश्याम बोल तेरे बिना

82

आये हैं मां शरण तिहारी
रखना लाज सदा भगतारी
हम हैं बालक तू है माता
जन्म–जन्म का रिश्ता नाता
किरपा पूत कपूत पे थारी आये हैं मां शरण तिहारी...

तुम हो सारे जग की ज्योति
लूटा रही नित हीरे मोती
जन जन की ओर की फुलवारी आये हैं मां शरण तिहारी...

जल बिन मीन पंख बिन पांखी
तुम बिन महा प्रलय प्रभु साखी
तेरे भय भागे अंधियारी आये हैं मां शरण तिहारी...

तुमसे ही रवि शशि प्रकाशे
विपदा रोग शोक सब नाशे
नीरस जीवन को महकारी आये हैं मां शरण तिहारी...

अन्नपूर्णा लक्ष्मी हे मां
असुर संहारक हे दुर्गे मां
कर त्रिशूल तेरे सिंह सवारी आये है मां शरण तिहारी...

करो दया घनश्याम पुकारे
नर नारी सब आरती उतारे
हारो विघ्न भय संकट भारी आये हैं मां शरण तिहारी...83

राम भजरे राम भजरे
दुनिया के झगड़े सब तजरे
नर तन पाया भाई हरि के भजन को
भूल गयो कांई सृष्टि पालक सजन को
क्यों तेरे जीवन पर पड़ी रजरे　　　　राम भजरे...

बड़े-बड़े महल और बड़े-बड़े ठाठ
नौकर तेरे आगे पीछे चालें
काल लेवे छीन सज धज रे　　　　राम भजरे...

मौज भरे मस्ती भरे दिन गये बीत
वायु भी बहने लगी विपरीत
मोह ममता में फस्यो मूढ लज रे　　　　राम भजरे...

सब तेरे भाई है हिल मिल चाल
प्रेम का पिला दे रस हो जा निहाल
अच्छे-अच्छे भावों से ले सारे　　　　राम भजरे...

तेरे सभी कर्मों का राखें हिसाब
क्या-क्या अच्छे कर्म किए क्या-क्या खराब
राम से बड़ो ना कोई और जजरे　　　　राम भजरे...

जब चारों ओर से तू होगा निराशा
याद कर राम को मिलेगा प्रकाश
घनश्याम कर जोर करे अरज　　　　राम भजरे... 84

राम राम भजले रे होजा मगन
होजा मगन भाई हो जा मगन
घटघट के वो अंतर्यामी
सकल चराचर के है स्वामी
देव ऋषिमुनि जिन्हें करते नमन
राम राम भजले रे होजा मगन...

रवि शशि तारों में उनका प्रकाश
सृष्टि के कण-कण में उनका निवास
डोलते इशारे पर धरती गगन
राम राम भजले रे हो जा मगन

चींटी कोकण हाथी को मण
सबकी खबर राखे क्षण क्षण
ऐसी प्रभु प्रियतम के गाओ भजन
राम राम भजले रे होजा मगन

अक्षय आनंद के भंडारी
भक्तजनों की है हितकारी
चरणों में उनकी लगाले लगन
राम राम भज ले रे होजा मगन

ध्रुव तारे प्रह्लाद उबारे
नरसी के सब कारज सारे
ध्यावो दिन रैन होवे तेरा तरन
राम नाम भज ले रे होजा मगन

एक चित हो करके ध्यान करले
हृदय में उनसे पहचान करले
मिटे तन की तपन और मन की जलन
राम राम भज ले रे होजा मगन 85

कब आओगे प्रियतम राम मेरी नगरिया
कब आओगे मोहन श्याम मेरी डगरिया
जन्म जन्म की प्यारी अंखियां
कल का परत पल दिन रतिया
तकते तकते बाट, बनी है पाथर नैन में पुतरिया
हाल बेहाल भयो या तन को
हरियाली बिन बन उपवन को
दुःख भंजक हे सुख के दाता दर्शन दो मनहरिया
दखवा पीर कहूं मैं कांसू
झर झर झरते नयने आंसू
याद में तेरी भयो बावरो, सीता पति रघुवरिया
शबरी जो जो आशा किन्ही मनचाही गति उसको दीन्ही
खाए झूठे बेर भगत के कर धनुर तरकस धरिया
आठ पहर चौसठ घड़ियां बस
एक लगन प्रभु मन में रही चस
घनश्याम को पूरो आस
दशरथ अजिर बिहरिया
कब आओगे प्रियतम राम मेरी नगरिया

86

उठ चेत मुसाफिर जाग गाड़ी तेरी छूट रही
पायो मानुस तन बड़ भाग जीवन एक डोरी टूटी रही
कभी किया क्या लिखा जोखा
कब तक देगा निज को धोखा
कर्म किया नहीं एक भी चोखा
लग रही भागम भाग हिया की फूट रही

उठ चेत मुसाफिर...

भूल गया क्या कौल करार
नाम प्रभु का दिया बिसार
व्यर्थ ही बन आया भूभार
नहीं सच से रहा अनुराग पल्ले झूठी रही

उठ चेत मुसाफिर...

मोह माया में सब कुछ भूला
मद मत्सर में इतना फूला
स्वार्थ हिंडोले बहुत ही झूला
तेरी चादर में लाग्यो दाग किस्मत रूठ रही

उठ चेत मुसाफिर....

तन धन परिजन साथ ना देगा
अंत समय खाली हाथ रहेगा
नयनो से बस नीर बहेगा
तन की पड़ गई ठंडी आग तृष्णा अटूट रही

उठ चेत मुसाफिर...

घड़ी दो घड़ी का ही तू मेहमान
प्रभु के भजन में लगा मन प्राण
घनश्याम की सुन विनय धर ध्यान
सब बिखर गए रंग राग बैरन लूट रही

उठ चेत मुसाफिर...87

रक्षा को मेरे राम धनुर्धर लक्ष्मण जैसा बलकारी
पल में बेड़ा पार करे वो बड़ा दयालु हितकारी
कितना विशाल कितना महान है खड़ा गगन किसके बल पर
किसके कंधों पर टिकी धरा पी रहा भार विष बन शंकर
किसकी इंगित पर बहे पवन विस्मय में विमूढ दुनिया सारी
पल में बेड़ा पार करें...
निर्झर कल कल के शब्दों में किसका करते गुण गान साद
किसके वंदन को झुकते तरुवर फल फूलों से खड़ा लदा
किसके चरणों में चढ़ने को आतुर हो पड़ती फुलवारी
पल में बेड़ा पार करें...
संत ऋषि मुनि सनकादिक सब किसका संतत ध्यान धरे
किसके चिंतन मे डूब डूब किसकी उर मे पहचान करे
जड़ चेतन किसकी पूजा मे है लीन अति विस्मयकारी
पल मे बेड़ा पार करे...
ब्रह्मा विष्णु और महादेव जो सकल सृष्टि के परमेश्वर
त्रिलोकी को गुंजा रहे ले राम नाम की मीठे स्वर
रघुकुल भूषण है राम अमर जन जन के वह मंगलकारी
पल में बेड़ा पार करें...
जीवन का हर मोड़ बड़ा है कंटकमय मुश्किल होगा
राम नाम का संबल ले हर कदम तेरा मंजिल होगा
जिनके सुमिरन से फंद कटे उन चरणों की मै बलिहारी
पल में बेड़ा पार करें...

तुम्हारे बिना बोलो हमें कौन तारे
कौन तारे प्रभु कौन है तारे
बिगड़ी हमारी बोलो कौन संवारे
कौन संवारे प्रभु कौन संवारे
पुण्य किए कुछ याद नहीं है
पापों की तादाद नहीं है
हमारे जैसे पापी के कौन सहारे
कौन सहारे प्रभु कौन सहारे

तुम्हारे बिना...

तुम हो प्रभु करुणा के सागर
पतित पावन नाम उजागर
आये हैं हम प्रभु तेरे द्वारे
तेरे द्वारे प्रभु तेरे द्वारे

तुम्हारे बिना...

अजामिल गणिका का सदन कसाई
सबकी नैया पार लगाई
हम अधमो का बोल कौन आधारे
कौन आधारे प्रभु कोन न आधारे

तुम्हारे बिना...

सूर्य चंद्र में ज्योति है किसकी
चंचल पवन में गति है किसकी
नाचे हैं सृष्टि सूर्य चंद्र तारे
चंद्र प्रभु चंद्र तारे

तुम्हारे बिना...

कभी तो दया की पलके खुलेगी
दास को प्रभु तेरी झलक मिलेगी
हो जावे पर एक तेरे इशारे
तेरे इशारे प्रभु तेरे इशारे

तुम्हारे बिना...

89

राम राम बोल भाई राम राम बोल रे
राम राम राम राम राम बोल रे
यूंही बीत जायेगी तेरी रे उमरिया
रीत जायेगी रस भरी रे मटकिया
काहे को भोगों में करता किलोल रे

राम राम

माया लुभावनी है बड़ी मन भावन है
काली यह नागिन है विष भरी डायन है
माया के बंधन को राम भज खोल रे

राम राम

कोई नहीं है तेरा संगी रे साथी
काहे को पची पची मरे दिन राती
चारो और है पोलम पोल रे

राम राम

जो आया है उसको जाना
कोई जन भी अमर रहा ना
काहे को जीवन मरण लियो मोल रे

राम राम

चार घड़ी का साथ यहां का
करले यतन कुछ मूढ वहा का
मानुष तन तोहे मिला अनमोल रे

राम राम

कलियुग में एक नाम आधारा
जो भी भजे सो उतरे पारा
घनश्याम संग पियो राम रस धोल रे राम राम 90

भजो रे मन राम नाम सुख कारी
पहाड़ सरीखे संकट टर गए जिसने भी नाम उचारी
भजो रे मन राम

जा मुख भीतर राम नही है जो मुख विष की बेलड़ी
मीठे बोल ना बोल सके कड़वे तो बोलें जैसे खेलडी
जिस रसना में वास सुधा को क्यों तू विष कर डारी
भजो रे मन राम

जिन कानो ने सुना नहीं रे राम कथा के बोल
कभी ना जिन के कर्णपूटो ने चखा स्वाद अनमोल
बहरे बनते तो था अच्छा काहे को मैल बढ़ारी
भजो रे मन राम

जिस हृदय में राम ज्योति का नही छाया परकाश
धिक धिक ऐसे जीवन को रे व्रथा वो लेवे सांस
नयनों में छवि बसे राम की त्रिभुवन मोहन वारी
भजो रे मन राम

हाथ दिए उस परम पिता ने करो सभी की सेवा
जैसों बने दान कर दिजे पावे नर तू मेवा
कर्म करो निष्काम रे मनसा गीता तत्व बिचारी
भजो रे मन राम

जब तक तेरा जीवन बंधु राम से करले प्यार
बदले में तब निश्चय पावे आनंद का उपहार
घनश्याम कहे जीवन के स्वांशा करदे राम पे वारी
भजो रे मन राम

नर तन पायो अनमोल रे भज राम नाम सुखदाई
भज राम नाम सुखदायी
नर योनि सर्वश्रेष्ठ ऐसी क्या बात है
वेद शास्त्र ऋषि मुनि सभी बतात है
महिमा को गाय गाय कोई ना अज्ञात है
स्वर्गलोक भोग लोक पुण्य जहा होते क्षीण
सुख सब भोगे जहा मौज में रहे तलीन
दुबे रहे रात दिन राग रंग पा नवीन
फिर पड़े अजानी खोल रे रहे इधर उधर भटकाई

नर तन पायो

योनि तो चौरशी लाख सब में आना जाना पड़े
कभी कीड़ी कभी हाथी बने शेर बवर बड़े
कभी प्रेत कभी भूत कभी सर्प मणि जड़े
कभी जीव जंतु बने कभी बने नभचारी चील
राजहंश कौआ कोयल कभी बने अबाबील
कभी टनो वजन वाली बनना पड़े ह्वेल सील
सब बात बतावे तोल रे गुणी संत गुरु समझाई

नर तन पायो

मृत्यु लोक महालोक जहा पुण्य लेओ जोड़
पाने को नर तन सुर गण करे होड़
सनक सनन्दन नारद आते यहां दौड़ दौड़
राम कृष्ण की लीला भूमि आनन्द दाता पावन है
सरयूतट बंशीवट जहा मन भावन है
अमृत की दृष्टि करता लागे भला सावन है
भजे मृदंग अरु दोल रे गूंजे मंगल सहनाई

नर तन पायो

किसने किस कारण भेजा कभी क्या विचारा है
आया कहा से काहे नर तन धारा है
कष्ट और संकटों से किसने उबारा है
कब तक रहेगा सोया करले भाई मेरे चेत
बचपन जवानी गई सिर सब भयो श्वेत
मोह ममता मैं लिपटाय रहयो किस हेत
रहयो काल शीश पर डोल रे लेजाय पकड़ पल माहीं

नर तन पायो

तेरे ऊपर कितनी भारी कृपा भगवान की
दे दी तुझे मानुष देही जिदगानी शान की
करले जुगत तात महा निवार्ण की
कीर्तन अखंड राम नाम जप करता चल
प्रेम गंगाधर में सबों को नहलाता चल
गिरे को उठाले उन्हें गले से लगता चल
घनश्याम कहे ये बोल रे सुन समझ पकड़ चित लाई

नर तन पायो

92 प 93

राम दयालु करुणा सागर भक्तो के प्रतिपाला है
देख भगत की पीर तनिक सी पावत दुख विशाला है
भक्तजनो के आगे पीछे फिरते बन कर परछाई
संकट कष्ट विपद सब झेले जो उनके पथ में आई
गर्भवाश के नरक कुंड में करता कौन उजाला है

राम दयालु

आठ पहर चौषठ घड़ियों में उनको नही आराम जरा
सनेह प्रेम करुणा ममता से हृदय उनका पूर्ण भरा
भक्त ही जीवन तन मन धन सब जपते उनकी माला है

राम दयालु

सुन गुहार दुखमय पुकार करुणा निधि दौड़े नंगे पांव
संकट मुक्त किया गज को दे निज चरणों की शीतल छाव
अटल अमर पद ध्रुव को दीना ऐसे दिन दयाला है

राम दयालु

नानी बाई झर झर रोवे बाबुल साधा संग नाच रहयो
कौन भरेगो मायरियो नाराणो बैरी माच रहयो
ढेरो हीरे सोना चांदी लाए वस्त्र दुशाला है

राम दयालु

करुणामय स्वभाव प्रभु का वेद पुराण श्रुति गावे
लेले उनकी शरण बावरे पकड़ चरण भव तर जावे
घनश्याम काट दे पल में बंधन ऐसे दशरथ लाला है

राम दयालु

चंद रोज के लिए रे प्राणी तू जग में आया
धीक है तेरे जीवन को तू राम न कह पाया
देख देख कर महल मालवा मती तेरी बोराई
जम रही तेरे मन दर्पण पर मद मत्सर की काई
मोह ममता की पड़ी बेड़िया बंधन बहुत लुबाया
धीक है तेरे जीवन को
गर्बवास में जब था प्रभु की कितनी मन्नत मानी थी
प्रतिपल हर क्षण नाम रटूंगा उर में अपने ठानी थी
भूल गया सब माया ने जब अपना चक्र चलाया
धिक है तेरे जीवन को
माया ठगनी माया नाटनी नाच नचावे बहुतेरो
नारद मुनि सो ध्यानी ग्यानी बन गयो माया को चेरो
लीला जितनी सभी प्रभु की वेद शास्त्र ने गाया
धिक है तेरे जीवन को
करो भला मत सोच बुरा शुभ कर्मों का फल अच्छा है
दान करो कर से उत्तम हरी नाम जपो क्या खर्चा है कानो से सून ले राम नाम फिर देख मजा कितना आया
धिक है तेरे जीवन को
जो कभी भी है सभी राम का उनको कर दे तू अर्पण
कर्म करो निष्काम रे भैया ध्यान धरो उनका प्रतिक्षण
मन पवित्र हो जाए निर्मल बन जावे काया
धिक है तेरे जीवन को

95

काहे खोता धीरज भैया काहे उदास रे
वेद पुराण शास्त्र सब कहते राम सदा तेरे पास रे
निर्बल के बल राम है भैया निर्धन के धन धाम रे
सर्वत्र सदा करुणा की वर्षा करता वो अविराम रे
सुखद बिछौना धरती माता ओढन को आकाश रे
वेद पुराण शास्त्र सब
उनकी श्रृष्टि में तनिक नही है भेद भाव का नाम रे
सब पर बहता पवन बराबर सबको छाया धाम रे
चंद्र सुधा बरसाता सब पर दिनकर देत प्रकाश रे
वेद पुराण शास्त्र सब
सुख दुख जीवन मरण सभी कुछ अपने कर्मो के है फल
तज दे चिंता बढ़ चल आगे राम नाम का ले संबल
जगमज ज्योति जले घट भीतर ज्ञान का दीपक चास रे
वेद पुराण शास्त्र सब
स्वार्थ भरी दुनिया है सारी कोई नही तेरा अपना
महल अटारी बंधु परिजन सब मिथ्या जैसे सपना
तेरी मेरी करते करते उड़ जाएगा सांस रे
वेद पुराण शास्त्र सब
कुछ तो सोच विचार रे पगले किस कारण पाया नरतन हो जा सचेत
भज राम राम को धन्य धन्य करले जीवन
घनश्याम कहे मत देर लगा बन देख राम का दास रे
वेद पुराण शास्त्र सब

96

करले भजन मनवा करले भजन
देखो जरा राम का दास बन आनंद उल्लास की ही बहार
शीतल चंदनिया बहेगी बयार
खिल खिल जाएगा मन मधुवन
देखो जरा राम का दास बन

निर्झर से फूटेंगे कल कल के गान
उमंगों से भर भर जाए उघान
कण कण से छल के अमृत के कण
देखो जरा राम का दास बन

अमावस बनेगी पूनम की रात
उदय हो गगन में सवर्णिम प्रभात
खुशबू से महक महक जाए चमन
देखो जरा राम का दास बन

चिंता अभाव नहीं पास फट के
नैया लगेगी तट बेखत के
राम चरणों में लगा ले लगन
देखो जरा राम का दास बन

कण कण में है जन जन में राम
तरकश कमान लिए तीर अभिराम
घनश्याम राम यश गाकर मगन
देखो जरा राम का दास बन

97

हे हनुमत पवन कुमार शरण हम तेरी आयेजी
शरण हम तेरी आयेजी शरण हम तेरी आयेजी
सुना है हमने जो कोई भी द्वारे तेरे आये
श्रद्धा प्रेम और भक्ति भाव से जाकर शीश नवाये
कर दिए भव से पार मेहर तेरी पूरी पायेजी
हे हनुमत पवन कुमार...
संकट मोचन नाम तिहारो जग सारो यश गावे
विपद पड़े पर सहाय करो तुम दुनिया यह बतलावे
हो भक्तों के आधार कभी ना बने पराये जी
हे हनुमंत पवन कुमार...
जो कोई भी हनुमत तेरे नाम की जगत माला
भूत प्रेत नहीं पास में फटके रुतबा तेरा आला
तेरी लीला अपरंपार तेरा हम ध्यान लगाये जी
हे हनुमंत पवन कुमार...
जगह-जगह पर तेरे मंदिर भक्तों की है भीड़
तेरे नाम धूम मची है हरते सबकी पीड़
हो रही तेरी जय जयकार नयन मे तुम ही छाये जी
हे हनुमंत पवन कुमार...
धूप दीप और पुष्प नारियल लाये है सिंदूर
विनय दास की सेवा मे प्रभु करलो तुम मंजूर
भगत की पत के राखन हार सभी ने सच बतलाये जी
हे हनुमत पवन कुमार...

98

राम भज रे राम भज रे
राम राम राम राम राम भजरे
नर तन पाया तूने हरि के भजन को
भूल गयो कोई श्रृष्टि पालक सजन को
क्यों तेरे जीवन पे पड़ी रजरे
राम भजरे राम भजरे
बड़े बड़े महल और बड़े बड़े ठाठ
नौकर तेरे आगे पीछे चाले आठ आठ
काल लेवे छीन सब सज धज रे
राम भजरे राम भजरे
मौज भरे मस्ती भरे दिन गए बीत
वायु भी बहने लगी विपरीत
मोह ममता में फसंयो मूढ़ लजरे
राम भजरे राम भजरे
सब तेरे भाई है हिलमिल चाल
प्रेम का पिलादे रस होजा निहाल
अच्छे अच्छे भावो से ले सजरे
राम भजरे राम भजरे
तेरे सब कर्मो का राखे हिसाब
कैसे कैसे कर्म किए अच्छे खराब
राम से बड़ो न कोई ओर जज रे
राम भजरे राम भजरे
शूल बन जाते है कोमल फूल
संकट भी हो जाते अनुकूल
उड़ाए चलाजा राम नाम ध्वज रे

राम भजरे राम भजरे
जब चारों और से तू होवे निराश
याद कर राम को मिलेगा प्रकाश
दास दोनो हाथ जोड़ करे अरजरे
राम भजरे राम भजरे

99

उड़ाले रे भाई राम नाम की पतंग
राम राम बोलो सब मिल संग संग
राम अति कोमल है बड़े दयावान
उनके लिए छोटे बड़े सब है समान
प्रेम करुणा से भरे उनके अंग अंग उडाले रे भाई

सकल चराचर के वो भरतार
देख उनकी श्रृष्टि को आखें पसार
उनके निरा ले अनोखी है रंग उडाले रे भाई

सबको बराबर वो देता प्रकाश
सबके लिए बहता शीतल बतास
देख देख न्याय उनका दुनिया है दंग उडाले रे भाई

दुख सुख सब अपने कर्मो के भोग
राम पे लगाते क्यों तुम अभियोग
कर्म करो अच्छे करो रे सत्संग उडाले रे भाई

उनके दरबार में नही है अंधेर सुनते सभी की है फरियाद टेर
देता है ढेर सीखो लेने के दंग उड़ाले रे भाई

राम नाम अमृत है नाम काम धेनु है
प्रेम रस दिन रैन झरे ऐसी वेणु है
भजले रे राम राम भर भर उमंग उड़ाले रे भाई
100

भाई रे राम भजन करले भव सागर हो गहन अति चाहे अनायास तरले
नहीं भरोसा इस जीवन का क्यों तू कर गुरुर
आया है इस दुनिया में तो जाना पड़े जरूर
आना गाना सत्य सनातन गांठ बांध धरले

भाई रे राम...

आया अकेला जाये अकेला साथ किसी का होता क्या
जो किस्मत में लिखा हुआ है मिलता सब कुछ रोता क्या
करले चाहे लाख जतन चाहे पचि पचि मरले

भाई रे राम...

हीरा मोती सा यह जीवन कौड़ी मोल बिकावे रे
फंस कर विषय भोग में प्राणी बतला क्या कुछ पावे रे
महको ऐसे जैसे चंदन खुशबू से भरले

भाई रे राम...

चार दिनों की चांदनी रे फिर अंधियारी रात
राम नाम दीपक उर धरले कहता सांची बात
कलि काल में राम कीर्तन करके पार उतारले रे

भाई रे राम...

कौन है तेरा नहीं किसी को नहीं किसी से प्रीत
तेरी मेरी के चक्कर में जाय रे आयु बीत
करले हरिचरणों में वंदन तेरा पाप ताप हर ले

भाई रे राम...

101

जय जय हरि बोल जय जय हरि
नाव विच मझदार पल में तरी
सोच गया किसको है रहना यहां
ना जाने कल सब होंगे कहां
मीठी मीठी बोल सुधारस भरी

जय जय हरि बोल...

प्रेम की हिमालय का हृदय विशाल
जिनको भी मिल जाय होवे निहाल
प्रेम प्रभु प्रियतम की कारीगरी

जय जय हरि बोल...

संतों का सांग करो नित सत्संग
महक महक जाए रे अंग अंग
नाचेगी अंगना आनंद परी

जय जय हरि बोल...

भरोसा हो केवल हरि नाम का
सीधा सरल पथ है सुख धाम का
कहता है घनश्याम बातें खरी

जय जय हरि बोल...

102

जो लेते नाम है शंकर का जो जपते हैं नित हर हर हर
वो उनके संग सदा रहते संकट हारी भोले अध हर
उनके ठाठ निराले हैं
अलमस्ट सदा मतवाले हैं
संगी साथी है भूत प्रेत
वृश्चिक भुजंग अतिकाले हैं
अंग धारण करते शव भस्मी खेले गंगा सर पर मनहर
जो लेते नाम है शंकर का...
मस्तक पूरे चंद्र छटा निर्मल
होती तम घटा धवल मंजुल
जो पाए दर्शन ज्योति के
सचमुच किस्मत जाति है खुल
अर्धांगिनी मां जगदंबे का नित जप कर पावन सुमिरण कर
जो लेते नाम है शंकर का...
भोजन है आक धतूरा भंग
पीते हैं दूध भर भर उमंग
मत गंगाजल की बात करो
मस्ती में भरते अंग अंग
जो ध्याते हैं शंकर सुतको सब विधि रक्षा को है तत्पर
जो लेते नाम है शंकर का...
सुत गण पति विघ्नों के हर्ता मंगल कारी शुभ के दाता
त्रिलोकी जय जय गान करे
विद्यासागर जग के त्राता
चाहे अनचाहे ध्यान करो भोले जाते भक्तों को ढर
जो लेते नाम है शंकर का...

जय बोलो शिव शिव शंकर
जय त्रिपुरारी जय करुणाकर
हे स्वामी जग के महादेव
जय जय तेरी हे डमरू धर
शिव है कर्ता भर्ता हरता घनश्याम मगन यश गा गाकर
जो लेते हैं नाम शंकर का...

103

नील कंठ द्वारे बीच नाग कारे खेल रहे
मस्तक पर अर्ध चंद्रमा की खूब शान है
जटाओं से गंगधार बह करके भूतल पर
उछलती मचलती करें हर-हर का गान है
कर में त्रिशूल धरे दुष्ट निर्मूल करें
व्याधियों को हर करें नित प्रेम दान है
आक बेल पतर पर भोले बाबा रीझ जाय
भक्तों पे ढर जाए महिमा महान है
हर हर उचारे ते कष्ट हरे पल भर में
शिव शिव का नाम लेत पाप हुए क्षार-क्षार
पग शिव मंदिर की ओर चले दस डग
खुशियों से झूम उठे हृदय के तार तार
मंदिर में जाए माथा टेक शिव चरणों में
बाबा भोले धाम के खुलेंगे प्यारे द्वार द्वार
तेक हूं सी याचना से ओढर दानी ढर जाए
ऐसे महारानी की जय जय बोलो बार-बार

104

छक छक छक छक गाड़ी चाले राम नाम की
टिकट कटाले उनके दिव्य धाम की
रोग शोक दुःख का न जहां लवलेश
मोह मद का ना जहां कोई होता प्रवेश
प्रेम की मुरलिया बाजे जहां श्याम की   छक छक छक...

मन प्रभु चरणों मे रहता है लीन
आनंद नित प्रति मिलता नवीन
भक्ति की गंगा बहे निष्काम की   छक छक छक...

बिन रवि शशि जहां रहता प्रकाश
चमके बिजुरिया बिन बादल आकाश
भूख का ना नाम जहां माया राम की   छक छक छक...

पिक शुक बक जहां करते हैं ध्यान
मधुर मधुर वाणी में गाते हैं गान
लीला कथे राम श्याम अभिराम की   छक छक छक...

नारदजी नाच रहे ब्रह्माजी झूमते
शंकरजी डमरू ले मोद भर घूमते
आरती उतारे सब घनश्याम की   छक छक छक...

समय बहुत थोड़ा है होजा तैयार
घनश्याम बार-बार करता पुकार
फिर ना मिले गाड़ी ये बिन दाम की   छक छक छक...

105

राम नाम गंगा में डुबकी लगा
सोई हुई किस्मत को लेतू जगा
मैल सब अंतर का जाएगा बह
महल कुविचारों के जायेगे ढह
गैल सत्संगत के तीरथ की गह
नहीं तन की खबर कब देवे दगा 　　　　राम नाम गंगा...

अनमोल हीरे हैं बिखरे हुए
भरले ना झोली क्यों ठहरे हुए
सुनता नही क्या बहरे हुए
याद रख कोई ना तेरा सगा 　　　　राम नाम गंगा...

छाया तेरी चहुंओर माया का जाल
झूठी मृग तृष्णा का उठना बवाल
काम क्रोध मद लोभ खाते उबाल
नाम ले ले राम का दे सबको भगा 　　　　राम नाम गंगा...

कौन तेरी माता है कौन है पिता
कौन तेरा लड़का कौन है सुता
कौन तेरी पत्नी सब कुछ बता
सब कुछ है झूठ जाता क्यों तू ठगा 　　　　राम नाम गंगा...

नाम एक राम का है अजर अमर
चख कर जरा देखले तू असर
अलौकिक प्रकाश से ले अपने को भर
श्याम राम नाम एक है तू कौन सा भी गा 　　　　राम नाम गंगा...

चालो चाले भाई राम नाम नगरी
राम नाम नगरी हरि नाम नगरी
कब तक रहोगे सोये बोलो बेफिकर
काल के नगाड़े बाजे है कुछ खबर
कितना कमाया खोया देख जरा घर
नहीं चाले सदा तेरी मन मगरी चालो चालो भाई...

भूल गया किसलिए पाया नर तन
आज तलक किया नहीं राम का भजन
विषय भोग भोगने में लगा रहा मन
चेत कर बीत रही आयु सगरी चालो चाले भाई...

नहीं कोई धर्म परोपकार के समान
भूखे को अन्नदान अपढ को दे ज्ञान
दुखियों की सेवा में मिले भगवान
बांट दे सभी को भर प्रेम गगरी चालो चले भाई...

कितना सुहावना समय है देख यार
डार-डार पुष्प खिले छाई बहार
शीतल सुवासमयी बहती बयार सज
सज रही दुल्हन सी डग डगरी चालो चाले भाई...

मस्त हो के राम राम गाता चलाजा
भक्ति की गंगा बहाता चलाजा
अंधेरे में रोशनी फैलाता चलाजा
नाच उठे धरती का पग पगरी चालो चाले भाई...

107

राम नाम मंदिर के कर दर्शन
चरणों में प्रेम के चढ़ा दे सुमन
कितनी है पावन महान वो जगह
पाप–ताप नहीं जहां पाते हैं रह
भक्तों की भीड़ करे नित वंदन राम नाम मंदिर...

पड़ता है मन पर अनुपम प्रभाव
उपजते हैं नित नित सुंदर भाव
हर्ष उल्लास करें भव्य नर्तन राम नाम मंदिर...

अखंड शांति का वहां पर निवास
सुख वहां रहता है बन करके दास
महक महक जाए तेरा अंतरमन राम नाम मंदिर...

शिव गण उनकी याद उतरे नित आरती
देव ललानाएं अपना तन मन बारती
सुध बुध गंवाय नाचे हो के मगन राम नाम मंदिर...

शंकरजी ब्रह्माजी नारदजी डोल रहे
रोम रोम जय जय राम जी श्री राम बोल रहे
थिरक रहे गूंज रहे धरती गगन राम नाम मंदिर...

घंटे घड़ियाल बजे शंख का हो नाद
प्रार्थना में लीन हो जा राम की कर याद
हृदय में होवे परम ज्योति का मिलन राम नाम मंदिर...

108

फेर ले रे भाई राम नाम की माला
देख फिर जीवन का रंग निराला
गर्भवास में दुख भोगे अपार
बिनती करी थी प्रभु जी से बार-बार
थाने कभी ना भूलूं हे करतार
स्वांस स्वांस में मैं रटूं नंदलाला फिर ले रे भाई...

जब तक शरीर स्वस्थ और बलवान
राम का भजन करले तू ध्यान
राम नाम अमृत का नित कर पान
बढ़ जंग खाया खुल जाए ताला फेर ले रे भाई...

बुढ़ापे में बात कफ दम का हो जोर
कसके रे अंग अंग दूखे पोर पोर
नाम लेने में बने मन महा चोर
आंखों में तन जाएगा रे जाला फेर ले रे भाई...

करना सो आज कर कल करना छोड़
कल का तो आज तक आया नहीं ओड़
समय नहीं रुकता है जाता है दौड़
लाख करो समय नहीं देत टाला फेर ले रे भाई...

शुद्ध हृदय में बसे रे भगवान
राम को भजे से मिले आनंद महान
पुलक-पुलक जाए रे तन मन प्राण
रात बीते भोर का छा जाए उजाला फेर ले रे भाई...

109

राम के भजन बिन जाएगा किधर
मिले नहीं तो ठोकर खावे दर दर
झूठी मोह ममता में फंस कर डोल
नाव बीच मझदार खावे हिचकोले
कांटों से भरी टेढ़ी–मेढ़ी रे डगर राम के भजन बिन...

कोई नहीं तेरा है सोच ले तू मन में
काहे फूला फिरे नाशवान तन धन में
कोई जावे ना संग कांई सोया बेफिकर राम के भजन बिन...

बड़ो भरो परिवार मित्रों का ढेर
मतलब के यार खड़े तेरे को घेर
झूठी शान शोकत में बीते उभर राम के भजन बिन...

मानुष तन मिला तोहे अनमोल रे
स्वांस स्वांस मे ले रट राम राम बोल रे
रोम रोम आनंद से जाएगा भर राम के भजन में बिन...

काले–काले मेघों से भरा हुआ आकाश
राम की कृपा से छाए पल में प्रकाश
कारी कारी रात होवे जगर मगर राम के भजन में बिन...

अमृत का प्याला है पीले रे भैया
पार लग जावे तेरे जीवन की नैया
झूम झूम नाच उठें प्राणों के स्वर राम के भजन में बिन...
110

राम नाम नौका से पार उतर जा
पीर तेरे तन मन की सब हरजा
कब तक रहोगे सोए उठ चेत जाग
आंख खोल देख तम सब जाये भाग
श्रम देवता के चरणों में ढरजा
पीर तेरे तन मन की सब हरजा
बीत गई रात आया स्वर्णिम प्रभात
कलरव से गूंज रहा कण-कण का गात
संकट का सागर सहज तर जा
पीर तेरे तन मन की सब हरजा
आनंद ही आनंद है खुशियों का ढेर
पीले सुधा रस मत कर देर
अलौकिक उमंगों से मन भरजा
पीर तेरे तन मन की सब हरजा
डुबकी लगाओगे जितनी भी गहरी
अंग अंग मस्ती की गंगा में बहरी नाम
नाम दुनिया में अमर करजा
नौका में बैठ गया यारों घनश्याम
संग संग आओ चले ईश्वर के धाम
असंभव कठिनतम काम सरजा
पीर तेरे तन मन की सब हरजा
111

नैया भंवर में पार लगादे
बिगड़ी हुई राम मेरी बना दे
पनघट पे बैठा हूं कब से मैं प्यासा
दुखिया जनम का कुण दे दिलासा
धीरज का भगवन अमृत पिलादे बिगड़ी हुई...

बेचैन हूं नहीं चल एक है पल
भरोसा है भारी तेरा एक संबल
सूखी है बगिया बहारों को ला दे बिगड़ी हुई...

लगता है जीवन वीरान सूना
व्यथा मन की तुझसे कहो क्या कहूं ना
मन की जलन पर महरम लगादे बिगड़ी हुई...

हाथों की शक्ति कहीं सो गई है
पैरों की मंजिल कहीं खो गई है
भूले को भगवन मारग दिखा दे बिगड़ी हुई...

घनश्याम भूखा तेरे दर्शन का
प्रतीक्षा में बैठा मिलन के क्षण का
तम से घिरा हूं ज्योति जगा दे बिगड़ी हुई...

112

राम राम भजने का लेलो मजा
ना जाने किस पल आवे कजा
किसका है चक्कर किसका है फेर
फंस्यों मोह माया में करता क्यों देर
मानुस तन पावे बेर बेर
क्यों लख चौरासी भुगते सजा
राम राम भजने का लेलो मजा
पुरबले जनम का सुंदर सुफल
गंवाता क्यों योंही करले सफल
जीवन है अमृत मत कर गरल
सुखी कौन जिसने है स्वारथ तजा
राम राम भजने का लेले मजा
क्यों मन में ईर्ष्या की अग्नि जले
मद मत्सर का क्यों विषधर पले
मीठे बोल बोलने को मन ना चले
देख तेरे करम गया सृष्टा लजा
राम राम भजने का लेलो मजा
चाहे कमाले लाख चाहे करोड़
माया के पीछे लगाता क्यों दौड़
एक दिन जाना है सर्वस्व छोड़
कफ़न होगा अर्थी पर केवल सजा
राम राम भजने का लेलो मजा
घनश्याम करता विनय मेरे भाई
सत्कर्मों की करो रे कमाई
भव रोगो की अचूक दवाई
सुखचैन की लो मुरलिया बजा
राम राम भजने का लेलो मजा

जग को नाच नाचने वाला राम में मदारी है
उतर गए वो पार जिनकी उनसे यारी है
राम लिखे पत्थर भी देखो लगे तैरने जल में
किसने भर दी शक्ति इनके जीवन के कण कण में
चरण छुअन से तर गई भाई गौतम नारी है उतर गए वो...

पाप की अजामिल ने बेहिसाब अति भारी
कर्म किए थे खोटे उसकी भाग्य रेख थी कारी
गया प्रभु के धाम नारायण नाम उचारी है उतर गए वो...

गज और ग्राह की हुई लड़ाई एक हजार बरस तक
आओ आओ श्याम टेर गज ने थी लगाई कसकर
दौड़े नंगे पांव भगत की विपद बिडारी है उतर गए वो...

नरसी भगत की हुंडी सिकारी बन कर साहूकार
नानी बाई रो भरयो मायरो ले रुक्मण न लार
भक्तन के संग फिरे भूलकर सुध बुध सारी है उतर गए वो...

घनश्याम करे कर जोर के बिनती सुनो मित्र दे कान
राम राम को भजो निरंतर भला करे भगवान
एक दिन आये तर जाने की तेरी बारी है उठ गए वो...

जिनके राम नाम है साथी उनका बेड़ा पार है
उनकी नैया पार है
जिनके सांवरिया है साथी उनके बेड़ा पार है
उनकी नैया पार है
गज और ग्राह का युद्ध भयंकर मचा था जल के भीतर
आओ सांवरिया टेर लगाई थी गज ने हो कातर
प्रभु ने दिन देखा ना राती दौड़े नंगे पांव है
दौड़े नंगे पांव है–

जिनके राम नाम है,,,,

हिरणकुश बोला ब प्रह्लाद से बात कहां तेरा राम
सारी दुनिया का मैं मालिक कहां तेरा भगवान
धार नरसिंह रूप घाती असुर को दीन भार है
असुर को दीना भार है

जिनके राम नाम है ,,,

राठोड़ारी आई मीरा गिरिधर रंग मदमाती
राणो भेजो विष रो प्यालो पी गई हरि गुण गाती
भगत की विपद ना देखी जाती कर दई अमृत धार है

जिनकी राम नाम है ,,,

पांच बरस के ध्रुव बालक ने करी तपस्या भारी
इंद्रासन हिल गया प्रभु ने की उसकी रखवारी
देदी अटल अमर पद थाती भगत से कितना प्यार है
भगत से कितना प्यार है

जिनके राम नाम है,,,

सांवरियो रे भाव रो भूखों उनसे मुख ना मोड़
विपदा हारी सब सुखकारी से ले नाता जोड़
दास तो कहता ठकुर सुहाती भगत की जय जय कार है
भगत की जय जयकार है

जिनकी राम नाम है,,,

115

राम नाम की करले कमाई
राम दुहाई तोहे राम दुहाई
झूठे सुख को सच्चा माना
नाम हरि का विष सम जाना
उस घर की कभी सुधि ना आई

राम दुहाई ,,,,

भोगों में जी भर खुल खेला
रहा सदा बाबू छैला
मन दर्पण जम रही काई

राम दुहाई,,,

जीवन तेरा एक धरोहर
जब चाहे तब लेना ईश्वर
देनी होगी पाई पाई

राम दुहाई ,,,

आंख उठाकर देख जरा गोर से
तम कहां पूछना वृथा है भोर से
पाप-ताप नहीं जहां रघुराई

राम दुहाई ,,,,

कह घनश्याम राम अनुरागी
राम भजे जो अति बड भागी
तीन लोक की संपद पाई

राम दुहाई,,,

हे राम तुम्हारे चरणों में जन–जन ने शीश नवाया है
क्या अजब अनोखे खेल तेरे क्या अद्भुत तेरी माया है
जब अनाचार और जुल्मों का हो जाता है बाजार गरम
मनमानी सीना जोरी से घुट जाता मानवता दम
पापों की नगरी बस जाती उठ जाता भूसे धरम–करम
पशुता का होता नग्न नाच हिंसा का जन्म घट कदम कदम
बनकर आ जाते महाकाल दुष्टों का किया सफाया है
हे राम तुम्हारे,,,
दीपक जल उठते डगर डगर घरघर में छा जाता मंगल
करुणा का स्रोत फूट पड़ता हरियाली से भरत जंगल
आनंद की गंगा में जाती बन जाता कण–कण पुण्य स्थल
मिट जाता मन से द्वेष भाव पुलकित हो जाता अंत स्थल
कभी मन रोता है कभी मन हंसता है क्या खूब बनाई काया है
हे राम तुम्हारे ,,,,
कभी कर देते हो महल खड़े धन दौलत के अंबार लगे
नौकर चाकर के ठाठ बड़े खुशियों से भरे बाजार लगे
क्या फूल से मुखड़े खिले हुए जैसे हो सदाबहार लगे
क्या भीतर बाहर सभी जगह है चमक दमक गुलजार लगे
नहीं होती कमी कहीं भी है जहां पड़ता तेरा साया है
हे राम तुम्हारे ,,,,
कहीं हंसी–खुशी का नाम नहीं छाए रहते गम के बादल
कहीं भूख से बच्चे भी बिलख रहे तड़पे जैसे मछली बिन जल
कहीं मौत सन्नाटा नहीं कहीं नजर आती हलचल
कलियां उजड़ी वीरान बनी पिंजर से फिरते नर बेकल
है यही स्वर्ग और यही नरक प्रत्यक्ष रूप दिखलाया है
हे राम तुम्हारे ,,,,

तुम नय नागर करुणा सागर अधहारी अधम उधारण हो
हो भक्तजनों के प्रति पालक दानव कुल के संहारण हो
पूजे जाते सर्वत्र सदा ऐसी तुलसी रामायण हो
हे वंदनीय त्रिलोकी के साक्षात प्रभु नारायण हो
घनश्याम तेरे यश गुण गाता महिमा गा गा उमगाया है
हे राम तुम्हारे,,,,

117

नैया मेरी भंवर बीच डोली
पार लगाओ हर स्वांस बोली
तूफान भारी घोर अंधियारा
दिखाई ना देता कहीं भी किनारा
लगता महाकाल ने आंखें खोली

नैया मेरी राम,,,,

सिव तेरे हे नाथ किसका सहारा
सकल चराचर के तुम हो आधारा
जलती है असमय उमंग की होली

नैया मेरी राम,,,

पग पग पर संकट डग डग पर कांटे
धोखे छलावों की चहू ओर हाटें फिरती ठगों की टोली

नैया मेरी राम ,, ,,,

विपदा में कोई न साथी सगा है
स्वार्थ की कीचड़ में जन जन पगा है
किसको चढाऊं मैं फूल फल रोली

नैया मेरी राम ,,,,

तरसता है घनश्याम कहां वो जमाना
गैरों को अपना सदा कहके माना
मुहब्बत के नागमों से भरो खाली झोली

नैया मिली राम,,,,

118

म्हान तो राम नाम लागे प्यारो
वो तो खांडरी कणी वोतो गुड़री डली है आराम गारो
म्हान तो राम नाम लागे प्यारो
दुख दर्द भूल कर ना पास फटे के
आवे नहीं नीडे़ जावे दूर हट के
हो जाये अमृत रे विष खारो म्हाने तो राम,,,

कितने ही कांटे बिछे हो मग में उठती हो पीरे हिये में पग में
धीरज धरो आवे बंसी वारो
म्हाने तो राम ,,,

कारी कारी रात होवे वर्षा का जोर
सनन सनन पवन करे नदिया भी शोर
काहे को भय संग रखवारो
म्हान तो राम,,,,

दुख सुख सुख दुख मन के है भाव
मन को श्री राम नाम चरणों में लाव
मिट जाए द्वेष भाव अंधियारो
म्हाने तो राम,,,

आवे जो सुख दुख गले से लगायले
राम का प्रसाद मान मस्तक चढाले
छाये मन मंदिर में उजियारो
म्हाने तो राम ,,,,

थोड़ा सा जीवन है राम राम गायले
हीरे मोती बिखरे है उनको तू पायले
प्रेम से दे राम राम जय कारो म्हाने तो राम,,,,

राम नाम के हीरे मोती बाट रहा मै गली गली
लेलो भाई बहनों लेलो अमय सुधारस भरी डली
पाप-ताप अभिशाप कभी ना पास तेरे आ फटकेंगे
कठिन असंभव काम तेरे ना कभी बीच मे अटकेंगे
राम नाम के लेने वाले मलयजशीतल हवा चली
लेलो भाई बहनों,,,
लख चौरेसी भटक भटककर नर तन का उपाहार मिला
भव सागर तरने को भैया सुंदर ठोस आधार मिला
करो भला मत सोच बुरा खिल जावे पर की कली कली
लेलो भाई बहनों,,,,
करलो प्रेम राम से प्यार सफल बने तेरा जीवन
पथ में कांटे फूल बनेंगे अंतर दाह बने चंदन
पल पल राम नाम की धुन हो मंगलदायक बड़ी-भली
ले लो भाई बहनों,,,,
सबकी रक्षा करने वाला राम सकल सुख के सागर
संकट विपदा कष्ट सबों के पलक मात्र में लेते हर
करूण हृदय से कभी पुकारो आते दौड़े महाबली
ले लो भाई बहनों,,,,
याद रहे नहीं सोच सकोंगे किस पल आवे मौत चली
काल ब्याल की चाल निराली निर्मम क्रूर कठोर बली
घनश्याम मगन लख मस्तक तेरे राम नाम गुलाल मिली
ले लो भाई बहनों ,,,,

आओ मानवें मिलजुल सब जन पवन मरण त्यौहार
स्वतंत्रता का महापर्व है खुशियों का आगार
रोगी थके बुझे जीवन को जग जननी गोद सुलाती है
जीर्ण शीर्ण कपड़े उतार कर नए वस्त्र पहनती है डरता
मृदुल मृदुल थपकी वत झरता मां का अनुपम प्यार
आओ मनावें,,,,
मां की गोदी मोदमयी सुखकर ममता का धर है
उनकी आंचल की छाया में नहीं किसी का डर है
निर्द्वन्द्व गगन में विचरण का मिलता उत्तम उपहार
आओ मनावे, ,,,
करता तनाव से मुक्त सभी बंधन से देता छुटकारा
राव रंक विद्वान मूढमति सब कोई उनसे हारा
अखिल सृष्टि का कण कण करता उनकी जय जयकार
आओ मनावें,,,,,
विज्ञान ने मस्तक टेक दिया बुद्धिवादी हैरान हुए
सबने ली शरण मरण की है जितने जग में बलवान हुए
हे देव तुम्हें है नमस्कार वंदन तेरा हर बार
आओ मनावें,,,,
वो महादेव जो महातीरथ गंगा की निर्मल धारा है
समता की मूर्तिमान जननी अमृत रस का उर भंडारा
उल्लास हर्ष की त्रिवेणी लहराती बन साकार
आओ मनावें,,,,

121

सबकी सुनते टेर राम जी हरते सबकी पीर
पड़ी भंवर में नैया भैया लग जावेगी तीर
कठिन समय में बंधु मित्र कोई काम ना आवेगा
पास पड़ोसी परिचित जन ना नीड़े पावेगा
बनी बनी के सब है साथी काहे होते अधीर
सब की सुनते टेर राम जी,,,
राजा बनता रंक भिकारी करता मौज मजा
खेल नहीं पापी निधड्क पावे निर्दोष सजा
अल्पकाल की चमक दमक है सोच समझ नरवीर
सबकी सुनते टेर राम जी ,,,
रात अंधेरी घटा टोपसी कभी उजाला चंदा का
शिखर कभी और कभी रसातल ऐसा भाग्य है बंदा का
संघर्ष हीन जीवन से अच्छा मर जाना रणधीर
सबकी सुनते टेर राम जी ,,,,
घोर अंधेरी गहन निशा का हो जाता अवसान
भर उमंग नूतन जीवन में आता स्वर्ण विहान
करुण पुकार द्रोपदी की सुन बन आए हरि चीर
सबकी सुनते टेर राम जी,,,,
चार घड़ी के इस जीवन में काम भलाई का करले
दुखियों को ले गले लगा सेवा सद्गुण हृदय धरले
संत समागम हरि भजन में हर दम रखना सीर
सबकी सुनते टेर राम जी,,,

अरिदल डोले चारों ओर कुछ कर ले यतन
ना मिले कहीं भी ठोर बिन हरि के भजन
मानव तन सुर दुर्लभ पाया करले सोच विचार
काहे फिरे भरमतो जग में क्या मन लाई धार
तेरी टूटे जीवन डोर माटी मिले रे रतन
ना मिले कहीं भी ठोर...

दिन सोने के रात रूपहली लागी तेरे हाथ
दाने पुण्य शुभ कर्मों की ही चले कमाई साथ
कहता है सब है मेरा मेरा तेरा नहीं रे भवन
ना मिले कहीं भी ठोर...

काल का पहिया घूम रहा है ज्यों कुम्हार का चाक
पकङ मिलावेगा माटी मे औसर रहयो है ताक
तेरा अपना ना जोर छोङ जावे सदन

तेरा अपना कुछ नही सब कुछ मिला उधार
स्वांस की पूंजी मिली अमोल भज मन कृष्ण मुरार
नाचे रग रग पोर पोर लाले हरि से लगन
ना मिले कही ठोर...

झूठे सारे नाते रिश्ते दुखी दुखी प्रीत साथ रहे ना सुख में दुख में सांचो सांवरियो मीत
होजा भाव विभोर प्रभु नाम में मगन

मिले कहीं भी ठोर...

कलिकाल में हरि कीर्तन भजन ध्यान कर भैया
अगम सिंधु से पार करेंगा नैया कुंवर कन्हैया
मिले प्यारो चितचोर घनश्याम सजन

ना मिले कहीं भी ठोर...

123

हर भगत की पुकार हर प्रेमी की गुहार मेरा राम सुनेगा
मेरा राम सुनेगा
रहता हरदम तैयार नहीं करें जरा वार पीर पल छिन में आन
मेरा राम हरेगा
उनसा उदेर नहीं सुना कहीं देखा है
अंधकार मध्य मार्ग दर्शक को रेखा है
सकल चराचर का रखता वो लेखा है
ह्रदय विशाल करे पल में निहाल राह कितनी हो दुर्गम
आसान करेगा

हर वक्त की पुकार...

पूजती त्रिलोकी उन्हें ऐसा है कारीगर
सृष्टि को नचाता बड़ा अद्भुत है बाजीगर
खेल नए-नए दिखलाता बन जादूगर
करता कमाल काटे भव जंजाल आए आंधियां या तूफान
नया पार करेगा

हर भगत की पुकार...

सबके हितैषी है करुणा के सागर है
प्रेम की गंगा है स्नेह भरी गागर है
अनाथन के नाथ प्रभु कीर्ति उजागर है
उनके लाख-लाख हाथ रिद्धि सिद्धि साथ सदा साथ घोर रजनी को
पूनम सामान करेगा

हर भक्त की पुकार...

कण कण में उनकी ही ज्योति का प्रकाश है
प्राणियों में श्वांस रूप में पुष्प से सुवास है
दीन हीन निर्बल के राम ही बस आश है

करे दुष्ट संहार देते असुरों को मार उनकी खुशियों को
पल में मसान करेगा

हर भक्त की पुकार...

आनंदप्रदाता का सब सुख के विधाता
राम जन जन की कामना है पांऊ में प्रभु का धाम
राम की लगन में मगन रहो आठों याम
करो उनको प्रणाम भजो नित घनश्याम जो हो इच्छालो मांग
वह प्रदान करेगा

हर भक्त की पुकार...

124

आओ प्यारे राम पुकारूं अंखियन प्यासी दर्शन की
अपलक तेरी बाट निहारूं राखो लाज इन चितवन की
पलना घड़ी एक चैन पड़त है हिवड़ो आवे है भर भर
कुटुम्ब कबीलो कुछ ना सुहावे सूनो लागे सगला घर
यादड़ली तेरी बहुत सतावे चाह तेरी पद परसन की
आओ प्यारे राम पुकार...
उठता दर्द कलेजा मांही मनड़ो तड़पे ज्यों मछली
उमड़ उमड़ कर नयने बरसे कसके हाड़ जोड़ पसली
और वियोग सहन ना होवे हालत नाजुक तन मन की
आओ प्यारे राम पुकार...
केश सबे सिर भये रजत सम तन बेहाल बनो पिंजर
लोगां ने तो लागे चोखो अंदर महल बन्यो खंडहर
नहीं तनिक बस अब कुछ मेरो लागी लगन एक सुमिरण की
आओ प्यारे राम पुकार...
पलपल क्षण क्षण युग सभ बीते कहूं व्यथा क्या अंतर की
अंतर्यामी स्वामी तुमसे कुछ ना छिपी घर बाहर की
दग्ध हृदय को शीतल कर दो झलक दिखा मनभावन की
आओ प्यारे राम पुकार...
सुरमुनि पालक अरिकुल धालक हे पुरुषोत्तम राम विभो धनुष बाण धर रूप मनोहर दो दर्शन श्री राम प्रभो
पूर्ण करो नयनन की आशा जुगत करो भवतारन की
आओ प्यारे राम पुकार...

125

हे राम बिन तेरे मोसे रहयो नहीं जाय
रहयो नहीं जाए कुछ कहयो नहीं जाए
आंसुओं से भीग रही पलके हैं मोरी
कंठ अवरुद्ध पीर हो रही घनेरी
हिवड़ा री आग में जलयो ही नहीं जाए   हे राम बिन तेरे...

नींदड़ी ना रात चैन दिन आवे
याद तेरा जीवङा ने बहुत सतावे
बिरहो तेरो मोसे अब सहयो नहीं जाए   हे राम बिन तेरे...

षटरस भोजन लगे रे विष जैसो
मनड़ो यो हो रहयो है आज कैसो कैसो
धीरज ना पलछिन एक धरयो जाए   हे राम बिन तेरे...

मीठी मीठी बातियों से जी अकुलावे
ठंडी ठंडी पोन आग धनी रे लगावे   हे राम बिन तेरे...

हाथ पैर धूझने लागे दूखे रे शरीर
पाना रो ज्यों पीलो पङ गयो बन्यो खूनङो नीर   हे राम बिन तेरे...

भक्तारी लाज राम अब तो बचाले
धार धनुष बांण हाथ दरश दिखादे
प्राण बस राम राम गातो चलयो जाए   हे राम बिना तेरे...

126

हे राम हे राम राम प्यारे
शरण तिहारी राम आया द्वारे
कौनसी है गलती हुई क्या भूल
रोम रोम टीस रहा बन करके शूल
अंखियन में आंसू है खारे खारे हे राम हे राम...

तन में ना बल है मन में ना कल
उर में तूफान है आति हलचल
छाये मेघ नभ में है कारे कारे हे राम हे राम...

लग रहे आगे पीछे वासना के भूत
उछल कूद कर रहे कामना के दूत
काम क्रोध मद लोभ हुंकारे हे राम हे राम...

मोह ममता का जाल बड़ा विकराल
तृष्णा की दल दल ने किया बुरा हाल
फंस रहयो तेरे बिना कौन है उबारे हे राम हे राम...

निर्बल के बाल आप निर्धन के धन
इंगित पे नाच रहे धरती गगन
तेरे दरबार खड़ा हाथ पसारे हे राम हे राम...

करुणा के सागर हो प्रेम की आगार
चरणों में दास का प्रणाम बारंबार
आकुल हो तन मन प्राण पुकारे
हे राम हे राम...127

झूम झूम नाच नाच गाओ मना
राम राम राम है मधुर कितना
उमड उमङ आए रे हर्ष पारावार
आलोक से भर जाए घर द्वार
रास से हैं भरपूर अमृत सना
राम राम राम है मधुर कितना
मंगल के दाता है आनंद निकेत
भव पार जाने के सुंदर है सेतु
रोम रोम राममय हो राम अपना
राम राम राम है मधुर कितना
जीवन की बाँसुरी से निसृत पुलक पुलक जाए रे तन मन प्राण
राम के वियोग में हो दर्द दुख घना
राम राम राम है मधुर कितना
राम सर्वस्त्र है राम प्रियतम सजन
राम बिन सुख चैन तेक ना अमन
राम बिन जीवन है शून्य सपना
राम राम राम राम है मधुर कितना
राम से लगाव हो नाम से हो प्यार
घनश्याम सर्वत्र पाओगे सत्कार
पीलो रे रस जी चाहे जितना
राम राम है मधुर कितना

128

मन नाच नाच गावे रे राम राम
मन माच माच गावे रे राम राम राम
अखिल चराचर के वह स्वामी
 दीनबंधु दुख हर्ता नामी
रोम रोम राम रो गुण गावो सुबह शाम

मन नाच नाच...

मंगलकारी मुक्ति प्रदाता
जन जन का अन्नदाता माता भक्तों को भूल तापे ना धाम

मन नाच नाच...

अभय दान देने वाला
संकट दूर भगाने वाला
लेलो लेलो रे भैया मिले बिन दाम

मन नाच नाच...

महिमा राम नाम की भारी
तर गए पत्थर तर गई नारी
बिन प्रयास ही सरे सभी के कठिन असंभव काम

मन नाच नाच...

कहे घनश्याम करो पद सेवा
पाओ दुर्लभ मुक्ति मेवा
निश्चय हेतु प्रभु भगत को अपना पवन धाम

मन नाच-नाच...

129

जाना एक दिन सबको मरघट क्यों गर्व करें इतना तू नर
किस बल ऊपर किसी विरत पर यों उछल उछल पड़ता बिन डर
कोई संग ना आया साथ गया
सब नाते रिश्ते धरे रहे
महल अटारी धन वैभव
सब मुंह ताकते पड़े रहे
कौन किसी का संगी साथी स्वार्थ भरे सब घर बाहर
किस बल ऊपर ,,,
झूठ कपट मक्कारी से
विपुल संपदा जो पाई
कुछ काम ना तेरे आएगी
पानी सा वह बह कर जाई
कुछ करने को जग में आया क्यों भटक गया गाफिल बनकर
किस बल ऊपर ,,,
क्या सोचा है कभी समझा है
किस हेतु मिला तुमको नर तन
किसने भेजा किस कारण से
क्यों व्यर्थ लूटाता जीवन धन
पल पल पूंजी घटती जाती कर चेत जाग मत देरी कर
किस बल ऊपर ,,,,
रह कठिन तपस्या का वर है
अनगिन शुभ कर्मों का फल है
थाती अमूल्य प्रभु प्रियतम की
पावन पुनीत गंगा जल की
उजली चादर मत गंदी कर शुभकर्म करो जो जाए निखर

किस बल ऊपर,,,

सो सो कर बहुत गंवा डाला
कुछ बाकी विषय में कुछ करले
भज राम राम भज कृष्ण कृष्ण
खाली झोली अब तो भरले
यह जीर्ण शीर्ण नौका सचमुच घनश्याम जाएगी पार उतर
किस बल ऊपर ,,,

130

राम नाम अमृत है भजले रे मन
मस्ती में भर जारे हो जा मगन
दुःख की ना पास कभी आएगी आंच
कहते हैं तुलसी कबीर संत सांच
नाच रही धरती है नाच गगन
मस्ती में भर जा हो जा मगन
नर तन पाया है कितना महान
कब तक सोया रहेगा अनजान
चेत कर चेत जाग करले यतन
मस्ती में भर जा हो जा मगन
पल पल क्षण क्षण हीरा अनमोल
संतो की भाषा है ग्रंथो के बोल
रोम रोम पुलक पुलक गए भजन
मस्ती में भर जा हो जा मगन
जाना है एक दिन कौन है अमर
शुभ कर्मों का फल शाश्वत मधुर
जगमग जगमग होवे भवन
मस्ती में भर जा हो जा मगन
झूम झूम नाच नाच गाओ दिन रैन
राम घनश्याम मेरे दोनों है नैन
राम राम राम की लगा ले लगन
मस्ती में भर जा हो जा मगन
131

झूम झूम कर नाचे जोगी माता कौशल्या के दर पर
धन-धन हो जाऊं माता तेरे सुत का दर्शन कर
बड़ी दूर से चला आ रहा आस लिए मन में भारी
मस्त उमंगों ने तन मन की सुध बुध हरली है सारी
दंग हो गया अवधपुरी की शोभा निखर निरख घर घर
धन्य धन्य हो जाऊं माता तेरे सुत का दर्शन कर
नव वधु सा श्रृंगार किए है सजी नगर की गली गली
रंग-बिरंगे परिधानों में लिपटी जनता लगे भली
मंगलाचारों की स्वर लहरी पावन मादक बड़ी मधुर
धन्य धन्य हो जाऊं माता तेरे सुत का दर्शन कर
राजमहल में संत ऋषि मुनि भक्त जनों की भीड़ बड़ी
संत समाज द्वारे पर ठाडे सुरत प्रभु चरणों में गड़ी
लाल तेरा नहीं लाल है केवल अखिल भुवन का परमेश्वर
धन्य धन्य हो जाऊं माता अपने प्रभु का दर्शन कर
कर में डमरू बाजे डम
डम घुंघरू पग में छम छम छम छम
वेष मेरा है अजब निराला सुत तेरा लख होय मगन
झटपट ले आ तेरे सुत को मैं भी देखूं जी भर भर
धन्य धन्य हो जाऊं माता तेरे सुत का दर्शन कर
मात कौशल्या दौड़ी अंदर सुत अपने को ले आई
दे गोदी में योगी श्री आनंद सुरसरि में नहाई
शिवराम मिलन अद्भुत सुंदर गाता घनश्याम मगन प्रियवर
धन्य धन्य हो गया मैं माता अपने प्रभु का दर्शन कर
132

कितना मधुर है कितना सरल
राम राम भजकर जीवन सफल
हल्दी लगे ना लगे फिटकरी
बिना श्रम किए पार होवे तरी
अद्भुत निराला सुस्वादु है फल
राम राम भज कर जीवन सफल
कब तक फिरेगा यों मारा मारा
किस्मत को रोता थका हारा हारा
गहले चरण पाये निश्चल सुबल   राम राम भजकर...

मंगल प्रद राम शुभ के है धाम
बिना भक्ति है अनुरक्ति मिलता ना ठाम
हर स्वांस में जप राम पल पल   राम राम भजकर...

काम करना है करले बिना चाह
देख खुल जाये चाहू् और राह
संकट भी आएंगे रहना अचल   राम राम भजकर...

घनश्याम मस्ती में सरा बोर हो जा
आनंद अमृत की बाहों में सोजा एकाग्रामन
मन हो ना कोई हलचल   राम राम भजकर...

133

राम राम जप लीजे प्राणी राम नाम सुखदाता है
जिनकी लगन राम से लागी मनवांछित फल पिता है
राम नाम की महिमा ऋषि मुनि संत जनों ने गाई है
राम नाम का रस पीने से बढ़ गई बेल सवाई है
अखिल भुवन का स्वामी मालिक सबका भाग्य विधाता है
जिनकी लगन राम से लागी...
माया ने धर वेष मोहिनी जाल सुनहरा बुन डाला
निविड़ निशा के अंधकार में उजाला भी दिखता काला
गर्भवास में कौल किया था याद नहीं क्यों आता है
जिनकी लगन राम से लागी...
द्वार खुले हैं चहू और के पथ निष्कंटक सुगम सरल
अमृत घट छलका पड़ता है चखते कोई नर नार विरल
यमराजा की बही में सबके पाप पुण्य का खाता है
जिनकी लगन राम से लागी...
हीरे पन्ने महल अटारी धन दौलत सुंदर नारी
नाशवान सब अविनाशी से क्यों नहीं करता तू यारी
पल-पल आयु छीज रही है झूठा जग का नाता है
जिनकी लगन राम से लागी...
राम राज्य की प्रजा सुखारी संत जनों की प्रिया नगरी
राम भजो बन जावे बावरे अगली पिछली तेरी सगरी
राम नाम है महामंत्र घनश्याम मगन हो गाता है
जिनकी लगन राम से लागी...

राम लखन की नगरी अयोध्या सरयू की पावन धारा
पग पग राम चरण रज बिखरी राम राम का जय कारा
अवधपुरी की शोभा अनुभव अनुपम महिमा हरि हरि ने गाई
शत शत मंदिर देवल में बजती मुक्ति की शहनाई
शंख घंट घड़ियालों की ध्वनि वेद मंत्र का भंडारा
पग पग राम चरण...

कण-कण शक्ति भरी राम की अणु अणु शक्ति भक्ति है बिखरी
त्याग तपस्या स्नेह प्रेम की गौरव गाथा निखरी निखरी
कनक भवन में राम जानकी सातमूर्ति क्लेश रूप धारा है
पग पग राम चरण...

रामदास का राज्य यहां पर गली-गली द्वारे द्वारे
इतने फली खाकर बन जाते सच्चे मीत भले प्यारे जा
जड़चेतन से एक ध्वनि बस राम राम राम प्यारा
पग पग राम चरण...

एक अड़िग विश्वास हृदय में भक्ति भावना रहे प्रबल
राम अवध की बन बीथियों में खेल रहे बन शिशु चंचल
वही अवध है सरयू भी वो दशरथ का है दरबारा
पग पग राम चरण...

यदि सच्चा सुख चाहो शांति चलो चले सब अवधपुरी
स्वर्ग भूमि यह नंदन कानन संत जनों की सभा जुरी
घनश्याम को केवल जनक नंदिनी राम कृपा का है सहारा
पग पग राम चरण...

135

लेलो लेलो रे भाई मेरे नाम राम का
भजन बिना रे तन किस काम का
पैसों टकों ना लागे रंग आवे चोखो
प्रभु के भजन में खाओगे धोखो
माटी में मिल जावे तन-चाम का

लेलो लेलो रे भाई...

काठ की हांडी जीवन चले ना बार दूजी
हरि नाम नहीं लेता क्यारे कुबद सूझी
मेहमान बनकर आया सुबह शाम का

ले लो ले लो रे भाई...

परिवार मोटो धणो धन भी अटूट है
मर्जी का मालिक तू इसमें ना झूठ है
काई बिसार दियो नाम सुख धाम का

ले लो ले लो रे भाई...

तेरी मेरी मे भाई समय बीत जायेगो
काल को नगाड़ों बाजे फेर पछताओगे
सफर करना है करले हरि के मुकाम का

ले लो ले लो रे भाई...

संतो के संग में प्रभु के भजन में
लो तो लगालो भाई हरिचरण में
भूल कर ना छोड़ प्राणी घर वो आराम का

ले लो ले लो भाई,,,,

राम नाम अमृत है रतनअमोलो
सोवोगे कब तक राम राम बोलो
बिसरे ना एक पल नाम घनश्याम का

लेलो लेलो रे भाई...

राम राम बोलो भाई राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम
संकटों को देख देख काहे घबरात हो
नयनों में नीर भरे काहे अकुलात हो
भूल गयो काई दुखाहारी को नाम

राम राम बोलो भाई...

सुख दुःख दुःख सुख दोनों साथ साथ हैं
कभी सुख कभी दुख इतनी बात है
सूरज जगाता सुलाती है शाम

राम राम बोलो भाई...

प्रेम से पुकारो तो दौड़ा दौड़ आयेगा
सूखी हुई बगिया में वो फूल खिलायेगा
आनंद के झरने झरेंगे आठो याम

राम राम बोलो भाई...

भक्तों का संग कभी छोड़ा ना छोड़ें
संकटों के पर्वत को चुटकी में तोड़े
भक्तों को देते निराला दिव्य धाम

राम राम बोलो भाई...

बड़े-बड़े पापी भी पाते शरण है
तर गए जिसने भी पकड़े चरण है
सबका हितैषी है भाई घनश्याम

राम राम बोलो भाई...

137

भजले प्राणी सीताराम भरोसा नहीं एक पल का है
कब होवे जीवन की शाम बुल बुला ये तो जल का है
नौ दस मास गर्भ में बीते
दारुण कष्ट नरक का सहते वैतरणी धारा में बहते
जब आए याद घनश्याम फटा उर दुख बादल का है
भजले प्राणी सीताराम...
माया का फिर चल गया चक्कर
मोह ममता की लग गई टक्कर
भूला नाम प्रभु का तू नर
लगने लगी भली ये चाम नशा छा गया अमल का है
भज ले प्राणी सीताराम...
सुख भोगो में खुलकर खेला
मधुशाला का लग गया मेला
विषयों का तू बन गया चेला
बन गया मूरख नमक हराम रंग चढ़ गया अरिदल का है
भजले प्राणी सीताराम...
सदा रहे ना ये रंगरलिया
आय बुढ़ापा दे गलबहिया
फिर पछतावे कूटे छतिया
जानो पडसी यम के धाम खेल सब खेले नकल का है
भजले प्राणी सीताराम...
भज मन रघुवर धनुआ धारी सीता माता जगत दुलारी
लखन लाल से शेष अवतारी
करले इनको सदा प्रणाम दास थारे चरण कमल का है
भजले प्राणी सीताराम...138

राम राम बोल भाई राम राम बोल रे
राम राम राम राम राम बोल रे
यूं ही बीत जाएगी तेरी उमरिया
रीत जाएगी तेरी रस की गगरिया
काहे को भोगो में करता किलोल रे

राम राम बोल भाई...

माया लुभावनी है बड़ी मनभावन है
काली यह नागिन है विष भरी डायन है
माया के बंधन को राम भज खोल रे

राम राम बोल भाई...

कोई नहीं है तेरा संगी साथी
काहे को पचि पचि मरे दिनराती
चारों ओर प्राणी पोलम पोल रे

राम राम बोल भाई...

जो आया है उसको जाना
आज तलक कोई अमर रहा ना
काहे का जीवन मरण लियो मोल रे

राम राम बोल भाई...

चार घड़ी का साथ यहां का
करले जतन कुछ यार वहां का
हीरा सो नर तन पायो अनमोल रे

राम राम बोल भाई...

कलयुग में बस नाम अधारा
जो भी भजले उतरे पारा
पीओ घनश्याम संग राम रस घोल रे

राम राम बोल भाई...139

राम राम भज भाई राम राम राम
राम राम राम भज राम राम राम
'रा' का नाम लिए पाप भस्म होय जाय
ममफ को उच्चारे से सुर घर रम जाय
ऐसो है अद्भुत प्रभु को नाम — राम राम भज...

शंकर जी नित उठ राम गुण गाते
उमाजी को राम जी की कथा सुनाते
भाव में विभोर होय नाचे भगवान — राम राम भज...

ब्रह्माजी ध्यावे नारद झूम झूम गावे
सुरगण गाय गाय नही अघावे
शुक्र सनकादि जिन्हे जपे आठो याम — राम राम भज...

भक्तों के संग ऐसे प्रभुजी रहत है
मीठी खारी ऊंची नीची सबकी सुनत है
भक्तों के सारे संवारे काम — राम राम भज...

सासरे के व्यंजन भी नहीं लागे नीके
शबरी के फल आगे सब हीथे फीके
शबरी की भक्ति को करलो प्रणाम — राम राम भज...

राम नाम की कैसी अद्भुत ये बात है
दुख रात बन जाए सुख प्रभात है
प्रेम से बोलो जय जय राम घनश्याम — राम राम भज... 140

भाईडा पार उतर जागा राम गुण गाय गाय के
राम गुण गाय गाय के प्रभु गुण गाय गाय के
सुर मुनि दुर्लभ मानुस तन पाकर क्यों भटक रहा है
अधर बीच मे त्रिशंकु सा क्यो तू लटक रहा है
क्यों क्यों फिरता भागा भागा हरि भज धाय धाय के
भाईडा पार उतर जागा...
सिर पर पोट धरे ममता की फूला फूला कहां चला
रिश्ते नाते सब है झूठे काया का क्यों मोह भला
किसी का रहे नहीं सागा सोच मन लाया लाय के
भाईडा पार उतर जागा...
माया का चक्कर है भारी नश्वर है संसार
जिसको तूने अपना समझा उसमें नहीं है सार
तेरे मोह बाण लागा हृदय मे आय आय के
भाईडा पार उतर जागा...
महल अटारी बड़े-बड़े और धन दौलत के ठाठ
साथ में तेरे कुछ ना जावे सुत भी फोड़े टांट
कभी ना सोचा पीछा आगा मद में छाय छाय के
भाईडा पार उतर जागा...
भजन होय ना जब मेरे भाई दुर्बल होय शरीर
रग रग तेरी दुखन लागे कसके तन में पीर
तेरा राम में हो अनुरागा राम चित लाय लाय के
भाईडा पार उतर जागा...
राम राम के गुण गावो नित जो है परम दयाल
पल पल की वो राखे खबरिया भक्तन के प्रति पाल
दास को मिल गया मुंह मांगा सत्संग पाय पाय के
भाईडा पार उतर जागा...

हरि हरि बोल हरि हरि बोल
हरि हरि बोलने में क्या लागे मोल
हीरा सो जीवन व्यर्थ गंवावे मानव देह नहीं
बार-बार पावे बीतो जाय समय अनमोल

हरि हरि बोल...

धन दौलत और माल खजाना
संग में तेरे कुछ नहीं जाना
ये तो जैसे ढोल में पोल

बोल हरि हरि...

माता पिता सुत बंधु नारी
सबकी है मतलब की यारी
मन मूरख अंतर पट खोल

हरि हरि बोल...

मोह माया ने किया बसेरा
काम क्रोध ने डाला डेरा
नैया तेरी भई डांवा डोल

हरि हरि बोल...

हरि भजन कर तर जाएगा
काम क्रोध सब मर जाएगा पीले घूंटी राम रस घोल

हरि हरि बोल...

हरि भक्ति का पंथ निराला
समझेगा कोई समझन वाला
गुण ले संत जनों के बोल

हरि हरि बोल...142

सब मिल करके बोलो राम राम
राम राम राम राम राम राम राम विपदा सबकी वो ही हरे
भव सागर से पार करें
भव भय हारी आनंद धाम

सब मिल करके...

श्रद्धा प्रेम से कोई लो पुकार
दौड़ा दौड़ा आवे सबके द्वारे
पूरण करें वो सबके काम

सब मिल करके..

सांवरो ना जाने कोई ऊंच नीच
वो तो मिलता सबके बीच
सब जन हितकारी घनश्याम

सब मिल करके...

अजामिल जैसे पापी तरे
भक्तों के सभी कष्ट हरे
द्रौपदी की चीर बढाये श्याम

सब मिल करके...

सत्संगत की नाव चढो
नाम की ले पतवार बढो
सबके खिवैया है श्री राम

सब मिल करके...

143

हे राम बिन तेरे कहां जाऊं बता
कष्ट मुझे कितना नहीं क्या पता ?
दर-दर की ठोकर मै खाता फिरूं
असहाय बेबस बना क्या करूं
नहीं पाया समझ क्या है मेरी खता — हे राम बिन तेरे...

कोई संगी ना साथी है जग में मेरा
कहाँ ढूंढू किधर है बसेरा तेरा
कण कण में है सबका ये ही मता — हे राम बिन तेरे...

दुनिया पागल कहे तीर सबके सहे
संकटों में ना कोई किसी का रहे
सुख के साथी सभी कह रहा जग जता
हे राम बिन तेरे...

कितना व्याकुल हूं बेचैन हूं मैं प्रभो
काटे कटते नहीं दिन रैना प्रभो
क्या मिलेगा भला मुझको इतना सता — हे राम बिन तेरे...

कौन से कर्म का फल मुझे मिल रहा
क्यों भवन मेरा फ़ौलादी योग हिल रहा
आये दुर्दिन सबो ने बताई धता — हे राम बिन तेरे...

आया तेरी शरण पकड़े तेरे चरण
लाज रख लो सभी कष्ट होंगे हरण
आसरा है तेरा तू विटप मै लता — हे राम बिन तेरे...

राम नाम उपवन की आओ करें सैर
हर्ष उल्लास जहां आते हैं तैर
कब तक रहोगे पड़े आलस में भैया
कब तक उड़ेगी बोल तेरी कनकैया
बीच भंवर डोल रही तेरी रे नैया
नहीं कहीं रहती है राम बिन खैर
राम नाम उपवन की आओ करे सैर
धन यौवन का ना कर अभिमान रे
ना जाने किस पल जावे तेरे प्राण रे
काहे उठता है सर आसमान रे
जन जन से प्रेम कर मत कर बैर
राम नाम उपवन की आओ करें सैर
शीतल सुगंध भरा बहता समीर
अंग अंग की हर लेता है पीर
बिन श्रम पहुंचता मुक्ति के तीर
भूल कर ना पीछे हटाना कभी पैर
राम नाम उपवन की आओ करे सैर
कोयलिया कूक रही अमीय रस घोल
पपीहे की पी पी में जादू भरे बोल
नाचे मगन मोर पांखों को खोल
फीकी फीकी दुनिया रे राम के बगैर
राम नाम उपवन की आओ करे सैर
कितनी निराली कमल की है शान
गुलाब के पुष्पों की महिमा महान
नाच उठे मस्ती में तन मन प्राण
अमृत का पान कर राम की मेहर
राम नाम उपवन की आओ करे सैर

145

भक्तों के भगवान आन अब सुधि लेओ
जन जन के तन तन प्राण आन अब सुधि लेओ
दया धर्म के स्रोत आज सबरीत गये
प्रेम और विश्वास के दिन बीत गये
हंसी खुशी की हरियाली पर आज उदासी पाला है
कलह दैत्य ने देखा घर-घर कैसा डेरा डाला है
हे प्रेम रूप भगवान आन अब सुधि लेओ जन जन के तन...

क्या है हमारा कर्म धर्म क्या ये सब तो हम भूल गए
बहते बहते ना जाने हम कौन घाट कौन कूल गए
अंधकार इतना गहरा है सूझे कोई मंजिल ना
बीच भंवर में भटक रहे है नजर में कोई साहिल ना
करो ज्योति का दान आन सुधि लेओ जन जन के तन...

पाप प्रबल रूप में छाया जिसका कोई अंत नहीं
पतझर ही पतझर जीवन में अमृत रूप बसंत नहीं
स्वार्थ पंक में लिप्त हुए कुछ भले बुरे का ज्ञान नहीं
कौन है अपना कौन पराया इतनी भी पहचान नहीं
आर्त जनों के त्राण आन अब सुधि लेओ जन जन के तन...

दुष्ट अधर्मी खावे मेवा पापी मौज उड़ाते हैं
संत जनों की भलमनसों की जी भर हंसी उड़ाते हैं
सत्कर्मों की सद् विचार की बोलो वीणा क्यों है मौन
असुरदलों का संहारक वो चक्रसुदर्शन क्यों है मौन
कहां वो गीता ज्ञान आन अब सुधि लेओ जन जन के तन...

जन जन के जीवन में हे प्रभु शांति प्रेम के फूल खिले
ईर्ष्या द्वेष कपट मक्कारी भूल सभी जन गले मिले
राम राज्य का सूर्य उदय हो घर-घर मंगल दीप जले
राम नाम की गंगा में संपूर्ण विश्व के पाप धुले
हे पुरुषोत्तम जय राम आन अब सुधि लेओ

भक्तों के भगवान...

146

प्राणी भजले हरि को नाम
शीतल छाया में जिसकी पावे जी भर विश्राम
धन दौलत प्रकार मत फूल
गर्व हिंडोले कभी ना कूल
कंचन काया खाक बने
महल अटारी राख बने
कुछ भी साथ ना जाएगा
धरा यही रह जाएगा
अंत समय के सच्चे साथी मनमोहन घनश्याम

प्राणी भजले...

मीठे मीठे बैना बोल
जीवन में दे जो रस घोल
प्रेम का सबसे कर व्यवहार
सत्संगत मुझे कर ले प्यार
जीवन पाया है अनमोल
दुनियादारी में मत घोल
अच्छे-अच्छे कर्म किए वह जो आएंगे सब काम

प्राणी भज ले...

पाप ताप सब दूर भगे
सोये तेरे भाग्य जगे
राम का नाम ले आधार
हो जाएगा भव से पार
कोई तुझको पड़े ना
यम भी आकर जकड़े ना
रोम रोम से एक ध्वनि हो केवल जय जय राम

प्राणी भजले...147

मेरी बिनती सुनो भगवान आन अब दर्शन दो
मैं निपट मूढ अनजान आन अब दर्शन दो
नैया मेरी बीच भंवर में प्रभु जी खावे चक्कर
बिना कृपा के तेरी भगवान कैसे आवे बचकर
करुणाकर दया निधान आन अब दर्शन दो

मेरी विनती सुनो...

पाप किये अनगिन प्रभु मैने कैसे करूं बयाना
रैन दिवस तड़पन में बीते कैसे मुक्ति पाना
जन जन के तन मन प्राण आन अब दर्शन दो

मेरी विनती सुनो...

गणिका तारी कुब्जा तारी तारे सदन कसाई
मैं भी तो पापी हूं स्वामी क्यों ना बारी आई
प्रतिपल तेरा ध्यान आन अब दर्शन दो

मेरी विनती सुनो...

कितनी आशा लेकर मन में आया द्वार तिहारे
हे त्रिलोकीनाथ सभी के तुम ने काज संवारे
कहां छिपे घनश्याम आन अब दर्शन दो

मेरी विनती सुनो...

148

राम रट राम राम रट रे
नैया ये तेरी लग जाए तट रे
कहां से आया, क्यों आया
किसलिए मानव तन पाया
कभी ना सोचा विचारा शठ रे
राम रट रे राम रट रे

नैया ये तेरी...

क्या लाया क्या ले जाएगा बीता समय नही हाथ आयेगा
करना जो करले झट पट रे
राम रट रे राम रट रे

नैया ये तेरी...

कहता जो मेरा तेरा नहीं
सपने भी सच्चे होते कहीं
चार दिनों की सब खट पट रे
राम रट रे राम रट रे

नैया ये तेरी...

मन मूरख क्यों ना करले चेत
दीन दयाल हरि चरणों से हेत
अंधेरे के बादल जाये हट रे
राम रट रे राम राम रट रे

नैया ये तेरी...

जीवन की वीणा के बोले तार तार
जय राम जय राम करके पुकार
अंतर के खुल जांय पट रे
राम रट रे राम रट रे

नैया ये तेरी...149

राम नाम की जपले रे माला राम नाम की माला रे
संग संग तेरे सदा रहे वो धन्वा तलकश वाला रे
भक्त जनों का कष्ट कभी वो देख नहीं सह सकता है
सुनकर करुण पुकार मूक वो कभी नहीं रह सकता है
सत्य प्रेम का सच्चा साथी अमंगल नहीं वह सह सकता है
अपने मन की पीर भला वो कब किससे कह सकता है
सकल सृष्टि का स्वामी सबका भार उठाने वाला रे

संग संग तेरे...

अपने जन के पीछे पीछे फिरता बेसुध पागल बन
नीलकंठ बन गरलपान कर अमृत का करता वितरण
भस्मासुर को भस्म किया धर वेष मोहिनी मन भावन
खा छिलके विदुरानी के आनंद सिंधु में हुआ मगन
असुर संहारक अरिकुल धालक भक्तों का रखवाला रे

संग संग तेरे...

दाता ऐसे ध्रुव बालक को अजर अमर पद दिया अटल
रंग बिरंगी अमित साडियों में धर आये वेश बिमल
अखिल भुवन में कीर्ति पताका लहराती जिनकी उज्जवल
धरा धाम में भक्तों के हित आते धर अवतार नवल
नहीं अंधेरा छू पायेगा हर दम रहे उजाला रे

संग संग तेरे...

नाच रहे जिनके इंगित पर सूर्य चंद्र अवनी अंबर
गंगा यमुना चरण कमल से निसृत होकर गई निखर
तीन तीस कोटिक देवता हर्ष रहे गुण गा गा कर
एक अलौकिक ज्योति नयन से हंसी अधर से रही बिखर
अनगिन हाथों बांट रहा वो मधुर प्रेम के प्यालारे

संग संग तेरे...

जो तू चाहता धन यश वैभव देगा भर भरकर झोली
नैया तेरी पार लगावे भंवर बीच में यदि डोली
व्यर्थ जले अनमोल भजन बिन मानव जीवन की होली
पछतायेगा हाथ रे मल मल जब बंद हो जावे बोली
राम नाम की मस्ती में घनश्याम बनो मतवालो रे
संग संग तेरे...

150

राम बोले श्याम बोले राम बोले श्याम बोले
संतन की वाणी में घनश्याम बोले
तुलसी की माला में राम छिपे है
सुर के गीतों में श्याम छिपे है
मीरा के घुंघरू में गिरधिर के बोल
लाखों के अंतर पट दिए खोल
भक्तो के संग वो अविराम डोले

राम बोले श्याम बोले

सूरज और चंदा में किसका प्रकाश
दृष्ट अंधेरे का करते जो नाश
किसके इशारे पर डोले पवन
किसने बनाया ये सुंदर चमन
श्रृष्टि का कण कण सुबह शाम बोले

राम बोले श्याम बोले

मृत्यु भी करती है जिनको प्रणाम
भक्तो के हाथ वो बीके बेदाम
आनंद रस के जो परावार
बहाते जो भक्ति की अमृत धार
संतन चरण चारों धाम डोले

राम बोले श्याम बोले

कहे को जाओ तुम बदरी केदार
काहे को जाओ वृंदावन हरिद्वार
संतन के वेश प्रभु आवे तेरे द्वार
करो पूजा उनकी लेओ चरण पखार
बिगड़ी बनाओ जय राम बोले

राम बोले श्याम बोले 151

राम बोलो राम बोलो राम बोलो राम बोलो
राम का नाम सुबह शाम बोलो
उलटा नाम जपे संत हो गए
राम कथा सा वो ग्रंथ दे गए
पानी में पत्थर लगे तैरने
मचल मचल झूम झूम लगे बोलने
नाम की शक्ति का तेज है भरा
वरना हम में क्या है धरा
झूठे उन बेरो में इतनी मिठास प्रभु स्वयं बन गए उनके दास
बेर बेर बोले ला बेर दे बेर
शबरी लगाई क्यों इतनी देर
भाव देखो कितने ये इस से भरे
पीकर जिन्हें बंधु लाखो तरे
आज मिल जुल कर तमाम बोलो
राम बोलो राम बोलो

152

द्रौपदी की सुनी जब करुण पुकार
दौड़े आए प्रभुजी ना किनी थी बार
चीर रूप में प्रभु प्रकटे अपार
दृष्ट दुशासन गया खैच खैच हार
भक्तो के संग रहवे उनका निवास
सूरज और चंदा में जैसे प्रकाश
संतो के रंग वो रंगा डोले
भक्तो कीं भक्ति में पगा डोले
नाम देव की जाय छानी है छात
नरसी जी को भरयो है भात
भक्तो की कुशल क्षेम उनके माथ
रक्षा निमित उनके लाख लाख हाथ
सत्संग प्रेमी आठों याम बोलो
राम बोलो राम बोलो
मीरा कीं भक्ति वो अद्भुत ललाम
बावरे से बने पीछे फिरे घनश्याम
विष में से बह गई अमृत की धार
सर्प पिटारे आए शालग्राम द्वार
जैसा नचावे वैसा नाचे गिरधर
मीरा के रोम रोम रमें मनहर
बिना बीज निपजायो धन्ना को खेत
अजामिल से पापी तारे अनेक
कभी नरसिंह कभी वामन बने
भक्तो के हित रूप अनगीन धरे
पल पल क्षण क्षण लो सांवरे का नाम
निश्चय बने बिगड़े सब काम
पाप कटे प्रेम से जाय राम बोलो
राम बोलो राम बोलो

चलो चलो सब मिल जुल करके बाबा के दरबार
ऋद्धि सिद्धि जहा नृत्य करत जो सिद्ध पुरुष अवतार
बाबाजी है बड़े दयालु करुणा सागर प्रेम भर
लीला अपरम्पार है उनकी पल में कष्ट महान हरे
दीन बंधु सुख दाता त्राता भक्तो के आधार

चलो चले सब

कदम कदम पर बाह उठाए बाबा स्वागत करता है
खाली झोली को अपने आशिर्वादो से भरता है
कोई नही निराश लौटता ऐसे है दातार

चलो चले सब

सुनते सबकी व्यथा कथा सबके घावों को सहलाते
मरहम बन कर जलन तपन को शीतलता से नहलाते
ऐसे संत जनों के चरणो में झुकता संसार

चलो चले सब

मन्नत सबकी पूरी करते ऐसे दम खम के बाबा
धाम है उनका पावन मंदिर यही कही काशी काबा
मिलते नयन आंधरे को है बांझ को सूत उपहार

चलो चले सब

बाबा जी पाल निराली तीन लोक से न्यारी है
दर्शन करते ही खिल उठती मन की क्यारी क्यारी है
जय बाबा की जय बाबा की होती जय जय कार

चलो चले सब

बाबा जिनकी पकड़े अंगुली उसको कभी ना वो छोड़े
भक्त और भगवान का रिश्ता भूल कभी ना वो तोड़े
घनश्याम सदा महिमा बाबा की गा जाता बलिहार

चलो चले सब 154

नैया खेता चला जा रामजी के आसरे
भंवर तूफानी छाया तक ना आवे पासरे
जन जन की है चिंता उनको
रखता सबका ख्याल
हाथी को मण चींटी को कण
दाता दिन दयाल
सुंदर दिया बिछौना महिका ओढन को आकाश रे
नैया खेता चला
कण कण में है वास उसी का
घट घट में वो छाया
बड़ा निराला कौतुक प्रिय है
उसकी ही सब माया
फंस कर जगत झमेले में नर पाता अगिणत त्रास रे
नैया खेता चला
सबके हृदय में वो बैठा
लेता पल पल मुजरा
खोटे काम काबूरा नतीजा
शुभ कर्मों का सुथरा
शुभ कर्मों की सदा दिवाली कहता है इतिहास रे
नैया खेता चला
बड़ा दयालु परम पिता है
करुणा का आगार
स्नेही बंधु सखा सभी कुछ
सकल विश्व आधार
आते सुन कर टेर तिहारी इतना हो विश्वास रे

नैया खेता चला

पल पल भजले राम राम को
स्वांस स्वांस घनश्याम
जीवन पथ की बाधाए सब
मिटे मिले प्रभु धाम
राम है खड़े निकट ढीग तेरे ऐसा हो आभास रे

नैया खेता चला

155

मेरे रामजी के पास में सब लोगो की किताब
अच्छे भले बुरे कर्मो का रखता खूब हिसाब
कर्म करो कितने ही खोटे धरो गले पर आरी
कभी नही उनसे बच सकते रखता नजर करारी
पल में खोल धरेगा तेरे चेहरे की नकाब
मेरे रामजी के पास में
मानूस तन पाया है भाई हरी भजन करने को
बिना किसी डर भय बाधा के भवसागर तराने को
हीरा जैसी काया मत खो बन करके नवाब
मेरे रामजी के पास में
जग में रहो सदा बन करके एक छोटा तिनके सा
पैरो से रौंदा जाकर भी है वैसा का वैसा
जीवन का हर मोड़ बने सुंदर सूखकर नायाब
मेरे रामजी के पास में
खाते पीते करते सबका रखता लेखा जोखा
रहता सबके साथ सदावो उनको किसने देखा
कोटि कोटि आखें है उनकी श्रृष्टि अजब जनाब
मेरा रामजी के पास में
अरब खरब प्राणी रच डाले किस्मत न्यारी न्यारी
मन की रुचियां अलग अलग हैरान है दुनिया सारी
उनकी कलाकृति का कोई अब तक नहीं जवाब
मेरे रामजी के पास में
सत्पथ से ना हटो करो उपकार भला जन जन का
सपने में ना चीत बुरा करले सुधार तन मन का
आनंद सुधा की झड़ी लगे घनश्याम करे आदाब
मेरे रामजी के पास में 156

राम भज राम भज राम भज बावरे
राम राम राम राम राम राम राम गावरे

गर्भवास में जब उल्टा हो लटका था
तड़पता था मछली स्वांस अटका था
व्याकुल था बेहद परेशानी का झटका था
मन तेरा ना जाने कहां कहां भटका था
हार कर बोला राम पड़ूं तेरे पांव रे
मुक्त कर मैल सब मन का बहाव रे राम भज राम भज...

कितना था प्यार भरा ममता से भरपूर
खुशियों का आलम था चिंता से दूर दूर
फूल सा तरो ताजा बचपन का वो नूर
झड़ गया उड़ गया बनकर के काफूर
फिर कभी पावे नहीं वैसे भावरे
ध्यान श्री राम नाम चरणों में लावरे राम भज राम भज...

यौवन का मस्त राग अधरों पे छा गया
रंगीन सपनो का भव्य रूप भा गया
समय के कारवां ना जाने कब गुजरी गया
हाय वो मस्ती भरा वक्त अब किधर गया
अरमान टूट गए धरे रहे चाव रे कल था जो आज नहीं समय का प्रभाव
रे राम भज राम भज...

आया बुढ़ापा लेकर यादें पुरानी
कहां मेरा बचपन कहां है जवानी
कहां अब जोश वो कहां है रवानी
बाकी बची है गम दर्द की कहानी
हाथ मल मल करके अब पछताव रे
बीत गया लाख कर फिर नहीं पावरे रे राम भज राम भज...

गई सो गई अब आगे का ख्याल कर
बीती हुई बातों का कुछ ना मलाल कर
काम करना है कर कर देख भाल कर
राम राम भज अपने को मालामाल कर
मानुस तन मिल्यों चोखो लागो दाव रे
राम राम राम भज राम को रिझाव रे
राम भज राम भज राम भज बावरे
राम राम राम राम राम राम गावे रे

157

ले ले राम को नाम प्रभु का हो जाना
वही गंगा अविराम सुखद दर्शन पाना
क्यों भटक रहा है इधर–उधर बौराया सा
बेचैन हाल बेहाल लुटा भरमाया सा
क्यों होता है बदनाम तरस कुछ तो खाना
ले ले राम को नाम...
क्यों थक कर बैठ गया पथ में क्यों हार गया
समझ सदा नहीं आज तलक एक सार गया
फिर काहे का विश्राम ध्यान हरि का लाना
ले लो राम को नाम...
तेरे तो कुछ नहीं सभी कुछ भगवान का
करदे सब कुछ अर्पण लगाव जो जीवन का
दया सिंधु सुख धाम भजन उनके गाना
ले लो राम को नाम...
जहां हरि कीर्तन भजन ध्यान का झरना है
चिंता का क्या काम मगन हो रहा है
प्रातः हो या शाम प्रेम रस बरसाना
ले लो राम को नाम...
सत्संग नौका में बैठे पार भव है तरना
शुभ कर्मों का फल है मीठा, पर दुख हरना
भजो बनो घनश्याम राम का दीवाना
ले लो राम को नाम...

158

म्हाने तो राम नाम नीको लागे रे
नीको लागे नीको लागे नीको लागे रे
मीराबाई पीयो विष को प्यालो नटनागर की अमिय कर डालो
प्रेम रस आगे सभी फीको लागे रे
फीको लागे फीको लागे फीको लागे रे

म्हाने तो राम नाम

उलटा भजो चाहे सुलटा भजो तुम
लेकिन भजो पर मन से भजो तुम
लोक दिखावो म्हाने तीखो लागे रे
सदन कसाई तारे शबरी तारी
नरसी जीकी हुंडी सिकारी
राम रंग म्हाने तो चोखो लागे रे
चोखो लागे चोखो लागे चोखो लागे रे
म्हाने तो राम नाम नीको लागे रे

भजले रे मन जय जय राम को

निश्चित पहुंचे परमधाम को
बाकी तो म्हाने सब धोखो लागे रे
धोखो लागे धोखो लागे धोखो लागे रे
म्हाने तो राम नाम नीको लागे रे...
159

जयजय राम की जयजय राम की नित उठ बोलो जय जय जय
जनक नंदिनी मात जानकी हनुमान की बोलो जय
प्रथम वंदना गुरु चरणों की मात पिता की ना भूलो
प्रेम प्यार से रहना मिलजुल गर्व हिंडोला ना झूलो
आशीवादों की गंगा में अवगाहन करना निर्भय
जनक नंदिनी मां की जानकी...
डगमग डगमग पग पग मनवांछित हो पुष्पित सुंदर मृदुल सरल
मधुर मधुरतम अमृत बनता सचमुच मे ही विषम गरल
रोगी पीडि़त दुखी जनो का होता निश्चय भाग्योदय
जनक नंदिनी मात जानकी...
जीवन के संघर्ष क्षेत्र में जीत कभी तो हार कभी
अभिशापो का भार कभी मुद मंगलमय उपहार कभी
जो ना खोते धीरेज साहस क्या कर सकता महाप्रलय
जनक नंदिनी मात जानकी...
ब्रह्मा देखो विष्णु देखो शंकर जी जपते राम राम
सकल लोक में एक धुनि है राम राम भज राम राम
राम ही दाता राम ही त्राता राम का नाम सदा अक्षय
जनक नंदिनी मात जानकी...
लाखों वर्ष व्यतीत हो गए राम नाम है अजर अमर
भक्तजनों का तो क्या कहना पापी भी गए पार उतर
पल-पल क्षण क्षण भजो राम घनश्याम जा रहा बीत समय
जनक नंदिनी मात जानकी...

160

ले ले राम को नाम समय का भाग रहा घोड़ा
चिंता की कोई बात नहीं चाहे ले लेना थोड़ा
चेत रे मनवा चेत आ रहा अंधड़ और तूफान
क्या खोया क्या पाया अब तक दिया नहीं कुछ ध्यान
झूठे सुख भोगो के खातिर पीछे पीछे दौड़ा
चिंता की कोई बात...

भाई बहन कुटुंब कबीला सब स्वारथ के मीत
संग संग तेरे रहे रे प्राणी जब तक तेरी जीत
हीरे मोती छोड़ बावरे चुगता कंकर रोड़ा
चिंता की कोई बात...

कितना कर्ज प्रभु का प्यारे नहीं कुछ सोच विचार
हरि भजन से ध्यान ज्ञान से खुलता मुक्ति द्वार
गुरुजनों की मात पिता की सेवा में मुंह मोड़ा
चिंता की कोई बात...

करो भलो का संग कमाई सत्संग की करना
करो भला, मत करो बुरा, शिक्षा हिय में धरना
भक्तजनों का क्या कर सकता है यम का कोड़ा
चिंता की कोई बात...

प्रेम प्यार के स्नेह ममता के फूल खिलाओ भैया
घर-घर में किलकारी मारे सुख कुंवर कन्हैया
घनश्याम करो लेखा-जोखा धन कितना है जोड़ा
चिंता की कोई बात...

161

राम नाम की सुधड सलोनी अद्भुत सुंदर पालकी
चढ़े उतारे पलक में निश्चय कृति कमाल की
कवि कोविद ऋषि मुनि सब हारे
पार ना शक्ति का पाया
किसकी देन ये भेंट अलौकिक सोच सोच मन बौराया
ऐसी वरदा वस्तु अमोलक प्रियतम प्रभु विशाल की
चढ़े उतारे पार पलक में...

आगे बढ़ना बढ़ते जाना
चिंता की कोई बात नहीं
मंजिल दौडी दौडी आए
सदा उजाला, रात नहीं
रात की जोत है जगमग जगमग ज्यो बिंदिया हो भाल की
चढ़े उतारे पार पलक में...

कठिन कठिनतम कारज पल में
हो जाते हैं सहज सरल
अनायास ही मन के संशय
विघ्न भरम जाते हैं जल
किस्मत संवर संभल जाती है सचमुच हाल बेहाल की
चढ़े उतारे पार पल में...

मन का पंछी देख रे पगले
तीव्र वेग से उड़ता है
शेष समय के भाग में क्यों तू
मन ही मन कुढता है
राम नाम की टेर तनिक सी हरे पीर कलिकाल की
चढ़े उतारे पार पलक में...

अब ना देर करो रे भैया
समय भागता जाता है
यह अनमोल खजाना अनुपम
व्यर्थ लुटाया जाता है
भरो पोट घनश्याम अभी भी राम नाम के माल की
चढ़े उतारे पार पलक में...

162

दौड़ रहा है तीव्र वेग से जीवन का पहिया
करना लेखा जोखा अब कितना दिया लिया
खोया बचपन यौवन खोया
बना रहा अनजाना
मल मल हाथ शीश को धुन धुन
पड़ेगा अब पछताना
बहुत तेल घृत था दीपक में क्यों ना जला दिया
करना लेखा जोखा अब...
पिछले जन्मों के कर्मों का
फल है दुख सुख पाना
पढ़ा सुना है वेद शास्त्र में
जीवन सुखी बनाना
राम नाम रस अमृत पीकर करना धन्य जिया
करना लेखा जोखा अब...
बीत गया फिर कभी ना पावे
वर्तमान जाता
कल भी व्यर्थ चला जाएगा
हाथ ना कुछ आता
सोच सोच में बहा जा रहा अमृत का दरिया
करना लेखा जोखा अब...
चल उठ तज दे हीन भावना
मन की कायरता
महक उठेगी बगिया सारी
मधुरिम रस झरता
प्रभु की अनुकंपा से रंग ले मैली चादरिया

करना लेखा जोखा अब...

सब शास्त्रों का सार एक है
राम नाम भजना
प्रेम प्यार के मधुर तरानों
साजो सा बजना
नाचेंगे घनश्याम राम मस्ती में सांवरिया
करना लेखा जोखा अब...

163

काहे को फिकर कर काहे की चिंता भाई
सबै दिन जात नहीं कभी इकसार
बारह बरस बाद चेतन होय कुरड़ी भी
बड़े-बड़े महलों की आवे कतार है
कभी चढे ऊपर तो नीचे भी आना पड़े
ईश्वर की लीला का कुछ नहीं पार है
जन्म दियो है तो पालन करेगो वो
उनसे बड़ा ना कोई और रखवार है
काहे को रोता है हाथ पैर कूट-कूट
समय का चक्र है यह दीनन का फेर है
बुरे दिन आए हैं तो नीके भी जरूर आवे
प्रभु के विधान में ना रंच अंधेर संग कर संतों का जाप कर हरि का
भजन कर राम का वो देता ढेर ढेर है
न्याय की तराजू पर सबका वो तोल करें
भक्तों की आंठो पहर सुनता वो टेर है

164

आज तेरे भक्तों पे कष्ट घोर छाय रहयो
कोई ना दिलासा देखते सभी बने मौन है
दुष्ट अनाचारी अत्याचारी का बाजार गर्म
खुशियों के कलरव से गूंज रहे भोन है
भाई का भाई बैरी मित्र दगाबाज बना
कैसी यह चाहत त्रासददायक चल रही पौन है
कब तक सहोगो भार दुष्ट और पापियों के
तेरा जैसा हितु मीत नाथ और कौन है
राम को ना माने और रहीम को न माने कोई
उनके लिए अर्थ नहीं रखता कुछ श्याम है
दिन रैन विषय भोग रोग से ही ग्रस्त रहवे
तारुणी और वारुणी से आठो याम काम है
हिंसा चोरी सीनाजोरी लूट में ही मस्त रहे
आज सब लोग बने इनके गुलाम है
आओ नाथ रौद्र रूपधार महाकाल बन
भक्त गण अविराम करें पाहिमाम है

165

बड़े-बड़े महलों में संपदा अपार भरे
घर तेरो दास दासियों से भर जाएगो
सुख भोग तेरे चारों ओर मंडरात फिरे
चकाचौंध उनकी से मन हर जायेगो
मानुस जन्म पाए करले हरि से हेतु
चेत चेत नर तेरो जीवन संवर जाएगो
ना जाने किस पाल मौत को संदेश आवे
पतझर के पात सो तू झर जायगो
धन संपदा को पाय काहे को बोराय रहयो
काहे को इतनी तू अकड़ दिखात है
जड़ पेड़ तक देख फल पाए झुक जाए
तुझमें तो बुद्धि का प्रकाश जगमगात है
किये होंगे पुण्य कर्म तभी नर देह मिली
उसको भी मूढ अरे व्यर्थ में गंवात है
याद रख जो भी कुछ प्रभु की ही माया सब
उनके हुकुम बिन हिलता ना पात है

166

जिनके ना राज्य में सूर्यचंद्र अस्त होय
ऐसे ऐसे भूपाल छोड़ गए महि को
धन वैभव के अटूट भंडार भरे
तृप्ति मिली नहीं जिनकी मन चहीं को
और सब असार सार नाम केवल राम को
निश्चित कर जानले यह संतों की कही को
पल-पल कीमती पानी सो बहतो जाए
गई सो गई अब राखले रहीको
किसने बनाये ये सूर्य चंद्र तारे सभी
किसने भरा इनमें इतना प्रकाश है
किसने दिया रंग रूप इन पुष्पों को
किसने भरी इनमें इतनी सुवास है
कोयल की कूक कहीं मस्त मोर नाच रहे
घर-घर अंगना में छाया उल्लास है
ऐसे प्रभु की नित वंदना करो रे प्राणी
जिनका रे अणु अणु कण-कण में वास है

167

करो संतों का संग भर मन में उमंग
खिल जाएगी उर की कली कली
करो दुश्मन से जंग कर नित सत्संग
जीभ राम राम भजती लगेगी भली
नहीं ओर कोई रंग ठहरे राम के पासंग
नाव जीवन की परले पार चली
यम हो गया है तंग खड़ा है बेबस भुजंग
लख मस्तक पे कर घनश्याम का बली
नाचे धरती गगन बहे शीतल पवन
कण कण में है एक धुनि राम राम राम
झूम झूम उठे तन पुलक-पुलक जाय मन
कहीं हर्ष ना समाय राम नाम अभिराम
यह कैसी लगन सारी सृष्टि मगन
पी अमृत के कण मिले प्रभु सुख धाम
ले ले राम की शरण गहले नाम के चरण
भव बंधनो से मुक्त हो जाए घनश्याम

168

तीन लोक बीच माही नाम जिनके गूंज रहे
ऐसे राम भक्तों के रंग अंग रंगना
महल खजाने भरे हीरे पन्ने मुतियन के
भरो पूरो परिवार कोई जावे संगना
सोचले समझले गुण ले परख ले
बजने दे मस्ती में राम नाम कंगना
कहे घनश्याम सुनो राम को प्रभाव ऐसो

भूल कभी आवे नहीं पतझार अंगना
बड़े-बड़े संकट के पर्वत हो चूर-चूर
कारे कारे मेघा भी नाम लेते छंट जाये
अरि दल भाग पड़े देखे नहीं पीछे मुड़
राग द्वेष मत्सर की किश्तियां उलट जाए
टेढ़े मेढ़े कांटो भरे दुष्कर अगम्य पथ
सहज सुगम्यता के फूलों से पट जाए
कहे घनश्याम यार मत कर मार मार
होयेंगे पार जो भी राम राम रट जाए

169

काहू को ना देखा मैंने सुना नहीं आज तक
सोने अरु चांदी की रोटी कोई खाया हो
कुंदन सा तेज दिपे कंचन सा लाल तन
अजर अमर लाल किसी ने भी जाया हो
कहावत पढी है मैंने पुस्तको में कई बार
पाया किसी को नहीं तारे तोड़ लाया हो
धन्य है वो लोग धन्य धन्य परिवार सारे
जिनने अनमोल राम नाम धन पाया हो
भव भय मेटत जाल जंजाल हरे
कण कण में व्याप रहे सर्वज्ञ राम है
अनंत गुण खान और प्रेम के निधान है
जड़ चेतन में विद्यमान और पूर्ण अभिराम है
सूर्य चंद्र तारे जिनके इंगित पे नाच रहे
सकल सुख धाम पर रहते निष्काम है
ऐसे पुरुषोत्तम के चरणार्विंदो के
दर्शन को आकुल व्याग्र आतुर घनश्याम है

170

जिनका न ओर छोर अखंड अनादि आदि
गोचर अगोचर जो निराकार साकार
जैसा भी रूप भावे ध्यान में उतार लो
वैसे ही वेष में करेंगे पर मझदार
प्रभु भक्त वत्सल है ममता से भर पूर
स्नेह से ओत–प्रोत करुणा के आगार
घनश्याम पल्लू पकड़ राम नाम का
जन्म जन्मांतर के बंधन हो क्षार क्षार

171

राम का नाम मंगलमय दया के धाम है भगवान
ये जीवन ही हरेक स्वांसा राम का नाम ले छिन छिन
ना जाने दो कभी खाली सुधारस से भरा प्याला
ली जिसने एक भी चुस्की हुआ अलमस्त मतवाला
अलौकिक प्रेम की मस्ती से भर भर जाता घर आंगन
ये जीवन ही हरेक...
भरा पथ शूल कांटों से कि चलना भी बड़ा दुष्कर
यकायक ऐसा लगता है कि मंजिल आ खड़ी दर पर
करिश्मा नाम का प्यारे उजालों से भरा कण कण
ये जीवन ही हरेक...
अंधेरा घोर छाया हो अमा की रात हो काली
निशाचर घूमते पग पग विकट डग डग बना डाली
अकल्पित दिव्य शक्ति से महक उठता भवन उपवन
ये जीवन ही हरेक...
जहाँ हरि नाम के गायन उछाह उत्सव के हो मेले
ना डर भय हो तनिक संशय सदा खुशियों के ही खेले
भगत के प्रेम पागल बना फिरता प्रभु का मन
ये जीवन ही हरेक...
राम के नाम की महिमा कहां तक कोई गाएगा
जो भूले से भी ले लेगा उतर भव पार जाएगा
ये मन घनश्याम का प्रतिपल करें हरि नाम का सुमिरण
ये जीवन ही हरेक...

हरि का नाम जप लेना राम का नाम ले लेना
ये जीवन की मधुर घड़ियां अकारथ ही ना खो देना
तनिक एकांत में बैठो करो चिंतन मनन मंथन
कि किसने भेजा किस कारण मिला किस हेतु येनरतन
मिली बिन दागी चादरिया इसे उजली ही धर देना
रे जीवन की मधुर...
अनको पुण्य कर्मों का है फल स्वर्णिम मिला अवसर
ना खोना तेरी मेरी में भला जन जन का करना कर
रहो चेतन सजग हरदम पड़ी पीछे अरि सेना
ये जीवन की मधुर...
जब आये हाथ थे खाली ना जाये साथ एक पाई
जगत के झूठे भोगों बुद्धि तेरी भरमाई
प्रीत सांचे से कर लेना कभी दुख दर्द पइयेना
ये जीवन की मधुर...
करो तुम प्रेम का व्यवहार ना कुछ द्वेष हो मन में
खिलेंगे फूल खुशियों के बहार आए जीवन में
मधुर बोली में है भगवन कभी कटु शब्द कहियेना
ये जीवन की मधुर...
चलो हरि नाम के मंदिर करें कीर्तन भजन गायन
नहीं घनश्याम अपना कुछ करो सब राम के अर्पण
पड़ी मझदार में नैया राम का नाम ले खेना
ये जीवन की मधुर...

173

उठाओ लुफ्त जीवन का भजो हरि नाम निशिवासर
भरा हरि नाम में जादू जरा देखो तनिक चख कर
ये गंगाजल से भी पावन हरे त्रिताप निश्चय ही
नहीं उपमा कोई इसकी अमोलक वस्तु सचमुच ही
तरे पापी अधम जन तक चले पत्थर भी जल ऊपर

भरा हरि नाम...

औषधि है चमत्कारी सुधारस से भरी गागर
भयंकर रोग कैंसर तक हुए नाबूंद छू मंतर
आज पारसमणी अद्भुत लोह कंचन बना छूकर

भरा हरि नाम...

ये हीरे मोती कंचन सी मिली काया तुझे रे नर
नहीं सुख भोग के खातिर यतन उस धाम का भी कर
ना जाने कब कहां किस दम संदेशा मौत दे आकर

भरा हरि नाम...

अभी भी जो समय बाकी ना खो भज राम पाल क्षण क्षण
करो कीर्तन भजन गायन कि मस्ती में भर कण कण
प्रभुजी भक्तवत्सल है दया की दृष्टि है सब पर

बड़ा हरि नाम...

यदि विश्वास श्रद्धा से राम का नाम लो भैया
तो सच है पार लग जावे भंवर में डूबती नैया
लो नाचो गाओ ले झांझर बनो घनश्याम के चाकर

भरा हरि नाम...

174

गली गली में डगर डगर में गूंजे घर-घर में नारा
श्रीराम चंद्र की जय हो जय हो जन जन का प्रियतम प्यारा
लाखों वर्ष व्यतीत हो गए
जिनकी छाप अमर अब तक
जादू वही जो सर चढ़ बोले
भूल ना पाये आज तलक
रामराज्य की गौरव गाथा यश गरिमा वैभव सारा
सदा चंदनिया वायु बहती
रोग शोक नहीं ताप जहां
हर्ष उल्लास फिरे चहू तरफा
पाप ओर अभिशाप कहां
एक दूसरे पर न्योछावर ऐसा था भाई चारा
प्रेम के झरने झरते अविरल
शत्रु भाव ना तनिक जरा
अपनापन थागैर ना कोई
ऐसा अनुपम चाव भरा
सिंह गाय संग संग थे फिरते महाकाल फिरता हारा
सभी सुखी थे नहीं कहीं भी
लेश दुखों की थी छाया
सुर तक ललचाते आने को
रामराज्य अद्भुत भाया
आनंद नाचता मस्ती में दे दे ताली द्वारा द्वारा
आज संजोए सपने हमने
रामराज्य को लायेगे
दुख से भरी हुई नगरी को
अमृत मयी बनाएंगे
घनश्याम कहे कहो राम राम का किसने पाया है पारा
श्री रामचंद्र की जय हो जय हो जन जन का प्रियतम प्यारा 175

राम मंदिर तरफ बढ चले हैं कदम
राम मेरा धरम राम मेरा करम नहीं रोके रुकेंगे बढे जाएंगे
लक्ष्य अपना नहीं जब तलक पाएंगे
कोई कुछ भी कहे नहीं इसका है गम

राम मेरा धरम...

राम की है मेहर राम की है दया
आश पूरी हुई जो भी दर पे गया
देता भर भर के झोली नहीं कुछ कम

राम मेरा धरम...

जैसी करनी है वैसी ही भरनी पड़े
सत्य जीवन का क्या सोचते हो खड़े
अच्छा सोचो करो जब तलक दम में दम

राम मेरा धर्म...

सद विचारों से जीवन में आये बहार
लूटाते चले जाओ जी भर के प्यार
मिट जाएंगे सारे संशय भरम

राम मेरा धर्म...

दिल से पुकारो चला दौड़ आये
घनश्याम दुख दर्द पल में मिटाये
सच्चे है साथी करेगा क्या यम

राम मेरा धर्म...

भजले रे राम जपले रे श्याम
राम को मितवा करले प्रणाम
काहे को यहा वहा भ्रमता फिरे
नयनन से ढर ढर अंसुवन ढरे
प्रियतम को याद करो सुबह ओर शाम

राम को मितवा...

सकल चराचर स्वामी है साजन
ऐसे प्रभु का करो रे आराधन
रक्षा को तत्पर सदा सुख धाम

राम को मितवा...

काहे की चिंता काहे की फिकर
दुख दर्द गम से काहे का डर
हारे थके को मिले विश्राम

राम को मितवा...

जो जो भी दर पर खड़ा हो पुकारे
व्याकुल व्यथित नाम का ले सहारे
आते हैं दौड़े करुणा निधान

राम को मितवा...

रहे याद पल पल ना बिसरे कभी
यहां भी वहां भी कहीं भी किधर भी
अखंड नाम में लो लगे घनश्याम

राम को मितवा...

177

भय बिन होत प्रीत सखे
अरु दंड बिना नहीं होत हकुमत
मार बिन नहीं भूत कंपे
नहीं अन्न बिना होवे तन में सत
नहीं रोग मिटे बिन कड़वी औषध
रार करें कलही नित बिन बत
बिन प्रेम किए सिया राम जू से
घनश्याम डरे का होवेगी गत
क्यों भ्रम जाल में मूढ फंस्यो तू
काम क्रोध मद सेवत दिन रत
सीख की बात ना तेक सुने
नहीं मुख से मीठे बोल ही बोलत
मन में रमी रस राग की मूरत
धनु आधारी सियाराम ना चितवन
कौन धणी घनश्याम कहे तव
कौन ही आन बचा वहिगो पत

178

राम नाम नौका से भव तरले मुश्किल असंभव भी काज सरले
काहे को बेचैन इतनी निराशा
कहां खो गई है जीवंत भाषा
राम राम महामंत्र उर धरले

राम नाम नौका...

डगमग डगमग काहे को पांव
हाथों में कंपन मूर्छित उधाव प्राणों में राम नाम रस भरले

राम नाम नौका से...

संकट बला सब होंयेगे दूर
जीवन में मस्ती का छाये सरुर चुटकी में पाप–ताप शाप हरले

राम नाम नौका से...

बुराई से बचना ना कुकृत्य करना
जहां तक बने कर्म अच्छे ही करना
भक्तों के नित राम खैर खबर ले

राम नाम नौका से...

प्रभु भक्त वत्सल है करुणा के आगार
घनश्याम रक्षा को हाजिर है तैयार
क्यों ना ऐसे सांचे के पांव पकर ले

सब नाम नौका...

179

मैं देख फिरासंसार में कहीं अपना पन नहीं पाया
कहीं अपनापन नहीं पाया रे कहीं अपना नहीं पाया
चारों ओर देख लिया मतलब की यारी है
स्वार्थ मनमोहक तेज धार आरी
छुप छुप के वार करे ऐसी कटारी है
सब पड़े हुए मझदार में पतवार न बन कोई आया
मैं देख फिरा संसार...
कैसा ये विश्व देव तूने रच डाला
स्वार्थ से परिपूर्ण हाल बेहाल है
ऊपर से उजला और अंदर से काला है
क्यों डाला कारागार में क्यों प्रेम भवन नहीं भाया
मैं देख फिरा संसार...
ऊपर से बात करें मीठी प्यारी भाव भरी
करनी में फिर भेदभाव मन में कुभाव धरी
मन भाया खेल-खेल मन में दुराब करी
छल छद्म भरा हर द्वार में क्यों मैली दर्पण काया
देखा फिरा संसार...
संत मुनि बतलाते भेद सब खोल खोल
नर तन पाया है हीरा सा अनमोल
जन जन में प्रेम का अनोखा दे रस घोल
महकेगा अनुपम प्यार में बगिया का कण कण जाया
मैं देख फिर संसार...
प्रेम का प्रकाश मीत तम का करेगा नाश
छलक छलक जाए रे हर्ष और उल्लास
अंतर में ज्ञान का ध्यान का ले दीप चास
घनश्याम खड़ा बाजार में मस्ती में प्रेम गुण गाया
मैं देख फिरा संसार...180

कब तलक सोते रहोगे जागो भजलो राम को
हर घड़ी हर पल खबर ले भूलना ना राम को
दुख में और सुख में जो साथ तेरे हर कदम
नाम सुमिरण मात्र से मिट जाएंगे संशय भरम
तर गए अनगिन अधम जप कर श्रवण हरि नाम को
हर घड़ी हर पल खबर...
जब कभी फुर्सत मिले नहीं नाम का हो विस्मरण
जागरण में सपन में ना छोड़ना प्रिय के चरण
भक्तों के हाथों बिक गया बिकता रहा बिन दाम को
हर घड़ी हर पल खबर...
चारों दिशाओं में गगन मेदिनी उद्यान में
प्राण प्रियतम की छवि पुष्पों में कोकिल गान में
कंदरा में हृदय की रखना सदा सुख धाम को
हर हर घड़ी हर पल खबर...
तनिक से भूभंग से होता सकल सृष्टि का लय
अखिल लोकों में रही हो राम की जय राम की जय
लक्ष्य जीवन का भजन करना तजो आराम को
हर घड़ी हर पल खबर...
किसलिए नर तन मिला सोचो जरा समझो जरा
अध्ययन शास्त्रों का करो गुरु वृंद से पूछो जरा
सब ग्रंथियां खुल जाएगी करलो नमन घनश्याम को
हर घड़ी हर पाल खबर...

181

आओ आओ पुकारू हे राम प्रियतम
आओ बेगा ओ त्राता हरो कष्ट गम
प्रतीक्षा में कब से खड़ा नाथ तेरी
हुई क्या खता हो रही क्यों है देरी
तार दिए अनगिन पापी अधम

आओ बेगा...

तेरी कृपा दया का हूं याचक
दृष्टि तुम्हारी तरफ राम एक टक
कुटिया को पवन करो प्राण धन

आओ बेगा...

तेरी माला जपूं ध्यान तेरा करूं
हर घड़ी रैन दिन गान तेरा करूं
कभी तो पड़ेंगे प्रभु के कदम

आओ बेगा...

आशा है विश्वास श्रद्धा लगन
फली भूत होगी तपस्या भजन
मिटेंगे मिटेंगे संशय भरम

आओ बेगा...

खड़ा द्वार पर आरती की ले थाली
प्रेम अमृत भरी भावनाओं की प्याली
घनश्याम रग रग में जाओ रे रम

आओ बेगा...

182

राम का नाम प्यारे अजब है गजब
नाम जपने की मन में लगे रे तलब
गई बहुत सी थोड़ी उम्र
कूच करने का आया समय क्या खबर
खो रहे पल सुनहरे करो कुछ भी अब

राम का नाम प्यारे...

खूब खेल लिया जिंदगी का मजा
अपने कर्मों की मिलती यहीं पर सजा
अंत मिट्टी में मिलना ना करना गरब

राम का नाम प्यारे...

कभी सोचा नहीं कुछ विचारा नहीं
नाम से श्रेष्ठ कोई सहारा नहीं
धरे ही रहेंगे अरब और खरब

राम का नाम प्यारे...

यह हस्ती ये मस्ती सिर्फ चार दिन की
ये काया ये माया रही किसकी किनकी
भजन फिर प्रभु का करोगे रे कब

राम का नाम प्यारे...

हाथ मलमल के सिर धुन के पछताएगा
समय जब हाथ से निकल जाएगा
घनश्याम गुरुजन से पूछो अदब

राम का नाम प्यारे...

183

राम राम भजने का मन में हो चाव
जीवन में निश्चय ही आवे बदलाव
कितनी है शक्ति कितनी है भक्ति
राम-राम में है कितनी अनुरक्ति
देखते है राम कुछ करके दिखाव

राम राम भजने का...

तेरे सब कामों पर रखना नजर
पल-पल की क्षण की लेता खबर
भूलकर नाम प्रियतम से करना दुराव

राम राम भजने का...

सत्संग करना राम रंग रंगना
प्रेम प्यार सेवा के बजने दे कंगना
प्यासों को प्रेम का सुधारस पिलाव

राम राम भजने का...

आनंद के मंगल के डमरु बजेंगे
अंगना में उत्सव के घुंघरू सजेगे
अंग अंग भर जाए मस्ती का भाव

राम राम भजने का...

राम रस चखता जो होता निहाल
अद्भुत भी निराला अनोखा है माल
घनश्याम नाच रहा भर भर उछाव

राम राम भजने का...

184

छोटी-छोटी बातें बन जाती पहाड़ सी
मन बड़ा धोखेबाज बड़ा चालबाज है
जब आता चक्कर में कलह प्रिय बातों के
हित की ना एक सुन पड़ती आवाज है
भृकुटी तन जाती है बुद्धि हर जाती है
छिन्न भिन्न हो जाता जीवन का साज है
कानों को काट खावे ऐसा मोह कंचन से
क्यों ना ऐसे जीवन पर पड़ जावे गाज है
अनुकूल प्रतिकूलता में रहवे नित सम
ऐसा पुरुष ही यथार्थ इंसान है
सुख में ना आनंद दुख में ना शोक माने
तर्कों से रहवे दूर राखें शान है
तृण के समान होवे मोह नहीं गुरुता का
मान अपमान का ना राखे कुछ ज्ञान है
ऐसो की चरण धूल मस्तक पर धार ले
नर वेष मे रे देख संत भगवान है
मेरे मन मंदिर के प्रियतम आराध्य देव
कब तुम मिलोगे छवि में मंजुल दिखलाओगे
नयनो पर पर्दा आज्ञान का पड़ा है जो
कृपा कर नाथ कब उसको हटाओगे
व्याकुल बहुत विरह ताप की जलन से
प्यासे को शीतल सुधा नीर कब पिलाओगे
एक पल नहीं चैन प्रभु घनश्याम को
धार धनुष बाण राम बोलो कब आओगे
185

राम का नाम भैया आति सुहाना
हरे कृष्णा हरे राम भजते ही जाना
घर में हो बाहर या चाहे वन मे
तार ना टूटे कभी भूल के सपन में
लौ उनके चरणों में ऐसी लगाना

हरे कृष्ण हरे राम...

धधकता अनल कुंड चाहे हो सम्मुख खड़ा
विकट मुंह बाये खडा हो महा दुख
तनिक भी ना डरना नहीं डगमगा ना

हरे कृष्णा हरे राम...

पथ हो कंटीला बियाबान जंगल
निर्भय चलाचल करे प्रभु मंगल
प्रेम का दीप कभी बुझने ना पाना

हरे कृष्णा हरे राम...

जीवन तुम्हारा सफल होगा निश्चय
राम कृपा से मिट जाए सारे संशय
भक्ति की गंगा घर-घर बहाना

हरे कृष्णा हरे राम...

घनश्याम मदहोश पी नाम मस्ती
अनमोल हीरक मणी कितनी सस्ती
जीवन की सांसों का नहीं कुछ ठिकाना

हरे कृष्णा हरे राम...

राम नाम लेने मे क्या लागे
सांचों प्रभु को भजन मीत जावे सागे
सकल सुखों का धाम राम क्यों भूल गया
मिथ्या नश्वर धंधों मे फंस कर फूल गया
अच्छे कर्म सदा आवे तेरे आगे
राम नाम लेने मे तेरा क्या लागे
क्यों डोल रहा तेरी मेरी के चक्कर में
टूट रही जीवन तरणी भव टक्कर
झूठे सुख भोगों के पीछे क्यो भागे
राम नाम लेने मे तेरा क्या लागे...
भाई बंधु कुटुंब कबीलाई ना तेरे
कंचन सुंदर नार भवन सब सपना रे
बिखर जायेंगे तिनके से कच्चे धागे
राम नाम लेने मे तेरा क्या लागे...
जिसको तूने मान सदा अपना रक्खा
क्षण भंगुर है जिसको मीठा कह चक्खा
खाक बने तन गिद्ध चील खावे कागे
राम नाम लेने मे तेरा क्या लागे...
नर तन पाया बड़ी है ईश्वर की
राम नाम भज बांह पकड़ धनुआधर की
मिल जाये घनश्याम भाग्य तेरे जागे
राम नाम लेने मे तेरा क्या लागे...

187

तुम बिन जाने कौन रामजी मेरे मन की पीर
तुम सर्वस्व मेरी हो स्वामी बंधु प्रिय रघुवीर
एक भरोसा एक है आशा
एक प्रभु मेरी अभिलाषा
प्यास लगी तेरे दर्शन की कहां मिलन का तीर

तुम बिन जाने...

किसको मन की व्याख्या बताऊं
किसको अपनी कथा सुनाऊं
अंतर्यामी तुम बिन बोलो कौन बंधावे धीर

तुम बिन जाने...

आग लगी है तन मे मन में
ज्वार उठा है मम जीवन में
धधक रही ज्वाला में डालो शीतल गंगा नीर

तुम बिन जाने...

चैन नहीं है क्षण भर एक पल
डोल रहा एकाकी बेकल
करो मेहर की नजर नाथ हरलो आरत की भीर

तुम बिन जानें...

रग रग में छाया सूना पन
नहीं कहीं दिखता अपनापन
घनश्याम बड़ा बेचैन राम दरश परस तम चीर

तुम बिन जाने...

घर घर में और डगर डगर में के अलख जगाता फिरता हूं
बहुत गई अब थोड़ी बाकी राम भजो यह कहता हूं
कौन है तेरा संगी साथी कौन तेरा नौकर चाकर
डोल रहा बौराया सा ठगिनी धन दौलत को पाकर
क्यों पैर कुल्हाड़ी मार रहा उठ जाग चेत कहफिरता हूं
बहुत गई अब थोड़ी...
ऊँचे-ऊँचे महल अटारी भरे खजाने रतनों के
चकाचौंध में भूल गया क्या हाल है अपने अपनों के
हृदय अंदर छुपा प्रेम रस गट गटपी कह फिरता हूं
बहुत गई अब थोड़ी...
आज का सूरज तूने देखा देखे ना देखे कल का
स्वांस का पंछी कब उड़ जा रे नहीं भरोसा क्षण पल का
काल का धौसा बज रहा सर पर आंख खोल कह फिरता हूं
बहुत गई अब थोड़ी...
जीवन कितना सुंदर पाया सरस मनोहर प्रेम भरा
कल कल निर्झर सा बहने दे हर कसौटी पर उतरे खरा
शंकर बन कर गरल सभी का पीता चल कह फिरता हूं
बहुत गई अब थोड़ी...
सच कहता हूं बार-बार फिर मिनखा देही नहीं पावे
सत्कर्मों की सत्य प्रेम की अमर कथा युग युग गावे
घनश्याम न्यौछावर मानवता पर सुनो गुणो कह फिरता हूं
बहुत गई अब थोड़ी...

189

कहां मेरी मंजिल कहां तेरा धाम
कहां छिप के बैठे सजन मेरे राम
व्याकुल अति डोलता बावरा बन
कहां तुम मिलोगे मेरे प्राण प्रिय धन
अतृप्त इच्छाएं पूरो तमाम

कहां मेरी मंजिल...

करूं रात दिन तेरे नामों की पूजा
सिवा तेरे हे नाथ कौन है दूजा
माला फेरू सदा तेरी मैं अविराम

कहां मेरी मंजिल...

मन मंदिर में आसन सजाये हुए
राह जोऊं पलक को बिछाए हुए
आओ करलो तनिक ही यहां विश्राम

कहां मेरी मंजिल...

क्या जाएगी घड़ियां प्रतीक्षा की बीत
गगरिया उमंगों की जाएगी रीत
मन की सरगम को दे दो मिलन का विराम

कहां मेरी मंजिल...

गंतव्य पथ का नहीं कुछ पता है
निश्चय ही मुझसे हुई कुछ खता है
स्वामी तुम हो बड़े क्या करे घनश्याम

कहां मेरी मंजिल...

आया हूं भर करके मन में हुलास
क्या पूरी होगी नहीं मेरी आश
संतो की भूमि सुरों का निवास
सद् वृत्तियों का होता विकास
भरता है जीवन में नूतन प्रकाश

क्या पूरी होगी...

प्रकृति नटी का है अद्भुत श्रृंगार
खड़ी मौन दुल्हन सी निज को संवार
अंग अंग छाया अलौकिक उल्लास

क्या पूरी होगी...

गिरवर खड़े किसकी पूजा में मौन
गंगा धोती चरण है महाभाग कौन
देते हैं अर्घ्य किसे धरती आकाश

क्या पूरी होगी...

कैसी कशिश यह कैसा लगाव
चेतन पर छाया है किसका प्रभाव
आया हूं दौड़ बिन प्रयास अनायास

क्या पूरी होगी...

क्या स्वामी दर्शन देंगे नहीं
पूरेंगे अभिलाष मन की नहीं
घनश्याम की क्या बुझेगी ना प्यास

क्या पूरी होगी...

191

चख चख चख चखले भैया राम नाम के फल
हर संकट में विपदाओं में बन संबल
मधुर मधुरतम इसका स्वाद
रैन दिवस करना जप याद
जीवन को ना कर बर्बाद
मानुस तन की मौज कभी ना फिर पावे पागल

चख चख चख...

नर तन पाया बेशक सुंदर
गर्व गुमान किसी का ना कर
माटी में मिल जाए रे नर
पल पल क्षण क्षण आयु छीजे ज्यों अंजुरी का जल

चख चख चख...

परम प्रभु की अनुपम थाती
मत कर गंदी दागी राती
कोई ना तेरा संगी नाती
कदम-कदम पर कांटे बिखरे चलना संभल संभल

चख चख चख...

साथ ना तेरे कोई आया
संग अपने ना कुछ भी लाया
बड़ी विचित्र राम की माया
करना जो भी झटपट करले किसने देखा कल

चख चख चख...

संग घनश्याम के नाचो गाओ
राम राम को कंठ लगाओ
अजर अमर पद पाओ पाओ
पूनम बने अंधेरी रातें अमृत बने गरल

चख चख चख...192

तेरी हो जावे नैया पार भजले राम राम
तेरो सुधर जाए संसार भजले राम राम
क्यों मोह माया के जाल में फंस कर डोल रहा
जीवन अमृत की खान विष रस घोल रहा
सकल विश्व आधार राम भज सुबह शाम
तेरो सुधर जाए...
उल्टे-सुल्टे धंधों की क्यों पाप कमाई खाई रे
हीरा सा अनमोल रतन क्यों माटी मोल बिकाए रे
तेरो हो जावे उद्धार राम भज आठो याम
तेरो सुधर जाए...
आया अकेला जाये अकेला साथ ना दमड़ी जाएगी
कंचन काया उजली चमडी राख भसम हो जाएगी
संग जावे ना संगी यार पिता सुत मात बाम
तेरो सुधर जाए...
गर्भावास के अंदर भैया किया था कौल करार
स्वांस स्वांस में भजूं मै तुमको मोहन कृष्ण मुरार
जब पड़ेगी यम की मार हवा हो जावे चैन हराम
तेरो सुधर जाए...
घिरे घटा संकट की कारी टूट पड़े तूफान
धीरज धरना कभी ना डरना बन जाना चट्टान
फूल बनेंगे सभी खार होवें जीवन सुख धाम
तेरो सुधर जाए...
राम नाम की हवा निराली शीतल सुखद अनोखी रे
हरती ताप त्रिविध भरती उर में आनंद अलौकिक रे
राम है सर्व शक्ति भंडार गाता मस्ती में घनश्याम तेरो सुधर जाए...
193

रात है गहरी लादे सवेरा
हे राम गाऊं मै गुणगान तेरा
विश्वास मेरा ना जाए खोया
तेरे भरोसे निश्चय सोया
छिन्न भिन्न करदे संशय का घेरा

हे राम गाऊं...

बहा जा रहा हूं बीच भंवर में
असहाय बेबस पड़ा हूं डगर में
नहीं सोच पाता हूं क्या होगा मेरा

हे राम गाऊं...

सभी छूट गए हैं मेरे सहारे
आन खड़ा स्वामी चरण तिहारे
शरण में मै आया अधम मूढ चेरा

हे राम गाऊं...

भक्तों को तुमने हरदम उठाया
बड़े प्रेम से पास अपने बिठाया
पुचकारा सर पर करुण हाथ फेरा

हे राम गाऊं...

तेरे नाम मंदिर का मैं हूं पुजारी
दरश दिखा दे धनुआधारी
मिट जाए घनश्याम का हेरा फेरा

हे राम गाऊं...

हे नाथ तेरा हूं तेरा रहूंगा
धूप छांव वर्षा सब कुछ सहूंगा
नामों की तेरी बना करके माला
पहनूं गले में मेरे नंदलाला
हर हाल में पग तेरा गहूंगा
धूप छांव वर्षा तब सहूंगा
मन मेरा बेचैन कल है ना एक पल
कब तुम मिलोगे हे भक्त वत्सल
तमन्ना यही संग तेरा चहूंगा
धू छांह वर्षा सब कुछ सहूंगा
सुख में ना भूलूं दुख में ना भूलूं
मद में कभी ना हे नाथ फूलूं
बिरहा अनल में कब तक दहूंगा
धूप छांह वर्षा सब कुछ सहूंगा
प्यासा हूं पानी शीतल पिलादे
पलकों की छैया दरश दिखादे
निष्ठुर बड़े हो कैसे कहूंगा
हे नाथ तेरा हूं तेरा रहूंगा
घनश्याम के तुम मन प्राण प्रियतम
लागी ना छूटे हे मेरे हरदम
जीवन का भरपूर रस में लहूंगा
हे नाथ तेरा हूं तेरा रहूंगा
195

लगाले लगाले लगाले लगन
राम के भजन में हो जा मगन
जीवन का स्वर्णिम समय आ गया
बीच गगरिया उमंगों की गई सब रीत
कब तक रहेगा बैठा होकर नचीत
बाकी बची में कुछ करले यतन
राम के भजन में हो जा मगन
भूल गया कभी किया किसी से करार
घोर नरक कुंड से किया था उद्धार
ऐसे प्रभु का तेरे सर भारी भार
दाता दयालु को करले प्रसन्न
राम के भजन में हो जा मगन
जितने भी रिश्ते हैं स्वार्थ भरे
कसौटी पर बिरले उतरते
भरोसा है जिनका निसंदेह तरे
सच्चाई को समझो कभी ना सपन
राम के भजन में हो जा मगन
आया अकेला है जाना अकेला
चार दिनों का है संगम मेला
भूल जा अब तक जो खेल खेला
परम पिता को करले नमन
राम के भजन में हो जा मगन
सांचो है मीत संग संग वो रहे
संकट विपध सब तेरी सहे
भक्तों के गैल फिरे बाहें गहे
घनश्याम के राम प्रियतम सजन
राम के भजन में हो जा मगन

196

नैया प्रभु मेरी तेरे हवाले
तम से घिरी है लादे उजाले
तूफान भारी रात कारी कारी
जलने लगे जैसे प्रलय रूप धारी
तेरा सहारा आके बचा ले
नैया प्रभु मेरी तेरे हवाले
भीषण तरंगे किनारे हैं ओझल
असहाय बेबस अब सारे संबल
तेरा भरोसा ओ मुरलीवाले
नैया प्रभु मेरी तेरे हवाले
होनी ने कैसे ये खेल खेला
नौके को मेरी भंवर में धकेला
कष्टों की दलदल कौन निकाले नैया प्रभु मेरी तेरे हवाले
अवलंब सारे छूटे हैं भगवन
आके बचालो कौशल्या नंदन
दुखिया हूं हे हरि गले लगाले
नैया प्रभु मेरी तेरे हवाले
घनश्याम के तुम तन मन जीवन
सर्वस्व तेरा सर करूं तेरा वंदन
पल ना बिसरूं चाहे कितना नचाले
नैया प्रभु मेरी तेरे हवाले

197

करले रे मनवा करले भजन
रक्षक तेरे राम लखन
नित उठ पहले करो नमन
भव तरने का सरल यतन
हंसती भू पर आई किरण
भरती कण-कण में पुलकन
नाच रही धरती नाचे गगन
आनंद में भर बहे पवन
खिल-खिल उठते बन उपवन
खुशबू से भर गए चमन
वृक्षों में छाया नवयौवन
विहग वृंद की कल कूंजन
झरने की कल कल गुंजन
एक नया देती जीवन
श्याम सलोने नभ में धन
बरसाते ढेरों अन्न धन
गंगा मां में अवगाहन
धन्य धन्य तीरथ दर्शन
व्यापक सब में राम सजन
भक्ति भाव से कर सुमिरन
गाता पद घनश्याम मगन
निश्चय दे भगवन दर्शन

टाबरां से कांई माँ रहो दूर-दूर
म्हाने जरूरत थारी भरपूर
विपदारी अंधियारी कौन मेटेला
नैया मझदार पड़ी कौन खेवेला
अंबे भरोसा तेरा हम मजबूर म्हाने जरूरत है...

हम हैं अबोध अनजान नादान
अच्छे बुरे की नहीं पहचान
संसार बन गयो निर्मम क्रूर म्हाने जरूरत है...

पग पग पे बाधा दुश्मन का जोर
असुरों का बोलबालात आज चहुंओर
बिजली सी टूट पड़ो हरलो गरुर म्हाने जरूरत है...

आओ आओ अंबे जग प्रतिपाली
कालकूट विष पीने वाली
भक्तों को दर्शन दीजो जरूर म्हाने जरूरत है...

तेरी दया के हम हैं भिखारी
चरण कमल के दीन पुजारी
तेरो विरद यश मशहूर म्हाने जरूरत है...

घनश्याम आये मां सब तेरे द्वारे
अंबे हरो दुख संकट सारे
बालकों की अर्जी करो मंजूर म्हाने जरूरत है...

199

राम के भजन बिन नहीं कही ठौर
राम के समान नहीं कोई हितु और
नाम ले ले राम का पापी हजारों तर गए
काम थे जो कठिन मुश्किल सहज ही में सर गए
छिद्र कश्ती के अनेकों आप ही से भरे गए
नाम लेने मात्र से संकट सभी हर गए
राम नाम अमृत समझ मनचोर
राम के भजन बिन कहीं नहीं ठौर
तो पापी अजामिल गिद्ध गणिका का हुआ उद्धार था
जो भी हुआ भव पार उनका राम नाम आधार था
जहर अमृत कर दिया कितना अनोखा प्यार था
बिन बीज खेतों में भरा अन्न का विपुल भंडार था
राम नाम यश सुन नाचे मन मोर
राम के भजन बिन नहीं कहीं ठोर
टेर सुन गजराज की नंगे ही पैरों आ गए
प्रेम से होकर विवश करमा का खीचड़ खा गये
तज दिए व्यंजन मधुर केले के छिल के भा गए
रूप धर-धर के नए भक्तों के मन में छा गए
धूम राम नाम की मची है चहू ओर
राम के भजन बिन नहीं कहीं ठौर
नरसी भगत हरि प्रेम इतने मगन थे हो गए
भूल कर घर बार सब सुधबुध सभी थे खो गए
जय जय हरि गोविंद की धुनि में सबों डूबो गए
भगवान भक्तों के लिए हरदम न्यौछावर हो गए
राम नाम प्रभु के कलेजे की कोर

राम के भजन बिन नहीं कहीं ठौर
पाया बड़े ही भाग्यवश नरतन अमोला बावरे
हर स्वांस में भज राम को प्रभु नाम का हो चावरे
बंधन सकल भव के कटे आनंद नित नव पावरे
श्री राम के चरणों में ले लो हो एक चित्त लगाव रे
भूल करना छोड़ भाई राम नाम डोर
राम के भजन बिन नहीं कहीं ठोर

200

बोल राम बोल राम बोलो रे राम
करो पहले नित उठ उनको प्रणाम
मन में नई एक उठेगी लहर
उमंगों से तन तेरा जाएगा भर
मुश्किल असंभव भी पूरण हो काम
करो पहले नित...

अपनों से कभी नहीं रहते वो दूर
कण कण में उनका छाया है नूर
सबके हितेषी है करुणा के धाम
करो पहले नित...

भक्तों का दुख नहीं सकता है सह
सुखों से कभी नहीं सोता वह
यहां वहां नहीं कहीं उनको आराम
करो पहले नित...

नाऊ बनता है कभी सांवलियों शाह
चीर बन आता उनके खेल वाह वाह
दुनिया निराली रची अभिराम
करो पहले नित...

नामदेव की कभी छाते हैं छान
पत्थरों में डाल दई शक्ति महान
इंगित पे होती सुबह और शाम
करो पहले नित...

रहती है पल-पल की उनको खबर
बुराई से डर नेक कर्मों को कर
ब्रह्म है विष्णु है वही घनश्याम
करो पहले नित...

201

जिस पर कृपा राम की होती उसका कौन बिगाड़ सके
जिस पर दया प्रभु की होती उसका कौन बिगाड़ सके
बनकर दूत राम का अंगद लंका पुरी सिधारा
वापिस कर दे सीता माता रावण को ललकारा
अंगद रोप दिया पग भू पर रावण नहीं उखाड़ सके
जिस पर कृपा राम की...
पवन पुत्र हनुमान बली ने कौतुक एक रचाया
जलादई सोने की लंका हा हा कार मचाया
दैत्य सभी मिल बजरंगी को नहीं पछाड़ सके
जिस पर कृपा राम की...
जन्म से लेकर मृत्यु तलक जो राम नाम के पास
सेवा में ही लगा रहा जो बनकर उनका दास
भातृ प्रेम का ध्वज लक्ष्मण सा कोई ना गाड़ सके
जिस पर कृपा राम की...
भस्मासुर को वर देकर शंकरजी भागे फिरते
बड़ी जुगत से मार असुर को शंकर का दुख हरते
ऐसे कार्य राम के अद्भुत कोई ना ताड़ सके
जिस पर कृपा राम की...
कण कण वासी प्रभु प्रियतम के गुण गाओ दिन रात
दास के सर पर बना रहे प्रभु तेरा प्यारा हाथ
जन्म मरण के कागज प्रभु बिन कोई ना फाड़ सके
जिस पर कृपा राम की...

202

स्वांस स्वांस में राम राम की गंग नहाता जा
गली गली में डगर डगर में अलख जगाता जा
राम राम वो मंत्र है तारक जिसने अनगिन तार दिए
पड़े हुए मझदार में थे जो उनको परले पार किए
जिनका नहीं सहारा कोई उनको भी आधार दिए
कठिन असंभव काज थे जिनके पलभर में ही सार दिए
भूखे राम भाव के भैया भजन राम के गाता जा
गली गली में डगर...

महा पात की कुटिल कामियों भी देखा परिवर्तन
हिंसक दस्युदल में पाई प्यासी प्रेम भरी तड़पन
लाल लाल आंखों में छलके पछतावे ममता के कण
मंत्र मुग्ध सा देख रहा जग राम नाम का आकर्षण
ले अवलंब महान मंत्र का कांटो में मुस्काता जा
गली-गली में डगर...

राम राम संजीवन बूटी जागा पत्थर में जीवन
लौह खम्म से प्रकट नरसिंह भगवन राम भजन कारण
धन्ना भगत ने कंकर बोये फूट पड़ा खेतों से अन्न
नरसीजी के आगे पीछे डोल रहे प्रभु पागल बन
श्री चरणों का ध्यान लगाये प्रेम सुधारस पीता जा
गली गली में डगर...

समय बीत जायेगा बंदे पछताएगा हाथ रे मल
कोटि जतन करले फिर भी ना पायेगा बीता रे कल
कंचन काया खाक बने माटी बन जावे रूप धवल
धिक्कार धिक्कार रे ऐसे जीवन का आना जग में हुआ विफल
उठ जाग चेत घनश्याम की सुन श्रीराम नाम लो लाता जा

गली–गली में डगर...

कदम बढ़ेंगे आगे तेरे मंजिल दौड़ी आएगी
मनोकामना पूरण होगी चिंता दूर भगाएगी
मन मंदिर में परम प्रभु की झांकी दिव्य दिखाएंगी
रोम रोम से जब ध्वनी केवल राम राम की आएगी
शेर वघेरों की बस्ती में मस्ती अजब दिखाता जा

गली–गली में डगर...

203

भजले ना राम प्राणी घड़ी दो घड़ी
बुद्ध तुम्हारी ली किसने हड़ी जाना है छोड़ छाड़ एक दिन सब
आवे बुलावा मौत का ना जाने कब
अरमान सारे रहेंगे धरे तब
सब के पिछाड़ी खड़ी की छड़ी

भजले राम राम प्राणी...

राजा हो रंक चाहे साधू फकीर
सबके गले में पड़ी मौत की जंजीर
जाना पड़ेगा करो लाख तदबीर दाएं बाएं आगे पीछे हंसती खड़ी

भजले ना राम प्राणी...

नरतन पाया है हंसते गुजार
बांट दे सबों को प्रेम भरा उपहार
संकटों से भूल कभी मानो नहीं हार
मस्ती में डूब जाए गम की लड़ी

भजले ना राम प्राणी...

छल छिद्रों से भरा संसार
धोखे का चलता जहां व्यवहार
संतोषी जीवन सुखों का है सार
मीठे-मीठे बोलो की शक्ति बड़ी

भजले ना राम प्राणी...

पानी के बुद् बुद् सा जीवन का मोल
देख जरा चहुंओर आंखों को खोल
ज्ञान के तराजू पर दुनिया को तोल
अद्भुत निराली राम नाम की झड़ी

भजे ना राम प्राणी...

लेलो लेलो राम की शरण घनश्याम
तन्मय हो गाओ भजन सुबह शाम
पाओगे निश्चय ही धाम अभिराम
भक्तों की लेते परीक्षा कड़ी

भजले ना राम प्राणी...

204

तेरी याद में राम हरदम मैं रोता
नयनो से बहता है आंसू का सोता
सोचा नहीं था इतने निठुर हो
मेरी वेदना से क्या बेखबर हो
लगता ना नेहा यदि ज्ञात होता

तेरी याद में...

सबही है रहते हो दीनबंधु
नवनीत सा उर है करुणा सिंधु
वही पाता मोती लगाता जो गोता

तेरी याद में...

नहीं सूझता कुछ फिरूं बावरा बन
दर्शन को आकुल बेचैन तन मन
खोया खोया विवसता की माला पिरोता

तेरी याद में...

सभी कुछ गंवाया क्या कर ये डाला
ऐसी पिलाई मदमस्त हाला
अपने पराये की सुध बुध में खोता

तेरी याद में...

मंजुल छवि की झलक भर दिखादे
घनश्याम की प्यास प्रियतम बुझादे
कबतक रहूंगा यादों को ढोता

तेरी याद में...

205

ले ले नाम तू राम को तेरो जीवन सफल हो जाय
क्या चिणवावे महल अटारी
क्या लगवावे बगीचा
इक दिन छोड़ चले सब यहां पर
नाम हरि का बंदे सांचा
सुंदर तन यो बनो चाम को माटी में मिल जाय
ले ले नाम तू राम को...
देख-देख कर संगी साथी
काहे को इतराते है प्राणी
अंत समय का कोई साथ ना देवे
दो दिन की है ये जिंदगानी
धन दौलत तेरे धराधाम को सबको मन ललचाय
ले ले नाम तू राम को...
जब तक पैसा खूब कमावे
लोग कहे टू लखीनो
जिस दिन लक्ष्मी रूठ जाय तो
सभी भांति हीणो
कोई ना पूछे कौड़ी दाम को हाथ रे मल पछताय
ले ले नाम तू राम को...
जिन लोगों से प्यार करत है
सब मतलब के हैं
मात-पिता सुत बंधु रे नारी
कौन से किसके हैं
जाना रे तज नगर ग्राम को काल रहयो मंडराय
ले ले नाम तू राम को...

मानुस तन पाकर के बंदे
कर सुकृत कुछ पुण्य कमाले
औसर बीतो तो जाये रे मूरख
चेत चेत हरि को चित्त लाले
भज अजर अमर घनश्याम को तोहे अविचल पद मिल जाये
ले ले नाम तू राम...

206

हे राम तुम्हारे नयनों में है भरा हुआ करुणा सागर
दो बूंद इधर भी ढुलका दे हे दीनबंधु हे नयनागर
तेरा अक्षय भंडार भरा
नहीं कोई भी तुमसे बिसरा
जिनकी है लगन लगी तुमसे
उनका नहीं काज कभी बिगरा
पर्वत को राई कर देते भर देते गागर में सागर
हे राम तुम्हारे नयनों में...
नामों से त्रिभुवन रहे गूंज
हे शक्ति पुंज हे तेज पुंज
तेरी सत्ता से पुलक रहे
अगजग के अणु अणु कुंज कुंज
धरती अंबर सब नाच रहे तुमसा प्रेम स्वामी पाकर
हे राम तुम्हारे नयनों में...
तुम सबके प्रिय हो हे प्रियतम
जहां तुम हो टिक नहीं पाते गम
आनंद के झरने झरते हैं
भरता सुगंध से घर आंगन
मरुथल में फूट पड़े अंकुर अंबर नाचे रस बरसा कर
हे राम तुम्हारे नयनों में...
द्रोपदी हो रही भाव विह्वल
पाकर तेरी करुणा अविरल
मीरा का अंग अंग रहा पुलक
प्रभु नाम नशे में बन पागल
धन्य धन्य बना विष भी तेरे नामों की गंगा में नहाकर

हे राम तुम्हारे नयनों में...

कुछ थोड़ी सी कर कृपा इधर
मैं भी ज्योति से जाऊं भर
नहीं रहे कहीं भी मैल खोट
ऐसा निर्मल कर दे अंतर
घनश्याम के मस्तक पर धर दो हे नाथ प्रेम मय करुणा कर
हे राम तुम्हारे नयनों में...

207

प्रेम से बोलो राजा राम की जय जय
राजा राम की जय जय सीताराम की जय जय
सब कोई भाई थे नहीं कहीं बैर
स्नेह से सने थे नही कोई गैर
सिंह गाय दोनों मिल करते थे सैर
चोरी का नाम नहीं सब थे अभय

प्रेम से बोलो...

निर्धन धनी का नहीं सवाल
अपने में मस्त सब रहे खुशहाल
आनंद नाचता था दे दे के ताल
कोई नहीं करता था धन संचय

प्रेम से बोलो...

रोग शोक झूठ का नहीं था कुछ काम
सत्य के प्रकाश का था तेज अभिराम
अन्नपूर्णा की मेहर बरसे अविराम
जन जन में व्याप्त जिनका यश अक्षय

प्रेम से बोलो...

ऐसा महान राजा राम का था राज
सब कुछ साज से सजा था समाज
सर्वगुण संपन्न था रामजी का ताज
याद कर आज भी मन होत रसमय

प्रेम से बोलो...

कितना था अद्भुत रूप विलक्षण
एक साथ भेंट करें राम एक क्षण

हो रहे थे धन्य पकड़ राम के चरण
सबके ही प्राण हो रहे थे राममय

प्रेम से बोलो...

आओ आज फिर करे राम का आह्वान
राम को भजोरे भाई होवे कल्याण
कोई नहीं ओर हितु राम के समान
मिट जावे मन के सभी संशय

प्रेम से बोलो...

208

फिर तेरे भक्तों ने करी है पुकार
आओ ना सांवरा क्यों करते हो बार
कब से रे कान्हा तेरी बाट निहारे
थक गई अखियां धीर नहीं धारे
श्याम कहां श्याम कहां रो रो पुकारे
नैया पड़ी है बीच मझदार
आओ तो होवे पल में पार
रात को नींद नहीं दिन को ना चैन है
जियरा हमारा बहुत बेचैन है
मुख से ना निकसत कुछ भी बैन है
फूल पात सूख गए आया पतझार
आओ तो बगिया में छाये बहार
ढोंगी चोर ठग अब सब कोई बोले
नाम का लेवा नहीं विष रस घोले
आततायी पापी सब जय बोले
कैसा रे कान्हा रचाया संसार
खुशियां मनाते हैं पापी लबार
एक दूसरे का नहीं रहा विश्वास
आदमी तो बन गया हविसों का दास है
और और मिलने के प्रति पल आश है
छाय रहा चहुं ओर ओर अंधियार
आओ वन रवि शशि होय उजियार
पापों बोल बाला आज चारों ओर है
जैसा चाहे वैसा करे चलता जोर है
भक्तों पे कष्ट तेरे छाया घनघोर है
आओ आओ सांवरा फिर लोह खंब फार
भक्तों को अपने लेओ उबार
फिर तेरे भक्तों ने करी है पुकार
आओ ना सांवरा क्यों करते हो बार

करलो सांवरा से प्रीत सांचो सबको है मीत नाम गंग नाहरे
ऐसा उनका है हाल करे पल में निहाल प्रभु नाम ध्यारे
गज की करुण पुकार सुनी प्रभु नंगे पैरों आए
हरि पीर थी पल में गज को अपने धाम पठाये
भक्तों का दुःख दर्द प्रभु से कभी ना देखा जाए
संग संग भक्तों के फिरता अपनी सुध बिसराये
ले प्रभु को पुकारा ना पल रे बिसार हरि चरणों में चित लारे
करलो सांवरा से प्रीत
चिंताविहीन सुख में थे सोए गहरी नींद मुरारी
ना जाने क्या हुआ अचानक दौड़े श्याम बिहारी
दुष्ट दशासन सभा बीच खेंचे द्रौपदी की सारी
चीर रूप धर आए मोहन बंकिम मुद्रा धारी
लगाले लगन कर ले हरि का भजन आवे दौड़े सजन तेरे द्वारे
करलो सांवरा से प्रीत
कष्टों से था भरा हुआ प्रहलाद भगत का बचपन
भक्तो की भक्ति मे रहता बड़ा अनोखा पन
कांटे बन गए फूल बनी ज्वाला शीतल चंदन
काले विषधर बन गए चाकर डोले सेवक बन
प्रकट लौह खंब को फार दीनो पलमे
असुर संहार नरसिंह रूप धारे
मतवाला बन मीरा के संग डोले प्यार गिरधर
मगन होय मीरा संग नाचे दे दे ताल मनोहर
विष प्यालो अमृत करदीनो एसो है नटनागर
शालग्राम बन दर्शन दीनो कारे कारे विषधर
भक्तों के संग जाते उनके रंग में रंग प्रेम मस्ती निराली अनोखी पारे

मानुष तन का नहीं ठिकाना कब आवे कब जावे
योग तो है पानी रो बुदबुद पल छिन में मिट जावे
करले हेत हरि से प्राणी समय बीत तो जावे
हीरा जैसो जीवन पगले फेर नहीं तू पावै
भजले राम घनश्याम जो है सकल सुखों का धाम पल भर में पार तारे

223

राधे गोविंद बोलो राधे गोविंदा माधव मुकुंद बोलो माधव मुकुंदा
राधे बोलो अमृत झरेगा दिन रैना
माधव मुकुंद प्रेम रस भरे बैना नर तन सफल बनाय ले रे बंदा
राधे गोविंद बोलो

जीवन मिला राम नाम भजने को
झूठ कपट छल सब तजने को भूल गया करने लगा खोटे धंधा
राधे गोविंद बोलो

फिर क्या करेगा बीत जायेगा सुओसर
उठ चेत राधे गोविंद नाम उर धर
हरिहर के नयनो का बन जारे चंदा
राधे गोविंद बोलो

भजले रे भजले जीवन का सुधार ले
अबकी तबकी सबकी संवार ले बाकी बची को क्यों खोता रे अंधा
राधे गोविंद बोलो

राधे को भजले गोविंद भजले माधव मुकुंद श्याम सुंदर को भजले
घनश्याम भजले कटे यम का फंदा
राधे गोविंद बोलो

224

तेरे ही गुण मैं गां रे सांवरिया
गाय गाय नहीं अधाऊं गिरिधरिया
कबसे रे सांवरा मै तुमको पुकारू
नयना यह तेरी कान्हा हुआ रे बावरिया

तेरे ही गुण मैं

मन तड़पत प्रभु तेरे दर्शन को ना जाने हो गया क्या आज मेरे मन को
सुधा रस पिला दे बजा के बांसुरिया

तेरे ही गुण में

छोड़ घरबार सब आ गया हू तेरे दर
देख लेने तेरी छवि आज जी भर
अधर पे हो मुरली कांधे पे कमरिया

तेरे ही गुण में

भक्तों पे जब जब भीड़ पड़ी भारी है
दे के सहारा नैया पार उतारी है तार दिए लाखों पकर के अंगुरिया

तेरे ही गुण में

स्वागत को तेरे मैने दीप जलाए फूलों से मैंने सांवरा द्वार सजाये
पावन कर दे मेरी कुटरिया

तेरे ही गुण में

225

कैसी मुरली बजाई रे सांवरिया सुध बुध बिसार आया तेरी रे नगरिया
नाते सब तोड़ दिए घरबार छोड़ दिया
तज मोह ममता को मन इधर मोड़
शीतल बैयार लगे तपती दुपहरिया

कैसी ये मुरली

सोचता था प्यारे तुम्हें गाकर रिझाऊंगा
मधुर मधुर वाणी में गीत तेरे गाऊंगा
चरण पखारूंगा बन निर्झरया

कैसी रे मुरलिया

पथ को संवारा मैंने कांटे सब बीन लिए
तेरे लिए नयनो के मोती सब छीन लिए
खुल गई स्वागत को बंद किवरिया

कैसी रे मुरलिया है

हाय अचानक क्या मेरे को हो गया
भाव बने मौन स्वर कहीं कुछ खो गया
मुरझाई तेरे बिन मन की पंखुड़ियां

कैसी यह मुरलिया

खाली है मोहन मेरे जीवन का प्याला
दरश दिखादे नांचू बन मतवाला
झूम झूम बरसे ये नयन बदरिया

कैसी है मुरलिया

226

काहे के कान्हा लगाई देर
तन मन भये भावरे थाने टेर टेर गज की पुकार सुन दौड़्यो आओ
ग्राह के फंदे से गज को छुडायो
पल की ना तूने लगाई देर देर

तन मन भये

राणाजी भेज्यो सर्प पिटारो
मदन गोपाल रूप अद्भुत धारे
तर गई मीराबाई थाने फेर फेर

तन मन भये

द्रुपद सुता मे भीड़ पड़ी जब भारी
चीर रूप आये धर विपद बिडारी
खुशियों के आंसू बहाये ढेर ढेर

तन मन भये

त्याग दिए कौरव के मीठे मीठे भोजन
विदुर घर खाये साग हर्षित हो तन मन
विदुरानी भूली सुध थाने हेर हेर

तन मन भये

हम भी तो सांवरा तेरे ही दास है
नाम रटेगे तेरा जब तक यह सांस है
आओ रे कान्हा पुकारे बेर बेर

तन मन भये

227

कोई कहता है मूरख कोई कहता पगला
कुल हीना बालक फलां घर से निकला
पग पग पे बाधा मिली मुझको तड़पन

हर सांस मेरी है

जमाने ने कैसी करवट है बदली
लगते हैं अच्छे बुरे असली और नकली
जल गया मेरे मन का बासंती मधुबन

हर सांस मेरी है

नहीं भाति घनश्याम को तेरी दुनिया
डग डग पे डाकू लुटेरे हैं छलिया
आलोक से बर मन प्राण आंगन आके खड़ा हूं तेरे द्वार भगवन

हर स्वांस मेरी है

228

बाजे बजे थे खुशियों के थे दीप जले
सब सुख साधन जुटाये खातिर लाल की चैत
माया नटी का चक्र घूमता है प्रतिपल
माचो माचो खूब फिरयो भूल गयो हरि नाम
चिंता कभी ना करी काल विकराल की
चेत कर चेत मूढ जीवन सुधार ले
कांधे पे चार के चलेंगी तेरी पालकी
बहुत-बहुत नाचो फिरयो खुशियों के आंगन में
तन की रे तूने बहुतेरी संभाल की
अच्छे-अच्छे कपड़ों से तन को सजाय लियो
सुधितो कभी ना लीनी अंदर के माल की
जो कुछ दिखाई देत है फानी है बड़ी वक्र क्रूर चाल काल विकराल की
फिर क्या करेगा मूढ जर्जर शरीर होय
ले के चार कंधे चालें तेरी पालकी

229

संत पुकारे भाई हरि का भजन करो प्रभु का भजन करो रे
सांझ सकारे भाई हरि का भजन करो प्रभु का भजन करो रे
भजन करने से मनवा पाप ताप सब भागे
मन जो हरि में लगे भाग तो पूरबले जागे
साथ नहीं कुछ लाया जावे नाहीं कुछ सागे
कर्मों की रेख प्राणी चाले तेरे आगे आगे
दुःख निवारे भाई हरि का भजन करो प्रभु का भजन करो रे
संत पुकारे भाई
कष्टों के सागर में जब खाएगा तू हिचकोले
जीवन की नैया तेरी बीच मझधार डोल
धन का लगाले ढेर ठाट करले रे निराले
काल के अगाड़ी बंदे एक नहीं तेरी चाले
नैया लगे रे किनारे हरि का भजन करो प्रभु का भजन करो
संत पुकारे भाई
मानुस तन मिला उसको संवार दे
प्रभु चरणों में अपना तन मन वार दे
दुखियों को कर दे सुखिया नाम पतवार दे
खिल जाए बगिया सूखी ऐसी बहार दे
पल में हो वारे न्यारे हरि का भजन करो प्रभु का भजन करो रे
संत पुकारे भाई
नाम शक्ति के आगे झुकती हैं दुनिया सारी
सबकी हो मनसा पूरी नाम है चमत्कारी
गूंगों को मिलती वाणी आंधरों को आंखें हैं प्यारी
पंगू चढ जावे गिरी पर ऐसी है महिमा भारी
बिगड़ी संवारे भाई हरि का भजन करो प्रभु का भजन करो रे

संत पुकारे भाई

दमड़ी ना धेला लगे भजो भाई राम राम
मुक्ति का देने वाला सब दुख हारी नाम
कण कण का वासी है सकल सुखों का धाम
राम नाम का अमृत है पान करो आठो याम
पार उतारे भाई हरि का भजन करो प्रभु का भजन करो रे
संत पुकारे भाई रे

230

हरि के भजन बिना कैसे पार जाओगे
प्रभु के भजन बिना कैसे पार जाओगे
नाम के प्रताप से गजराज तर गया
द्रोपदी का तन सारा साडियों से भर गया
नरसी का काज सब बिना श्रम सर गया
हरि के भजन बिना कैसे पार जाओगे
प्रभु के भजन बिना

पत्थर तलक नाम महिमा से तर गये
शंकरजी नाम लेकर विष पान कर गये
मीरा के विष में प्रभु सुधा बन ढर गये
हरि के भजन बिना कैसे पार जाओगे
प्रभु के भजन बिना

कबीर रैदास सूर संत महान बने चैतन्य नाम लेकर बड़े भाग्यवान बने
दिन रैन राम रस पीपी बौरान बने
हरि के भजन बिना कैसे पार जाओगे
प्रभु के भजन बिना

उल्टा जो नाम जप उसको भी तार दिया
भक्त जनों का सब कष्ट तार तार किया
मुनि ज्ञानी ध्यानी सबका नाम ने निस्तार किया
हरि के भजन के बिना कैसे पर जाओगे

231

अजमिल नारायण कह प्रभुजी के धाम गया
दुष्ट पापी तक तरे जिसने भी नाम लिया
लख चौरासी छूटी ऐसी अद्भुत काम किया
हरि के भजन बिना कैसे पार जाओगे
प्रभु के भजन बिना

हनुमत के राम नाम तन मन प्राण है
रोम रोम उनका भाई राम राम राम है
रामजी के सिवा नहीं दूसरे से काम है
हरि के भजन बिना कैसे पार जाओगे
प्रभु के भजन बिना

वेद पुराण शास्त्र सब बतावे हैं नारदजी झूम झूम दिन रात गावे है
शुक्र सनकादि जिन्हें आठो याम ध्वाये है
हरि के भजन बिना कैसे पार जाओगे
प्रभु के भजन बिना

सबको निचोड़ एक राम राम सार है
जिसने भी नाम लिया हुआ भव पार है
दास नाम नामी पे जावे बलिहार है
हरि के भजन बिना कैसे पार जाओगे
प्रभु के भजन

प्राणी होजा भव से पार हरि गुण गाय गाय के
हरि गुण गाय गाय के प्रभु गुण गाय गाय के
काहे गर्व करे तू धन का बिरथा मोह करे इस तन का
भरोसा नही जरा जीवन का
मौत सर खड़ी करे ललकार सुन चित लाय लाय के
प्राणी होवे भव से पार
कौन किसी का संगीत साथी
दिन के साथ लगी है राती
स्वार्थ की दुनिया मदमाती
नैया फंसी बीच मझदार थपेड़े खाय खाय के
प्राणी होवे भव भर से पार
जन जन से कर प्रेम भलाई
सेवा करी जिन संपद पाई
नर तन की कर सफल कमाई
लुटाता चल तू सब पर प्यार गले मिल धाय धाय के
प्राणी होवे भव से पार
भूखे को दे दान अन्न का
नंगे को दे दान वसन का
रोते को दे दान हंसन का
तेरे होवे शुद्ध विचार प्रेम रस पाय पाय के
प्राणी होवे भव से पार
सच्चे सुख का खिले उपवन
ह्दय मे हो भगवत दर्शन
सफल होय तेरा मानुस तन
सबकुछ प्रभु चरणों मे वार भजन कर ध्याय ध्याय के
प्राणी होवे भव से पार   233

प्राणी होजा भव से पार हरि गुण गाय गाय के
 हरि गुण गाय गाय के प्रभु गुण गाय गाय के
क्या लेकर आया था बंदे जब दुनिया में आया
बोला भजन करूं मैं तेरा छुटकारा पाया
विनती करूं मैं भतेरी तूने सर को नाय नाय के
प्राणी होवे भव से पार
माया के चक्कर में पड़कर नाम हरि का भूला
झूठी मृगतृष्णा मे फंस कर क्यों तू फिरता फूला
क्यो तू बना सावनी अंधा विष रस पाय पाय के
प्राणी होवे भव से पार
हाङ मांस का बना पिंजरा उस में इतनी ममता क्यों
आतम राम ह्रदय में बैठे ध्यान ना उसमे जमता क्यों
पीता विषय वारुणी हरदिन मद में छाय छाय के
प्राणी हो जा भव से पार
जब खुमार उतरे यौवन का पास मे पैसा रहे नही
जर्जर होवे गात लखीना कोई कहे मे रहे नही
तेरी करणी तुझे डराये सपन मे आय आय के
प्राणी होवे भव से पार
बहुत गई अब बाकी थोडी जाग चेत करले प्राणी
दास कहे भज राम राम नित ले सुधार यह जिंदगानी
पीले नाम सुधारस प्यारे मन मे चाय चाय के
प्राणी होवे भव से पार

बेड़ा पार करो पार करो पार करो रे
चरणों में पड़ा बेड़ा पार करो रे उधम उधारण नाम तिहरा
मै तो प्रभु जी पापो का मारा शरण में खड़ा

बेड़ा पार करो पार करो पार करो पार करो रे
निर्बल के बलराम तुम्ही हो निर्धन के धन–धाम तुम्ही हो
तेरे ही नाम का डंडा गड़ा रे
बेड़ा पार करो पार करो पार करो रे
पद रंज प्रभुजी अहिल्या तारी शिला बनी जो पड़ी थी नारी
तेरे लिए कोई ना छोटा बड़ा रे
बेड़ा पार करो
कुब्जा जैसी नारी तारी
गणिका का जैसी पापिन तारी मेरा सर पापों से भरा घड़ा रे
बेड़ा पार करो
जो प्रभु मुझको नहीं तारोगे दास के कारज नहीं सरोगेट
नाम के तेरे लगे बट्टा बड़ा रे
बेड़ा पार करो

235

जगत में कोई नहीं तेरा
मूर्ख क्यों तू गाल बजावे कह मेरा मेरा
जगत में कोई नहीं तेरा
देख देख कर कुटुंब कबीला क्यों इतना इतरावे
उड़ जावे जावे स्वांस का पंछी कोई ना नीडे आवे
मतलब की है दुनिया सारी चिड़िया रैन बसेरा
जगत में कोई नहीं तेरा
धन वैभव चरणों पर डोले खड़े हैं महल अटारी
क्रूर काल के धक्के खाकर एक दिन बने भिखारी
विधना ने क्या भाग्य लिखा किसको क्या बेरा
जगत में कोई नहीं तेरा
छोटे-छोटे लोग भी पाते बड़े-बड़े संमान
गली गली का डोलन हारा बन जाए श्रीमान
सदा किसी का नहीं अंधेरा नाहीं सदा सवेरा
जगत में कोई नहीं तेरा
सेवा भाव हृदय में भरा हो कड़वे बोल ना बोल
प्रेम भरा तेरा तन मन होवे संत वचन अनमोल
भजले रे जय राम मिटे तेरा जनम जनम का फेरा
जगत में कोई नहीं तेरा

236

आज तेरे भक्तों ने फिर वही टेर लगाई है
समझ ना आया क्यों सांवरिया देर लगाई है
एक समय जब द्रोपदी गुहार लगाई थी
आओ आओ गोविंद पुकार लगाई थी
चीर रूप धर आए कुछ ना बार लगाई थी
सती द्रोपदी की नैया को पार लगाई थी
कोटि-कोटि कंठों ने फिर वही टेर लगाई है
कहां छुपा है क्यों निर्मोही देर लगाई है

आज तेरे भक्तों ने फिर

जब जब भीड़ पड़ी भक्तों पर दौड़े दौड़े आए हो
और दूसरे काम सभी तुम छोड़ आए हो
विपदाओ के चक्रव्यूह को तोड़ आए हो
खुशियों के अंबार प्रभु तुम जोड़ लाये हो
हर्षित होकर सबने फिर वही टेर लगाई है
आनंद दाता परमेश्वर क्यों देर लगाई है
आज तेरे भक्तों ने फिर
समझ न आया क्यों
गड़ आरा बन नरसीजी को उर आनंद भरयो
लाज रखी भक्तों की भर नानी को मायरो
गज की टेर सुनी तो नंगे पांव दौड़ पडयो
रुचि रुचि खायो प्रेम से करमा को खीचडयो
हम भी तो तेरे है तेरे टेर लगाई है
भक्त वसल प्रभु फिर क्यों तुमने देर लगाई है

आज तेरे भक्तों ने फिर

बिना बीज बिना बीज निपजाने वाला और कौन है
विष को अमृत करने वाला और कौन है
सूर्य चंद्र चमकने वाला और कौन है
सारे जग का रखवाला प्रभु और कौन है
तेरे दर्शन के प्यासे हम टेर लगाई है
मुरली वाले फिर क्यों तुमने देर लगाई है
आज तेरे भक्तों ने फिर

भक्त मंडली तुम्हें पुकारे आओ आओ बनवारी
भव भय भंजक सुर मुनि रंजक राधावल्लभ गिरधारी
मोर मुकुट पीतांबर धारी अधर लसे मुरली प्यारी
महाकाल भी धर धर कांपे चक्र सुदर्शन के धारी
और अधिक मत तरसाओ हरि टेर लगाई है
मधु सूदन घनश्याम क्यो इतनी देर लगाई है
आज तेरे भक्तों ने फिर

237 238

किस बिरते पर गर्व करें नर माया आनी जानी है
कोई नहीं अमर दुनिया में सत्य सनातन वाणी है
दुःख से भरा हुआ
स्वांस स्वांस पर यम का पहरा बंधन में जकड़ा जीवन
झूठे सुख आशा तृष्णा की मैली चादर तानी है
कोई नहीं अमर दुनिया में
मेरी तेरी के चक्कर में दुख के कांटे बो डाले
स्नेह दया बंधुत्व भाव मे उग आये विष के छाले
चंचल मन की कलाबाजियां बिरला नर पहचानी है
कोई नही अमर दुनिया मे
कोई भूखा किसी के घर मे अन्न धन के भंडार भरे
पत्नी झगड़ालू पति निकम्मा कैसा यह संसार हरे
कैसे हो जीवन मंगलमय दिखता नही कोई दानी है
कोई नही अमर दुनिया मे
आया अकेले जाये अकेला दुनिया संगम मेला है
जीवन धन्य बना उसका जो शुभ कर्मों मे खेला है
युग युग गाता महापुरुष की कीर्ति कथा कहानी है
कोई नही अमर दुनिया मे
चार दिवस बस रहे चंदनिया फिर अंधियारी रात रे
राम भजन बिन संत समागम फुलवारी मुरझात रे
घनश्याम करे क्यो सोच फिकर नर चले नही मन मानी है
कोई नही अमर दुनिया मे

239

कौन कार्य है कठिन असंभव सब कुछ है आसान रे
प्रभु ही करता प्रभु ही भर्ता उनकी अद्भुत शान रे
मेरी तेरी के चक्कर में उलझन में डाल दिया जग को
नर अपने को भगवान का कहे कांटो से दिया मग को
व्यर्थ है सब जब गुण नहीं पोथी पतरे का ज्ञान रे
प्रभु ही करता प्रभु की भर्ता
परमपिता की फुलवारी में अनगिन रंगो की महफिल चकित सकल जग देख गगन में उड़ गण की झालरे झिल मिल
सूर्य चंद्र की छटा निराली हिम गिरी खड़ा महान रे
प्रभु ही करता प्रभु जी भर्ता
झरने कल कल सी ध्वनि में मस्त मोर के नर्तन मे
वर्षा की रिमझिम रिमझिम में कोयलिया की कूजन में
पुष्पों की मादक सुगंध में पुलक रहा उद्यान रे
प्रभु की कर्ता प्रभु ही भर्ता
अखंड अटूट लगन श्रद्धा से पत्थर बनते मोम सुमन
शेषशायी भगवान जग जाते हिल उठाता उनका आसन
प्रबल भावना के बंधन में बंधते दया निधान दे
प्रभु ही कर्ता प्रभु ही बता भर्ता
बिना किसी शंका के करदे हरिचरणों में निज का दान
तेरी रक्षा को नित सन्नथ चक्र सुदर्शन धनुवा बाण
घनश्याम बनो सेवा व्रत धारी गाओ राम गुण गानरे
प्रभु ही कर्ता प्रभु ही भर्ता

240

कोई नहीं है तेरा बावरे कोई नहीं है तेरा रे
यह संसार धर्मशाला है चिड़िया रैन बसेरा रे
जब तक करे कमाई आच्छी सबको लगे प्यारा रे
रिमझिम रिमझिम सुखड़ो बरसे आनंद की रसधारा रे
पास पड़ोसी तूझे सराहे घर भर का उजियारा रे
भाई बहन उमंग भरे मां की आंखों का तारा रे
अनजाने अन चीन्हे जन भी दे चौगर्दी फेरा रे
कोई नहीं है तेरा बावरे
चाहे ऊंचे महल बनाले धन दौलत का ढेर लगा
मान प्रतिष्ठा कितनी ही पाले देख देख चहू ओर सगा
रात चंदनिया सी हो तेरी दिन सोने सा रंग रंगा
रहे महकता फुलवारी सा जीवन तेरा प्रेम पगा
चैन की बंसी बजे रात दिन मौज मजा बहुतेरा रे
कोई नहीं है तेरा बावरे
कौन है बढकर जग मे मुझसे सोच सोच हो रहा मगन
जौड़ धरी संसद अपार कर झूठे सच्चे लाख यत्न
नौकर चाकर की फौज बड़ी है खड़ी हुई जोर नमन
सज्जित सुंदरतम नग्मों से है खड़ा शान से इन्द्र भुवन
ऐसा लगता जैसे कुबेर बन आया तेरा चेरा रे
कोई नहीं तेरा बावरे
पूर्व जन्म के यह सब फल वर्तमान तू क्यों खोता
उठ जाग चेत कर गौर जरा क्यों कुंभकरनी निंद्रा सोता
पल-पल क्षण क्षण है मूल्यवान काहे है पथ में कांटे बोता
जिन प्रभु से कोल करार किया उनका सुमरिण क्यों ना होता देख अंधेरा चला आ रहा सोया भाग्य सवेरा रे

कोई नहीं है तेरा बावरे

क्या समझा था अमर पटा लिखवा करके तुम आए हो सदा सदा के लिए बहारे संग में अपने लाए हो

भूल थी भ्रम था या अनजाने में धोखा भारी खाए हो
महाकाल हंस रहा ठठाकर कर मे प्राण दबाये हो
घनश्याम तुम्हें मालूम है पड़े जब यमपुर में हो डेरा रे
कोई नहीं है तेरा बावरे

241

बैरी डोल चारों ओर कुछ कर ले यतन
नहीं कहीं ठोर बिन हरि के भजन
मानव मन सुर दुर्लभ पाया करले सोच विचार
कांई जग में फिर भरमतो कांई मन लई धार
टूटे जीवन डोर बने माटी रतन
नहीं कहीं ठोर बिन हरि के भजन
दिन सोने की रात रुपहाली लागी तेरे साथ
दान पुण्य शुभ-कर्मों की रे चले कमाई साथ
कहता है सब मेरा, तेरा नहीं रे भवन
तेरा अपना कुछ नहीं है सब कुछ मिला उधार
स्वांस की पूंजी मिली अमोली भज मन कृष्ण मुरार
तेरी नाचे पोर पोर करले ऐसे रे मन
नहीं कहीं ठोर बिन हरि के भजन
काल का पहिया घूम रहा है ज्यों कुम्हार का चाक
पकड़ मिलायेगा माटी में औसर रहयो है ताक
चाहे ना कुछ जोर गहले राम की शरण
नहीं कहीं ठोस बिन हरि के भजन
झूठे सारे नाते रिश्ते झूठी जग की प्रीत
साथ रहे सुख में दुख में सांचो सांवरियो मीत
हो जा हर्ष विभोर प्रभु नाम में मगन
नही कही ठोर बिन हरि के भजन
कलिकाल में हरि कीर्तन भजन ध्यान कर भैया
अगम सिंधु से पार करेंगा नैया कुंवर कन्हैया
मिले प्यारो चितचोर घनश्याम सजन
नहीं ठोर बिन हरि के भजन 242

बिन कारण इंसान कभी ना पता संकट क्लेश
कर्मो से राजा रंक बने कर्मों से रंक नरेश
कर्म के आगे पीछे घूमे दुनिया सारी रे
कर्म किए बिन कोई न रहता क्या नर नारी रे
गीता में उपदेश पार्थ को दिए मुरारी रे
क्यों निष्क्रिय बन बैठा अर्जुन क्या मन धारी रे
कर्म करो निष्काम रे प्राणी गीता का संदेश

बिन कारण इंसान

सतवादी हरिश्चंद्र भरता घर भंगी पानी रे
शैव्या रानी विश्वनाथ नगरी में जाए बिकानीरे
मोरध्वज राजा लगे कटन चीरे उनको सुतरानी रे
तनिक नहीं मन में घबराई प्रभु प्रेम में सानी रे
मन में भय का नाम नहीं था नहीं संशय लवलेश

बिन कारण इंसान

आये संकट बड़े-बड़े प्रहलाद भक्त के ऊपर
सहन किए उसने सब केवल एक नाम के बल पर
कभी गिराया शैल शिखर से कभी डराया विषधर
संग होलिका गया जलाया उससे निकाल बचकर
कौन बिगाड़े उसका जिसके हो जाते सर्वेश

बिन कारण इंसान

पाँच बरस के ध्रुव बालक का कोमल किसलय गात
करे तपस्या बन में जाकर सहे धूप बरसात
मीरा पर ढाये थे अनगिन राणा ने उत्पात
बड़े प्रेम से पी गई विष भी गिरिधर के गुन गात
भक्तों का विषपान करें नित गौरीपति महेश

बिन कारण इंसान

सुआ पढ़ावत गणिका तर गई तर गये सजन कसाई अजामिल जैसे पापी कर गए नारायण रट लाई

पदरज तर गई गौतम नारी पड़ी शिला बन भाई

कर्म सभी को नाच नचावे वेद पुराणन गाई

दास को मुक्त करो कर्मों से विश्व पिता करुणेश

बिन कारण इंसान

243

भजन बिन काहे को गवावे रे या देही चाम की
या देही चाम की रे या देही
यों ही बिरथा जग आया
राम नाम गुण कभी ना गया
तूने पाई सुंदर काया
है या किसी काम की

भजन बिन काहे को

लगो मोह माया को जाल
कमायो झूठ कपट कर माल
किया ना उस घर को कुछ ख्याल
राखी नित हराम की

भजन बिन कहे को

कर से किया नहीं कुछ दान
मुंह से रटा नहीं भगवान
कब तक बना रहे नादान
सूरत कर विट्ठल धाम की

भजन बिन काहे को

संग सगा कोई सखा ना जावे
दुःख में ना कोई हाथ बंटाने
नाहक प्राणी कष्ट उठावे
उर धर मूरत श्याम की

भजन बिना काहे को

जोहै बसा हुआ कण कण में

जीवन देता नया मरण में
हरता पीर भगत की क्षण में
लीला अद्भुत राम की

भजन बिन कहे को

मानुष योनी फिर ना पावे
वेद पुराण शास्त्र गावे
काहे माटी मोल बिकावे
पकर भुजा घनश्याम की

भजन बिन काहे को

244

नाशवान से काहे मिताई, कर अविनाशी से यारी
पापी अधम नीच जन तारे त्रिभुवन पति है अघहारी
धन दौलत विपुल राशि की चकाचौंध में क्यों डोले
कौन मेरे सम शक्तिशाली दर्प भी वाणी बोले
स्वार्थ सने जग के लोगों ने मक्खन के खोल झोले
राजा स्वामी मालिक के शब्दों में अमृत रस घोले
झूठे सुख से लिप्साने तम का डाला पर्दा भारी
नाशवान से काहे मिताई
स्वार्थ भरी दुनिया है इसमें कोई नहीं साथी नाती
जब तक कृपा रहे लक्ष्मी की नगरी तेरा गुण गाती
भाई बंधु मात पिता की खुशियों से पहले छाती
इंद्र भवन में मौज-मजों की बजे बांसुरी दिन राती
जिसको अमृत मान रहा तू विष भरी हुई है झारी
नाशवान से काहे मिताई
जब आया मां की गोदी में वस्त्रहीन था कर खाली
गर्भवास के दुखों कष्टों से बिनती कर मुक्ति पाली
अनमोल समय खो डाला पगले करतूत कर कर काली
धर्म कर्म की उजली चादर गंदी दागी कर डाली
पापों की वैतरणी में मुरझाई मन की फुलवारी
नाशवान से काहे मिताई

जगमग जगमग जीवन की छाई चंहुतरफा हरियाली
आनंद उमंग की कोयलिया चहक रही डाली डाली
घर के कण कण में आंगन में झूमें मस्ती मतवाली
समय सदा ना रहे सुहाना आवे मावस महाकाली
जाग चेत करले रे बंदे जाने की आई बारी
नाशवान से रे काहे मिताई
क्या होगा मत सोच जरा प्रभु बड़े दयालु ममतामय
कृपा कोर से कर देते हैं पर्वत से पापों का क्षय
गिर चरणों में क्षमा मांगले हर लेंगे भय करें अभय
राम राम की जप नित माला चहूं और से मिले विजय
घनश्याम भजो परमेश्वर को जो सत्य सनातन हितकारी
नाशवान से कहां मिताई

245